UNIVERSAL LIBRARY

OU_182218

UNIVERSAL LIBRARY

# भविष्यवाणी

तथा

## अन्य प्रहसन

गोविन्ददास

१६५७

प्रकाशक

भारतीय विश्व-प्रकाशन

फव्वारा—दिल्ली

मुख्य विक्रेता
भारती साहित्य मन्दिर
(एस० चन्द एण्ड कम्पनी से सम्बद्ध)
आसफअली रोड — नई दिल्ली
फव्वारा — दिल्ली
माई हारां गेट — जालन्धर
लालबाग — लखनऊ

मूल्य
तीन रुपये

मुद्रक
श्यामकुमार गर्ग
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
क्वीन्स रोड, दिल्ली

# निवेदन

सेठ गोविन्ददासजी का अधिकांश साहित्य जहाँ आदर्शवादी ऐतिहासिक और सामाजिक समस्याओं से परिपूर्ण है; वहाँ उन्होंने हास्यरस-प्रधान कुछ मार्मिक व्यंगात्मक प्रहसन भी लिखे हैं। इस पुस्तक में उनके इसी प्रकार के नाटकों का संग्रह है।

**प्रकाशक**

# प्रहसन-सूची


| | पृष्ठ |
|---|---|
| भविष्यवाणी ... ... ... | १ |
| जाति-उत्थान ... ... ... | ६७ |
| विटेमिन ... ... ... | ६६ |
| वह मरा क्यों ? ... ... ... | १३५ |
| हार्स पावर ... ... ... | १५५ |
| अर्द्ध-जागृत ... ... ... | १६३ |

# भविष्यवाणी

## मुख्य पात्र

| | |
|---|---|
| **भविष्यानन्द** | : एक ज्योतिषी |
| **शालिग्राम** | : भविष्यानन्द का शिष्य |
| **उमारमणसिंह** | : एक जमींदार |
| **रमारमणसिंह** | : उमारमणसिंह का पुत्र |
| **लक्ष्मीदास** | : एक व्यापारी |
| **सरस्वतीचन्द** | : एक साहित्यिक |
| **मजूमदार** | : एक विद्यार्थी |
| **तरलोकसिंह** | : एक ठेकेदार |

# पहला अंक

स्थान : दिल्ली के चाँदनी चौक बाजार में एक तिमंजले मकान की मंजिल में एक बड़ा-सा कमरा

समय : प्रातःकाल

[कमरे के तीन ओर की दीवालें दिखती हैं जो क्रीम रंग के डिस्टेम्पर से रँगी हुई हैं। पीछे की दीवार के बीचोंबीच लगभग नौ फुट ऊँचा और दो फुट चौड़ा एक साइन बोर्ड लगा है। इस साइन बोर्ड में नीचे लिखे अनुसार लिखावट है।]

**भविष्यवाणी कार्यालय**

**स्थान**

**अखिल भूमण्डल**

अध्यक्ष

**महर्षि भृगुकुलावतन्स, ज्योतिष-ज्योति, सामुद्रिकाचार्य, रमल-मार्त्तण्ड महापण्डित श्री १००८**

**भविष्यानन्द जी महाराज**

इस कार्यालय में 'भृगुसंहिता' ज्योतिष की अन्य गणनाओं
सामुद्रिक रमल और अनेक प्रणालियों द्वारा
हर प्रकार का भविष्य बताया जाता है

**विवाह के लिए वर-वधू की कुण्डलियों का मिलान,**

**तेजी-मंदी**

**परीक्षा-फल की जानकारी**

**पुरस्कार प्राप्ति संबंधी सूचना**

**आयु-निर्णय**

**इस कार्यालय की विशेषताएँ हैं**

**दक्षिणा श्रद्धानुसार**

[दाहिनी ओर की पूरी दीवाल में लकड़ी का ऊँचा रैक है। यह पूरा रैक कपड़े के बस्तों में बँधी हुई पोथियों से भरा है। बायीं ओर की दीवाल में काँच के दरवाजों की कुछ आलमारियाँ हैं, जिनमें से कुछ आलमारियों में पुस्तकें हैं और कुछ में गोलाकार लिपटी हुई जन्मपत्रियाँ। एक आलमारी में लिखने-पढ़ने का सामान और कागज आदि हैं। दाहिनी और बायीं दीवालों के सिरों पर एक-एक दरवाजा है। दोनों दरवाजे इस समय बन्द हैं। कमरे की भूमि पर एक दरी बिछी है। पीछे की दीवाल के सहारे एक गद्दी है, उस पर मसनद लगा है। इस गद्दी के सामने तख्त रखा है जो हरे रंग के वस्त्र से ढका है। इस तख्त पर ब्लाटिंग पेपर पैड, काली और लाल स्याही की दवातें, कलमें, अनेक रंग की पेन्सिल, कागज, पिनपोश आदि लिखने-पढ़ने का सामान सजा है। तख्त के दाहिनी ओर रमल फेंकने के पाँसे रखे हैं और बायीं ओर एक बड़ा रजिस्टर तथा इसके पास एक चीनी मिट्टी के बर्तन में वह स्याही है जिसे लगाकर हाथों की रेखायें देखने के लिए हाथों के छापे लगवाये जाते हैं। इस स्याही में एक ब्रश पड़ा है। इस तख्त के दाहिनी और बायीं ओर भी गद्दियाँ हैं पर इन पर कोई मसनद नहीं। कुछ कुर्सियाँ भी दाहिनी और बायीं ओर की दीवालों के सामने रखी हैं। बीच की गद्दी पर मसनद से टिका हुआ भविष्यानन्द बैठा है। भविष्यानन्द अधेड़ अवस्था का है, ठिगना और खूब मोटा व्यक्ति। रंग साँवला है। बड़ी-बड़ी मूँछें हैं। ललाट पर मोटा रामानुज सम्प्रदाय का श्वेत और लाल तिलक लगाये है। सिर

**पर बड़ी ऊँची और भारी लाल रंग की पगड़ी है। शरीर पर सफेद रंग का अँगरखा और धोती है और गले में जरी की किनारी का दुपट्टा। उसके निकट उसकी ओर मुँह किये हुए शालिग्राम बैठा है। भविष्यानन्द जितना ठिगना है उतना ही शालिग्राम ऊँचा; और भविष्यानन्द जितना ही मोटा है शलिग्राम उतना ही दुबला। एक ढोल के सदृश दिखता है दूसरा बाँस के। शालिग्राम की अवस्था लगभग ३० वर्ष की है। वेश-भूषा भविष्यानन्द के सदृश। आँखों पर मोटे फ्रेम और दलदार काँचों का चश्मा लगाये है। शालिग्राम के हाथ में एक कागज है।]**

**भविष्यानन्द** : हाँ, तो बताओ आज किस-किस ने समय नियुक्त कराया है ?

**शालिग्राम** : (**कागज पढ़ते हुए**) ठाकुर उमारमणसिंह और रमारमणसिंह; ये जमींदार पिता-पुत्र हैं। रायसाहब सेठ लक्ष्मीदास; ये एक मारवाड़ी व्यापारी हैं। सरस्वतीचन्द्र एक गुजराती साहित्यिक हैं। ऐक्स वाई जेड मजूमदार एक बंगाली विज्ञान कक्षा का विश्वविद्यालय का विद्यार्थी है। सरदार बहादुर तरलोकसिंह एक सिक्ख ठेकेदार और राज्य-सभा का सदस्य है।

**भविष्यानन्द** : अच्छा, आज तो बिलकुल चूँ-चूँ का मुरब्बा है।

**शालिग्राम** : दिल्ली की दसों दिशाओं में अब आपकी कीर्ति-पताका फहरा रही है और सभी वर्गों के व्यक्ति दौड़े आ रहे हैं।

**भविष्यानन्द** : हाँ, जहाँ जाता हूँ, सभी जगह यही होता है।

**शालिग्राम** : बात यह है, पण्डित जी, कि इस अखिल भूमण्डल में शायद ऐसा कोई भविष्यवक्ता अब तक नहीं हुआ जो भृगु-संहिता, ज्योतिष की अनेक अन्य गणनाओं, सामुद्रिक, रमल सभी विधियों में भविष्य कथन करे। फिर कितने बड़े विद्वान् हैं आप। कितनी भाषाएँ जानते हैं—इस देश की तो प्रायः सभी भाषाएँ और उपभाषाएँ तथा अनेक विदेशी भाषाएँ भी।

**भविष्यानन्द** : अच्छा, जो लोग आज आने वाले हैं, उनके कुटम्ब अब तक के कार्यों, आदि सबका पता तो लगा लिया है न ?

**शालिग्राम** : **(पास में रखे हुए अनेक कागज उठाकर)** इस सम्बन्ध में आप सर्वथा निश्चिन्त रहिए। मैं आपके सामने किसी ऐसे महत्त्वशाली व्यक्ति को उपस्थित ही नहीं होने देता, जिसकी समस्त बातों का परिचय पहिले से प्राप्त न कर लूं। आज के समस्त प्रधान-प्रधान व्यक्तियों के सम्बन्ध की बातों के कागजात तैयार हैं। **(कागज देते हुए)** जिस सिलसिले से ये कागज रखे हुए हैं, उसी सिलसिले से यजमान आयँगे।

[**भविष्यानन्द उन कागजों को तख्त पर इस प्रकार रखता है कि वह उन्हें देख सके पर सामने बैठने वाला नहीं।**]

**भविष्यानन्द** : **(दाहिनी ओर की दीवाल की रैंक की तरफ देखते हुए)** और देखो, इस बात का सदा ध्यान रखना कि इन पोथियों में से वही पोथी उठाई जाय जिसमें कुछ लिखा-पढ़ा हो।

**शालिग्राम** : क्या कभी ऐसी गलती हुई है कि बिना लिखी

पोथी आपके सामने आयी हो। फिर मैं बड़े हिसाब से इन पोथियों को जमाता हूँ, जिससे सब स्थलों पर कुछ-कुछ लिखी हुई पोथियाँ रहें। एक ही स्थल पर यदि लिखी हुई सब पोथियाँ रख दी जायँ और लाते समय सब स्थलों से न लायी जायँ तो सन्देह हो सकता है।

**भविष्यानन्द** : अच्छा, तो पहले तो उन सब को ले आओ, जिनमें कुछ जन्म-पत्रियाँ फैलाकर बैठें, कुछ लिखना आरम्भ करें, कुछ पढ़ना आरम्भ करें और फिर एक-एक कर आज के यजमानों को लाओ।

**शालिग्राम** : (उठते हुए) बहुत अच्छा।

**[भविष्यानन्द यजमानों के परिचय के दो कागजों को ध्यान से पढ़ता है। शालिग्राम बायीं ओर का दरवाजा खोलता है। इसमें से नीचे जाने की सीढ़ियाँ दिखती हैं, जिससे जान पड़ता है कि यह कमरा किसी ऊपर की मंजिल पर है। शालिग्राम सीढ़ियों से नीचे उतरता है और शीघ्र ही कुछ लोगों के साथ आता है। ये सब भिन्न-भिन्न अवस्था और स्वरूपों के व्यक्ति हैं; पर वेश-भूषा सब की भविष्यानन्द के सदृश ही है। इनमें से कुछ जन्म-पत्री के पुलन्दे, कुछ लिखने-पढ़ने का सामान, कुछ पुस्तकें लेकर बायीं ओर की गद्दी पर बैठते हैं और अपना कार्य आरम्भ करते हैं। अब शालिग्राम दाहिनी ओर दरवाजा खोलकर जाता है। इस दरवाजे से भी नीचे जाने की सीढ़ियाँ दिखती हैं। शालिग्राम शीघ्र ही उमारमणसिंह और रमारमणसिंह के साथ आता है। उमारमणसिंह लगभग पचास वर्ष की अवस्था का**

**गेहुँए रंग का ऊँचा-पूरा भरे हुए शरीर का व्यक्ति है। चूड़ीदार पाजामा और शेरवानी पहने है, सिर पर साफा बाँधे है। रमा-रमणसिंह बाईस, तेईस वर्ष का युवक है। रंग का गोरा-ऊँचा-पूरा पर कुछ दुबला। इसका व्यक्तित्व सुन्दर है। वेश-भूषा उमारमणसिंह के सदृश है। शालिग्राम दोनों का परिचय देता है।]**

**शालिग्राम** : (**उमारमण की ओर संकेत कर**) ठाकुर उमारमण-सिंह जी हैं। उत्तर प्रदेश के जमींदार। (**रमारमणसिंह की ओर संकेत कर**) रमारमणसिंह जी हैं। जमींदार साहब के सुपुत्र।

[**दोनों भविष्यानन्द को प्रणाम करते हैं। भविष्यानन्द दोनों हाथ उठाकर आशीर्वाद देता है।**]

**भविष्यानन्द** : (**दाहिनी ओर की गद्दी की ओर संकेत कर**) बैठिए, ठाकुर साहब। बैठिए, कुँवर साहब।

[**दोनों दाहिनी ओर की गद्दी पर बैठ जाते हैं। शालिग्राम भी भविष्यानन्द के निकट बैठ जाता है।**]

**भविष्यानन्द** : कहिए, भृगुसंहिता में से पूरा जीवन वृत्तान्त सुनेंगे या कुछ प्रश्न पूछेंगे ?

**उमारमणसिंह** : जब आपके समान महान् ज्योतिषी के पास आये हैं तब तो पूरा जीवन-वृत्तान्त ही सुनने की आशा है। कुछ और काम भी है, वह बाद में निवेदन करेंगे।

**भविष्यानन्द** : आप लोग अपनी जन्म-कुण्डलियाँ लाये हैं ?

**उमारमणसिंह** : (**जेब से दो छोटे कागज निकाल भविष्यानन्द**

**को देते हुए)** जी हाँ, यह हम दोनों की जन्म-कुण्डलियाँ हैं।

**भविष्यानन्द : (जन्म-कुण्डलियों को उलट-पलट कर शालिग्राम से)** लाओ तो भृगुसंहिता का वह खण्ड जिसमें ये जन्म-कुण्डलियाँ निकल आएँ। **(कुण्डलियाँ शालिग्राम को देता है।)**

**[शालिग्राम कुण्डलियाँ ले दाहिनी ओर के रैक के पास जाता है।]**

**उमारमणसिंह : (दाहिनी ओर के रैक को देखते हुए)** हमारी कुण्डलियाँ इन पोथियों में मिल जायेंगी ?

**भविष्यानन्द :** यही तो भृगुसंहिता की विशेषता है। संसार में ऐसा व्यक्ति न कभी पैदा हुआ, न इस समय है, और न भविष्य में होगा जिसकी कुण्डली इस भृगुसंहिता में न हो। फिर भृगुसंहिता तीन जन्मों का वृत्त बताती है। वर्त्तमान जन्म का, पूर्व जन्म का और आगे होने वाले जन्म का।

**उमारमणसिंह : (कुछ आश्चर्य से)** अच्छा !

**भविष्यानन्द :** जी हाँ, और मेरी भृगुसंहिता तो अन्य भृगुसंहिता वालों के सदृश जाली नहीं है। यह तो स्वयं महर्षि भृगु के हस्त-कमल द्वारा लिखी गयी है।

**उमारमणसिंह :** ओ हो !

**भविष्यानन्द :** जी हाँ, फिर अब तो इस संसार में महर्षि भृगु के वंश में केवल मैं ही बचा हूँ।

**उमारमणसिंह :** केवल आप ?

**भविष्यानन्द** : जी ।

[**शालिग्राम भृगुसंहिता की एक पोथी लाता है और उसे खोल उसके पन्ने इधर-उधर देख एक पन्ना भविष्यानन्द के सामने रखता है ।**]

**भविष्यानन्द** : (**पन्ना हाथ में लेकर देखते हुए**) यह लीजिए । यह आपकी कुण्डली मिल गयी । और कितनी सही मिली है, इसका पता आपको अभी इसके फलादेश से लग जायगा । मूल फलादेश तो संस्कृत में है, मैं आपको उसका भाषान्तर सुनाता हूँ । यह प्राणी मनुष्य-योनि के जिस गृह में जन्म लेगा वह इसके पितामह के सामने बड़ा सम्पन्न रहेगा । पिता के सामने इसके गृह की कुछ सम्पन्नता घटेगी और इसके जन्म के पश्चात् तो इसके गृह पर आर्थिकआपत्तियों के बादल छा जायेंगे ।

**उमारमणसिंह** : (**रमारमणसिंह से**) बहुत सत्य वर्णन है ।

**भविष्यानन्द** : इस प्राणी का न कोई भाई जन्मेगा और न बहन ।

**उमारमणसिंह** : (**प्रसन्नता से**) बिलकुल ठीक ।

**भविष्यानन्द** : इसकी माता का देहान्त इसकी बाल्यावस्था में होगा और पिता का देहान्त जब यह युवावस्था में रहेगा ।

**उमारमणसिंह** : ऐसा ही हुआ ।

**भविष्यानन्द** : इसका विवाह इसकी १६ वर्ष की अवस्था में होगा ।

**उमारमणसिंह** : सोलह वर्ष की अवस्था में ही मेरा विवाह हुआ ।

**भविष्यानन्द** : पत्नी इसे बड़ी सुशील मिलेगी । और पत्नी का सुख इसे वृद्धावस्था तक रहेगा । इसके एक ही पुत्र होगा ।

**उमारमणसिंह** : कितना······कितना सत्य है सारा वर्णन !

**भविष्यानन्द** : इस प्राणी के गृह का उत्कर्ष इस प्राणी के पुत्र पर निर्भर रहेगा और वह निर्भर होगा इसके पुत्र के विवाह पर।

**उमारमणसिंह** : ओहो ! ओहो ! मैं इसके विवाह के सम्बन्ध में ही तो आपसे परामर्श करने आया हूँ। कुछ कुण्डलियाँ भी लाया हूँ, उनका मिलान इसकी कुण्डली से कराऊँगा।

**भविष्यानन्द** : अपनी कुण्डली के कुछ अन्य फलादेश भी सुन लीजिए फिर इस पर भी विचार कर लूंगा। इस प्राणी की दीर्घ आयु होगी। मरने के पूर्व यह अपने घर का पूर्ण उत्कर्ष देखेगा और नाती-पोतियों का पूर्ण सुख देखने के पश्चात् मरेगा।

**उमारमणसिंह** : तो मेरा भविष्य बहुत उज्ज्वल है ?

**भविष्यानन्द** : इसमें कोई सन्देह नहीं। अब अपने पूर्व-जन्म और आगे होने वाले जन्म का भी वृत्त सुन लीजिए। यह प्राणी पूर्व-जन्म में चाण्डाल था। चाण्डाल-योनि में कुछ अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के कर्म किये। अच्छे कर्मों के फलस्वरूप इसका क्षत्रिय कुल में जन्म हुआ और बुरे कर्मों के कारण आर्थिक संकट रहा। अगले जन्म में यह ब्राह्मण होगा और तपस्या कर भगवत्-पद प्राप्त करेगा।

**उमारमणसिंह** : संक्षेप में आपने सभी कुछ बतला दिया, ज्योतिषी जी।

**भविष्यानन्द** : और कुछ जानना चाहते हैं, ठाकुर साहब ?

**उमारमणसिंह :** मैं असल में आया था इस लड़के की कुण्डली विवाह के लिए मिलवाने को, क्योंकि आपका यह कार्यालय विशेष रूप से इस कार्य को करता है। अब पहले आप इसकी कुण्डली का फल भी बता दीजिए। उसके पश्चात् जिस काम को मैं आया हूँ वह कर दीजिएगा।

**भविष्यानन्द :** बहुत अच्छा, (**पोथी के पन्ने इधर-उधर उलटता है। शालिग्राम से**) यह कुण्डली इस पोथी में नहीं मिल रही है। (**शालिग्राम को रमारमणसिंह की कुण्डली देते हुए**) इस कुण्डली वाली पोथी खोजो।

**शालिग्राम :** मैं ठाकुर साहब की पोथी लाया था। इस कुण्डली की पोथी अभी लाता हूँ। (**दाहिनी ओर की रैक के पास जाता है।**)

**भविष्यानन्द :** (**उमारमणसिंह से**) अच्छा आप मुझे वे कुण्डलियाँ दे दीजिए जो आप मिलान कराने लाये हैं।

[**उमारमणसिंह अपनी जेब से तीन कुण्डलियाँ निकालकर भविष्यानन्द को देता है।**]

**भविष्यानन्द :** (**तीनों कुण्डलियों को बारी-बारी से देखकर**) देखिए, ठाकुर साहब, इनमें से एक कुण्डली तो किसी काम की नहीं है। दो उन्नीस-बीस एक-सी हैं। अब देखूँगा इन दोनों में से किसकी कुण्डली का मेल खाता है।

[**शालिग्राम दूसरी पोथी लेकर आता है और उसे खोल उसका एक पन्ना भविष्यानन्द को देता है।**]

**भविष्यानन्द :** (**उस पन्ने को देखते हुए**) यह लीजिए, कुँअर

साहब की भी कुण्डली मिल गयी। संस्कृत में लिखे हुए फल की भाषा कर आपको सुनाता हूँ। यह प्राणी बड़ा भाग्य-शाली होगा। यद्यपि इसका जन्म ऐसे गृह में होगा जो इसकी युवावस्था तक आर्थिक संकट में रहेगा, परन्तु इसके विवाह होते ही इसका उत्कर्ष आरम्भ होगा। इसे रमा के सदृश पत्नी मिलेगी और उस पत्नी के साथ दहेज में अतुल द्रव्य। कामिनी और कांचन दोनों का अपूर्व मेल।

**उमारमणसिंह** : अच्छा! तब तो हम इसके विवाह के लिए कुण्ड-लियों का मिलान कराने जो आपके पास आये वह इसके विवाह से जो भाग्योदय होगा उसी संयोग के कारण।

**भविष्यानन्द** : इस प्राणी के जन्म के पश्चात् उसके एक भाई और एक बहन और होगी पर वे जीवित नहीं रहेंगे।

**रमारमणसिंह** : कितना सत्य है, पिताजी !

**उमारमणसिंह** : मैं तो आश्चर्य से स्तम्भित हूँ !

**भविष्यानन्द** : इस प्राणी को माता-पिता का बड़ी आयु तक सुख रहेगा। इसके चार पुत्र और दो कन्याएँ होंगी। जो सभी दीर्घ आयु वाली होंगी और सभी के बड़े अच्छे विवाह सम्बन्ध होंगे।

**उमारमणसिंह** : तो यह लड़का बड़ा भाग्यशाली है ?

**भविष्यानन्द** : लाखों-करोड़ों में एक। इनके पूर्व-जन्म और होने वाले जन्म का भी वृत्त सुन लीजिए। पूर्व-जन्म में यह प्राणी हाथी था और अगले जन्म में सिंह होगा।

**रमारमणसिंह** : **(दुखित होकर)** तो पहले मैं पशु-योनि में था

ग्रौर फिर मुझे पशु-योनि ही मिलेगी ?

**भविष्यानन्द** : सृष्टि का यह क्रम ही है, कुँग्रर साहब, चौरासी लाख योनियाँ हैं इस सृष्टि में। प्राणी न जाने कितनी ग्रच्छी-बुरी योनियों में जाता-ग्राता है पर ग्रापकी तो पूर्व-जन्म की पशु-योनि भी श्रेष्ठ योनि है। फिर ग्रागे होने वाली पशु-योनि से तो ग्रापको बचाया भी जा सकता है।

**रमारमणसिंह** : (**उत्सुकता से**) यह किस प्रकार, पण्डित जी ?

**भविष्यानन्द** : ग्रनुष्ठान, दान-पुण्य ग्रादि सत्कर्मों के द्वारा।

**रमारमणसिंह** : मैं वे समस्त कार्य करूँगा। ग्राप उन्हें बता भर दीजिए।

**भविष्यानन्द** : ग्रापके विवाह के पश्चात् ग्रापके घर का उत्कर्ष हो जाने दीजिए फिर वह सब भी बता दूंगा। कहिए ग्रौर कुछ पूछना है ?

**उमारमणसिंह** : ग्रब, ग्राप कुण्डलियाँ मिला दीजिए।

**भविष्यानन्द** : बहुत ग्रच्छा।

[**भविष्यानन्द रमारमणसिंह की कुण्डली ग्रपने तख्त पर एक ग्रोर ग्रौर उमारमणसिंह द्वारा दी गयीं दो कुण्डलियाँ दूसरी ग्रोर रख उन्हें ध्यान से देखता है। शालिग्राम दोनों पोथियों को बाँधकर रैक की ग्रोर ले जाता है।**]

**भविष्यानन्द** : दोनों ही कुण्डलियाँ मिलती हैं, पर (**उमारमणसिंह को देखते हुए**) यह बाद वाली कुण्डली ग्रधिक मिलती है।

**उमारमणसिंह** : (**भविष्यानन्द द्वारा दी गयी कुण्डली को देखते हुए**) पर जिस घर की यह कन्या है, उस घर में बहुत धन

तो नहीं सुना गया।

**भविष्यानन्द** : कभी नहीं, यह हो ही नहीं सकता। कन्या के ग्रहों के अनुसार इसके पिता के घर में अतुल सम्पत्ति है, पर भाग्येश को मंगल देखता है, अतः यह धन गुप्त है। आप निःशंक होकर कुँअर साहब का इस कन्या से विवाह कीजिए। पद्मिनी घर में आयेगी और अपने साथ लायेगी अतुल सम्पत्ति। ज्योतिष की गणना कभी मिथ्या हो सकती है?

[**कुछ देर निस्तब्धता।**]

**भविष्यानन्द** : और कोई प्रश्न, ठाकुर साहब?

**उमारमणसिंह** : इस समय और कुछ नहीं, ज्योतिषीजी। हमें यहाँ आकर असीम संतोष हुआ है। (**रमारमणसिंह की ओर देखकर**) क्यों, रमा?

**रमारमणसिंह** : हाँ, असीम सन्तोष, पिताजी। मैं तो कुछ दिन बाद फिर पण्डित जी के पास आऊँगा और इनसे अपनी पशु-योनि को बचाने के लिए अनुष्ठान तथा दान-पुण्य का पूरा विधान बनवाऊँगा।

**उमारमणसिंह** : दक्षिणा, पण्डित जी?

**भविष्यानन्द** : (**साइन बोर्ड की ओर संकेत कर**) श्रद्धानुसार।

[**उमारमणसिंह जेब में से एक सौ रुपये के नोट निकालकर भविष्यानन्द को देता है। फिर दोनों उठकर उसके चरण स्पर्श करते हैं और दाहिने मार्ग से जाते हैं। शालिग्राम पीछे-पीछे जाता है। इस बीच भविष्यानन्द यजमानों के परिचय के कागजों में से**

**दो कागजों को हटा देता है और तीसरे को खूब ध्यान से पढ़ लेता है। शालिग्राम लक्ष्मीदास के साथ वापस आता है। लक्ष्मीदास लगभग ६० वर्ष का न बहुत ऊँचा और न ठिगना, गेहुँए रंग का खूब मोटा व्यक्ति है, तोंद निकली हुई है, लम्बा कोट और धोती पहने है। सिर पर मारवाड़ी ढंग की पगड़ी बांधे है। ]**

**शालिग्राम** : रायसाहब सेठ लक्ष्मीदास जी।

**भविष्यानन्द** : (**दोनों हाथ उठाकर आशीर्वाद देते हुए दाहिनी गद्दी की ओर संकेत कर**) बैठिए, रायसाहब।

**[लक्ष्मीदास दाहिनी ओर की गद्दी पर बैठता है। शालिग्राम भविष्यानन्द के निकट बैठता है।]**

**भविष्यानन्द** : कहिए, रायसाहब, कुण्डली दिखाना चाहते हैं, हाथ दिखाना चाहते हैं या कोई प्रश्न पूछना चाहते हैं ?

**लक्ष्मीदास** : ना, पंडित जी, हूँ आज तो आप सूँ कुछ पिरसन पूछण ने आयो छूँ।

**भविष्यानन्द** : पूछो, सेठ जी, पूछो, पण ठहरो जरा, थारी कुण्डली और हाथ देखे बिणा मैं थारो कुछ हाल बताऊँ छूँ।

**लक्ष्मीदास** : अच्छा! मूँडो देखने थे जीवण रो हाल बता सको छो ?

**भविष्यानन्द** : लिलाट री रेखाएँ और भी कई बाताँ देखने सुणनेरे बाद थे जाँच लीजो कि मैं ठीक फल बता सकूँ छूँ या नेईं। थारो जनम चाँदने पखवाड़ा में हुयो।

**लक्ष्मीदास** : ठीक।

**भविष्यानन्द** : जब थारो जनम हुयो तब थारे पिता छोटी-सी मणिहारी री दूकान करता था।

**लक्ष्मीदास** : (**आश्चर्य से**) साँची बात छै।

**भविष्यानन्द** : थारे जनम रे पीछे थारे घर को धन दिन दूनो रात चौगणो बढ्यो।

**लक्ष्मीदास** : ठीक।

**भविष्यानन्द** : मकान बण्या, कोठियाँ खुलीं, फैक्टरियाँ बणीं। पण इण दिणा में थाने नाणे री थोड़ी अड़चन आयी छै।

**लक्ष्मीदास** : हाँ, या बात भी ठीक छै।

**भविष्यानन्द** : थे थारे पिता रा एकला बेटा छो। अब थारा पिता और माता दोणोई नई छै। थारी बहू छै और थारा दो छोरा और एक छोरी छै। एक छोरा और छोरी को व्याव हो चुक्यो छै। एक छोरी रो व्याव और होणो छै।

**लक्ष्मीदास** : (**आश्चर्य से**) जोसी जी, थे अजब मनुख जान पड़ो छो, यो सब थाने ज्योतिष विद्या सूं बतायो ?

**भविष्यानन्द** : नेई ये एक दख्खिणी विद्या छै। अब थे जो पिरसन पूछने ने आया छो वह भी सुन लो।

**लक्ष्मीदास** : आप म्हारे मन रा पिरसन भी बता देस्यो ?

**भविष्यानन्द** : न बतायो तो दख्खिणी विद्या झूठी। थे यह पिसरन पूछण ने आया छो कि थाने ई बखत नाणेरी जो अड़चन छै उण ताई थे तेजी-मद्दी रो व्यौपार करो या नई; और करो तो कुण चीज़ रो ?

**लक्ष्मीदास** : (**चिल्लाकर**) जोसी जी, जोसी जी, थे तो गजब ढा दियो !

**भविष्यानन्द** : पिरसन ठीक जाँच्यो न ? अब जवाब सुणो। थारो

यो बखत घणो चोखो छै। सफेद चीज़ों रे व्यौपार में थाने खूब फायदो होसी। दिल खोलने रुई और चाँदी रा तेजी रा सौदा करो। ई बरस थे बिड़ला और डालमियाँ रे बराबर हो जाने वाला छो।

**लक्ष्मीदास** : (**आश्चर्य से**) बिड़ला और डालमियाँ रे बराबर !

**भविष्यानन्द** : थारे मूंडासू दिख रह्यो छै। और देखो, थारे पहले जनम और आगे होने वाले जनम रो हाल बी सुण ल्यो।

**लक्ष्मीदास** : अच्छा ! थे यो भी बता सको छो ?

**भविष्यानन्द** : सिरफ तीन जन्मों रो। ईं जनम रो, ईं रे पहले एक जनम रो और ईंके बाद एक जनम रो। ईसूँ जादा कोई विद्या नईं बता सके। (**कुछ रुककर**) पहला जनम में थे पञ्चमुखी नाग था।

**लक्ष्मीदास** : (**घबराकर**) पञ्चमुखी नाग !

**भविष्यानन्द** : और अगले जनम में संसार रे सबसे धनी देश अमेरिका रे सबसे धनी घर मिस्टर फोर्ड रे अठे जनम लेबा वाला छो।

**लक्ष्मीदास** : धन जोसी जी, धन छै, थाँने ! रुई और चाँदी रे रुज़गार में तो फायदो होने पर तो मैं मूंडा माँगी दखना देस्यूं, पण ई बखत काँई देऊँ ?

**भविष्यानन्द** : (**साइन बोर्ड की ओर संकेत कर**) श्रद्धानुसार।

[**लक्ष्मीदास जेब से दो सौ इक्यावन रुपये के नोट भविष्यानन्द को देता है और उठकर उसके चरण स्पर्श कर**

**दाहिनी ओर के दरवाजे से जाता है। शालिग्राम उसके पीछे-पीछे जाता है। भविष्यानन्द यजमानों के परिचय के जो कागज तख्त पर रखे हैं उनमें से तीसरा कागज हटा देता है और चौथे को ध्यान से पढ़ लेता है। शालिग्राम का सरस्वतीचन्द्र के साथ प्रवेश। सरस्वतीचन्द्र लगभग ३० वर्ष की अवस्था का ठिगना और बहुत दुबला-पतला व्यक्ति है। खादी के कपड़े पहने है, सिर पर गांधी टोपी लगाये है। आँखों पर चश्मा है।]**

**शालिग्राम** : श्री सरस्वतीचन्द्र; एक साहित्यिक। (**भविष्यानन्द के निकट बैठता है।**)

[**सरस्वतीचन्द्र दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करता है।**]

**भविष्यानन्द** : (**दोनों हाथों को उठाकर आशीर्वाद देते हुए दाहिनी ओर की गद्दी की ओर संकेत कर**) बैसो, सरस्वती-चन्द्रजी, बैसो। केम जनाऊँ।

**सरस्वतीचन्द्र** : (**बैठते हुए**) म्हारी भाषा गुजराती छे पण राष्ट्रभाषा हिन्दी खूब जानू छूं। हिन्दी नो कवी छूं। पत्नी हिन्दी भाषा-भाषी छे, एटले हिन्दी में बात करश्यूं। केवल एक छोटा-सा प्रश्न पूछने आया हूँ। मैंने अब हिन्दी में कविता आरम्भ की है और अपनी एक रचना पुरुस्कार के लिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन को भेजी है। उस पर पुरस्कार मिलेगा या नहीं ?

**भविष्यानन्द** : (**रमल के पाँसों को हिलाकर सामने के तख्त पर फेंककर और उन्हें ध्यान से देखते हुए।**) आपको यह पुरुस्कार अवश्य मिलेगा। और इसके बाद अनेक पुरस्कार

मिलते जायँगे। (**सरस्वतीचन्द्र के चेहरे की ओर बहुत ध्यान से देखते हुए**) आपने अंग्रेजी में फर्स्ट डिवीज़न में एम० ए० पास किया है न ?

**सरस्वतीचन्द्र** : यह आपको कैसे मालूम हुआ ?

**भविष्यानन्द** : मैं, सरस्वतीचन्द्रजी, ज्योतिष के सिवाय अन्य विद्याएँ भी जानता हूँ। आपका चेहरा देखकर बता दिया कि आपने अंग्रेजी के फर्स्ट डिवीज़न में एम० ए० पास किया है।

**सरस्वतीचन्द्र** : पंडित जी, यह सब किसी दूसरे से कहिएगा। आपने कहीं से पता लगा लिया होगा।

**भविष्यानन्द** : ऐसा ! तो आप अविश्वासी हैं ? फिर यहाँ आये ही क्यों, महाशय ?

**सरस्वतीचन्द्र** : जरा जाँचना चाहता था कि भविष्य-कथन सत्य निकलते हैं या नहीं ?

**भविष्यानन्द** : साहित्य-सम्मेलन से जब पुरस्कार मिलेगा तब आपको विश्वास हो जायगा। आपका चेहरा देखकर मुझे जिस एक बात का और पता लगा है वह भी बता देता हूँ। आपको साहित्य-सम्मेलन का ही यह पुरस्कार मिलने वाला नहीं है। अंग्रेजी में लिखना आरम्भ कीजिए, आपको नोबल प्राइज़ मिलेगी।

[**सरस्वतीचन्द्र पर भविष्यानन्द की इस बात का प्रभाव पड़ता है। वह आँखें फाड़ और मुँह खोल भविष्यानन्द की ओर कुछ देर देखता है। कुछ देर निस्तब्धता।**]

**सरस्वतीचन्द्र** : आप समझते हैं मुझे नोबल प्राइज़ मिलेगी ?

**भविष्यानन्द** : नोबल प्राइज़ मानवों को ही मिलती है न, देवताओं को तो नहीं। आप में वह प्रतिभा है।

**सरस्वतीचन्द्र** : अच्छा ! (**कुछ रुककर**) दक्षिणा, पंडित जी ?

**भविष्यानन्द** : मैं अविश्वासियों से दक्षिणा नहीं लेता। जब साहित्य सम्मेलन से पुरस्कार मिल जाय तब दक्षिणा भेज दीजियेगा।

**सरस्वतीचन्द्र** : नहीं, नहीं; ऐसा कैसे हो सकता है।

**भविष्यानन्द** : ना, ना, ना ! (**शालिग्राम से**) सरस्वतीचन्द्र जी को नीचे ले जाइए।

**शालिग्राम** : चलिए, सरस्वतीचन्द्र जी।

[**सरस्वतीचन्द्र जेब में से एक रुपया निकालकर तख्त पर रख जाने लगता है।**]

**भविष्यानन्द** : (**रुपये को दाहिनी ओर के दरवाजे के बाहर फेंकते हुए**) किसी भिखारी को दे दीजियेगा।

[**रुपया खनखनाकर बाहर गिरता है। सरस्वतीचन्द्र और शालिग्राम का दाहिनी ओर के दरवाजे से प्रस्थान। भविष्यानन्द यजमानों के कागजों में से चौथा कागज हटाता है और पाँचवें को ध्यान से पढ़ता है। शालिग्राम का एक्स वाइ जेड मज़ूमदार के साथ प्रवेश। मज़ूमदार की अवस्था लगभग बीस वर्ष की है। वह गेहुँए रंग का ऊँचा और दुबला व्यक्ति है। बंगाली ढंग की धोती पहने है, उस पर लम्बा कमीज और छोटा कोट। सिर खुला है।**]

**शालिग्राम** : श्री एक्स वाई जेड मज़ूमदार। आप विज्ञान कक्षा के दिल्ली विश्वविद्यालय के विद्यार्थी हैं। (**भविष्यानन्द के

**पास बैठता है।)**

[**मजूमदार हाथ जोड़कर प्रणाम करता है।**]

**भविष्यानन्द** : (**दोनों हाथ उठा आशीर्वाद दे दाहिनी ओर की गद्दी की ओर संकेत कर**) बैठिए, मजूमदार जी।

**मजूमदार** : (**बैठते हुए**) होम आपशे पूछने आया हूँ कि होम ने ओबी शाइन्स का बी० ए० का एग्ज़ामीनेशन दिया है। पाश होगा या नेई ?

**भविष्यानन्द** : (**रमल के पाँसों को हिलाकर उन्हें तख्त पर फेंकते हुए ध्यान से देखकर**) आप सारी यूनिवर्सिटी में फर्स्ट डिवीज़न में फर्स्ट आयँगे।

**मजूमदार** : (**प्रसन्नता से**) ऐशा ! आपका मेहनटाना, मेहनटाना ?

**भविष्यानन्द** (**साइन बोर्ड की ओर संकेत कर**) श्रद्धानुसार। (**कुछ रुककर**) और देखिए, आप बड़े भारी वैज्ञानिक होने वाले हैं। इस देश के जगदीशचन्द्र बोस से भी बड़े। अरे, अरे आइन्स्टीन से भी बड़े।

**मजूमदार** : (**जेब से दो रुपये निकाल तख्त पर रखते और उठते हुए प्रसन्नता से**) ऐशा, ऐशा !

[**मजूमदार दाहिनी ओर के दरवाजे से जाता है, शालिग्राम उसके पीछे-पीछे जाता है। भविष्यानन्द यजमानों के परिचय-पत्रों में से पाँचवाँ कागज हटा छठवें को ध्यान से पढ़ता है। शालिग्राम का तरलोकसिंह के साथ दाहिनी ओर से प्रवेश। तरलोकसिंह लगभग पैंसठ वर्ष का ऊँचा-पूरा कुछ मोटा गोर-**

**वर्ण का व्यक्ति है। सिर और दाढ़ी-मूँछों के बाल सफेद हो गये हैं। वह अंग्रेजी ढंग के कपड़े पहने है। सिर पर साफा है।]**

**शालिग्राम** : सरदार बहादुर तरलोकसिंह; सदस्य राज्य-सभा।

**[तरलोकसिंह दोनों हाथ उठाकर नमन् करता है।]**

**भविष्यानन्द** : सत्य श्री अकाल। (**शालिग्राम से**) सरदार साहब के लिये कुर्सी रक्खो।

**[तख्त के पास एक कुर्सी रखी जाती है। तरलोकसिंह उस पर बैठ जाता है, और शालिग्राम भविष्यानन्द के समीप।]**

**तरलोकसिंह** : पंडत जी, मैंने आपका इश्तहार पढ़ा था और बहुत लोगों के मुँह से आपकी बहुत तरह की तारीफ भी सुनी। इश्तहार में लिखा था और लोगों से भी सुना कि आप यह बता सकते हैं कि कौन कितने दिन तक जिन्दा रहेगा? मैं अपनी उम्र जानने को आया हूँ।

**भविष्यानन्द** : जी हाँ, ज्योतिष, सामुद्रिक और रमल से भी उम्र का पता लगाना आसान नहीं है, लेकिन भगवान् की कृपा से मैंने जिसकी जितनी उम्र बतायी वह बिलकुल ठीक निकली।

**तरलोकसिंह** : इसीलिए तो हाजिर हुआ हूँ। देखिए, पंडत जी, मैं सब तरह से मजे में हूँ, लेकिन अब बूढ़ा हो रहा हूँ। अगर यह मालूम हो जाय कि कब जाने वाला हूँ तो जो कुछ और हवस रह गयी है आखिरी वक्त के पहले उन्हें पूरा कर लूँ।

**भविष्यानन्द** : देखिए, सरदार बहादुर साहब, इस दुनियाँ में जो

आया है उसको एक न एक दिन जाना लाजिमी है। लेकिन यह आप बजा फर्मा रहे हैं कि अगर पहले से मालूम हो जाय कि कब जाना है तो आदमी अपनी आखिरी ख्वाइशें भी पूरी कर लेता है। मैं आपको जिस साल, जिस महीने, जिस दिन, जिस घंटे, जिस मिनट और जिस सैकिंड पर आप जाने वाले हैं, वह ठीक-ठीक बता सकता हूँ। जिन-जिन ने पूछा और जिन-जिन को बताया है उसके मुताल्लिक एक गलती भी कभी कहीं नहीं हुई।

**तरलोकसिंह** : अच्छा, मरने का आप दिन, घंटा, मिनट और सैकिंड भी बता सकते हैं !

**भविष्यानन्द** : ज्योतिष, सामुद्रिक और रमल साइन्स है, सरदार साहब, पूरा साइन्स ! (**कुछ रुककर**) आप अपनी जन्म-कुण्डली लाये हैं ?

**तरलोकसिंह** : हॉरसकोप ? हॉरसकोप तो, पंडतजी, मेरा है ही नहीं।

**भविष्यानन्द** : कोई मुजायका नहीं। आपको अपनी पैदायश का साल, महीना, तारीख और वक्त याद है ?

**तरलोकसिंह** : हाँ, वह सब याद है। मैं सन् १८९० की पहली अप्रैल को दिन के १२ बजे पैदा हुआ था।

**भविष्यानन्द** : (**हँसी को बड़ी कठिनाई से होंठ चबाकर दबाते और कागज में नोट करते हुए**) अच्छा अभी कुण्डली तैयार होती है। इसी के साथ मैं आपके हाथों के प्रिंट भी लिवा लेता हूँ। कुण्डली बनते ही भृगु-संहिता से आपको सिर्फ इसी

जिन्दगी का नहीं, लेकिन इसके पहले की और इसके बाद की जिन्दगी का भी सब हाल बता दूँगा और आपके हाथ की रेखाओं से उनका मिलान कर दूँगा।

**तरलोकसिंह** : भरगू-संहिता का नाम तो मैंने भी बहुत सुना है, लेकिन ये किताबें जाली होती हैं।

**भविष्यानन्द** : (**कुण्डली खींचते हुए**) बिलकुल ठीक फरमा रहे हैं, सरदार साहब, मेरे पास की भृगु-संहिता को छोड़कर बाकी दुनियाँ में जितनी भृगु-संहिताएँ हैं, वे सब जाली हैं। लेकिन मेरे पास की भृगु-संहिता तो खुद महर्षि भृगु की लिखी हुई है और उनके खानदान का सिर्फ मैं ही एक आदमी बचा हूँ। (**शालिग्राम से**) सरदार साहब के हाथ के छापे तो लो।

**[भविष्यानन्द कुण्डली बनाता रहता है। शालिग्राम तख्त पर रखे हुए बड़े रजिस्टर पर तख्त पर रखी हुई स्याही के ब्रश से तरलोकसिंह के हाथों पर स्याही लगाकर उसके हाथों के छापे लेता है। छापे लेने के बाद एक कपड़े से तरलोकसिंह के हाथ को पोंछ देता है।]**

**भविष्यानन्द** : लीजिए, आपकी जन्म-कुण्डली भी तैयार हो गयी। (**शालिग्राम को कुण्डली का कागज देते हुए**) लाओ तो, शालिग्राम, इस कुण्डली का भृगु-संहिता वाला भाग।

**[शालिग्राम कुण्डली का कागज लेकर दाहिनी ओर के रैक के निकट जाकर इधर-उधर कुछ देख पोथी का एक बस्ता लेकर आता है और उसे खोल पोथी के कागज कुछ इधर-उधर उलट**

**पोथी का एक पन्ना भविष्यानन्द को देता है । इतनी देरी में भविष्यानन्द तरलोकसिंह के हाथों के छापों को बड़े ध्यान से देखता है । पोथी के पन्ने मिलने पर कभी पन्नों और कभी हाथ के छापों को इस तरह देखता है मानों अपनी सारी सुध-बुध भूलकर इस काम में तल्लीन हो गया है। तरलोकसिंह एकटक भविष्यानन्द की ओर देखता है । कुछ देर निस्तब्धता ।]**

**भविष्यानन्द** : कैसी ठीक जन्म-कुण्डली बनी है । बिलकुल मिल गयी भृगु-संहिता की कुण्डली से और तारीफ यह कि कुण्डली से जो बातें मालूम होती हैं हाथों की रेखाओं से भी ठीक वही ।

**तरलोकसिंह** : अच्छा !

**भविष्यानन्द** : (**अब तरलोकसिंह की ओर देख**) भृगु-संहिता संस्कृत में है । आपको मैं उसका तरजुमा भाषा में बताता हूँ ।

**तरलोकसिंह** : हाँ यह तो आपको करना ही होगा, क्योंकि संस्कोरत तो मैं जानता नहीं ।

**भविष्यानन्द** : यह प्राणी ईसाई सन् १८९० की पहली अप्रेल को १२ बजे दिन को हिन्दुस्तान के पंजाब सूबे के अमृतसर शहर मे पैदा होगा । जिस वक्त यह पैदा होगा उस वक्त इसके बाप की माली हालत बहुत मामूली होगी ।

**तरलोकसिंह** : बिलकुल ठीक लिखा है ।

**भविष्यानन्द** : जिस दिन यह पैदा होगा उसी दिन इसकी माँ का देहान्त हो जायगा ।

**तरलोकसिंह** : ओफ यह तक लिखा है !

**भविष्यानन्द** : जी हाँ, सुनते जाइए। जब यह पाँच साल का होगा, इसका बाप भी मर जायगा और यह यतीमखाने में भरती होगा।

**तरलोकसिंह** : पंडतजी, बड़े गजब की भरगू-संहिता है आपकी !

**भविष्यानन्द** : मैंने आपसे कहा न कि असली भृगु-संहिता दुनियाँ में सिर्फ मेरे पास है। (**कुछ रुककर**) इस प्राणी के कोई भाई या बहन नहीं होंगे। हिन्दुस्तान में उस वक्त जो पढ़ाई-लिखाई चल रही होगी उसका मैट्रिक इम्तहान यह प्राणी यतीमखाने में रहते हुए देगा।

**तरलोकसिंह** : एक-एक बात ठीक है।

**भविष्यानन्द** : मैट्रिक के इम्तहान के बाद यह प्राणी मास्टरी करेगा। इसके बाद ठेकेदार हो जायगा और ठेकेदार होने के बाद शादी करेगा। इसके सात लड़कियाँ और चार लड़के होंगे।

**तरलोकसिंह** : वाह, पंडतजी, वाह !

**भविष्यानन्द** : ठेकेदारी में यह प्राणी लाखों रुपया कमायगा। उसके बाद यह मुल्क के सयासी मामलों में भी दिलचस्पी लेना शुरू करेगा। उस वक्त हिन्दोस्तान पर यूरोप की एक अंग्रेज कौम की हुकूमत रहेगी। यह कौम हिन्दुस्तानियों की राय से हुकूमत चलाने के लिए कुछ मजलिसें कायम करेगी और यह प्राणी ईसाई सन् की १९४२वीं साल में उस वक्त की हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी सयासी मजलिस कौंसिल ऑफ

स्टेट का मेम्बर हो जायगा। उसी साल अंग्रेजी हुकूमत इसे सरदार बहादुर का खिताब देगी।

**तरलोकसिंह** : (**हैरान होकर**) गजब की भरगू-संहिता है आपकी, पंडतजी, गजब की ! सिलसिलेवार इतनी सब बातें लिखी हैं!

**भविष्यानन्द** : सिर्फ आपकी ही नहीं। दुनियाँ में जितने आदमी हो गये हैं, इस वक्त हैं और आगे होने वाले हैं उन सबकी; तभी तो (**दाहिनी ओर के रैकों की ओर संकेत कर**) इतनी जिल्दें हैं भृगु-संहिता की। (**कुछ रुककर**) अच्छा अब आगे सुनिए। ईसाई सन् १९४७ की ईसाई महीने अगस्त की १५ तारीख को हिन्दुस्तान में महात्मा गांधी की कोशिश से स्वराज्य कायम होगा। लेकिन यह प्राणी इतना होशियार होगा कि स्वराज्य के लिएकोई काम न करने पर भी, और हिन्दुस्तान में अंग्रेजी हकूमत को पूरी मदद देने पर भी, स्वराज्य की हुकूमत से भी यह बड़े अच्छे ताल्लुक कर लेगा और ईसाई सन् १९५० में जब स्वराज्य की सयासी मजलिसें बनेंगी तब उस वक्त की हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी सयासी जमात कांग्रेस की तरफ से यह फिर कौंसिल ऑफ स्टेट्स का मेम्बर हो जायगा।

**तरलोकसिंह** : वाह, पंडतजी, वाह ! गजब की किताब है आपकी, इसमें शक नहीं।

**भविष्यानन्द** : यह प्राणी हिन्दुस्तान के बाहर भी कई मुल्कों में घूमेगा और उस वक्त जो तमाम दुनियाँ में एक हुकूमत कायम करने की कोशिश चल रही होगी उसके जलसों में

भी यह शरीक होगा।

**तरलोकसिंह** : हाँ, पंडतजी, मेरा तो यकीन है कि बहुत जल्द दुनियाँ में एक हुकूमत कायम होगी। लीग ऑफ नेशन्स, यूनाइटेड नेशन्स आरगनाइजेशन्स वग़ैरह दर असल इसी काम के लिए शुरूआत की कोशिशें हैं।

**भविष्यानन्द** : इस प्राणी की यह जिन्दगी ईसाई सन् १९५५ की ईसाई महीने की पहली अप्रेल को दिन को बारह बज-कर एक सैकिण्ड पर खत्म होगी।

**तरलोकसिंह** : (**लम्बी साँस लेकर**) तब तो मेरा बहुत कम वक्त बाकी है ?

**भविष्यानन्द** : पर, कोई अफसोस की बात नहीं है, सरदार साहब, अपने पिछले और आगे होने वाले जन्म का भी हाल सुनिए। (**कुछ रुककर**) यह प्राणी इसके पहले की जिन्दगी में गर्दभ योनि में था।

**तरलोकसिंह** : याने ?

**भविष्यानन्द** : देखिए, सरदार साहब, अफ़सोस न कीजियेगा, चौरासी लाख योनियाँ हैं। हर प्राणी को अच्छी-बुरी योनियों में भटकना पड़ता है। आपकी पिछली योनि चाहे बुरी रही हो लेकिन आपकी अगली योनि बहुत ही अच्छी है।

**तरलोकसिंह** : लेकिन पिछली योनि क्या थी ? बताइये न ! आपने क्या कहा गरदभ······गरदभ योनि ! याने ?

**भविष्यानन्द** : मुझे तो जो कुछ लिखा है, सच्चा-सच्चा बताना

ही होगा। बुरा न मानियेगा। याने पहले आप गधे थे। लेकिन आपके अगले जन्म के बाबत लिखा है कि आप किसी काश्मीरी के यहाँ जन्म लेंगे। हिन्द के वजीरे आजम बनेंगे। आपकी उस जन्म की पैंसठ साल की उम्र में तमाम दुनियाँ की एक हुकूमत कायम हो जायगी और अपने उस जन्म की सत्तर साल की उम्र में आप तमाम दुनियाँ के वजीरे आजम होंगे।

**तरलोकसिंह** : (**प्रसन्न हो आँखें फाड़े और मुँह खोलकर भविष्यानन्द की ओर देखते हुए**) अच्छा, अच्छा !

**भविष्यानन्द** : जी हाँ, अगर अब तक की तमाम बातें सही निकली हैं तो आगे होने वाली बातें भी सच निकलेंगी ही। (**कुछ रुककर**) और देखिए, भृगु-संहिता की ये बातें आपकी हाथ की रेखाओं से भी हू-बहू मिलती हैं।

**तरलोकसिंह** : लेकिन...... लेकिन इस जिन्दगी के खत्म होने में तो अब बहुत वक्त नहीं है।

**भविष्यानन्द** : (**कुण्डली देखते हुए**) वह तो आपकी जन्म-कुण्डली और दूसरी गणनाओं से भी जान पड़ता है।

**तरलोकसिंह** : कैसे ?

**भविष्यानन्द** : देखिए, आपको इस वक्त शनिश्चर की महादशा चल रही है। फिर वह शनिश्चर साढ़े सातोक भी हो गया है।

**तरलोकसिंह** : साढ़े सात साल का जो बुरा शनीचर आता है वह न ?

**भविष्यानन्द** : जी हाँ, फिर शनीचर आपका मारकेश है।

**तरलोकसिंह** : याने ?

**भविष्यान्नद** : आप जानते हैं, जो दुनियाँ में आता है उसे एक दिन मरना तो पड़ता ही है। इसीलिए हर आदमी की जन्म कुण्डली में एक ग्रह ऐसा होता है जो उसे मारता है। उस ग्रह को मार्केश कहते हैं।

**तरलोकसिंह** : तो शनीचर मेरे मारने वाला है ?

**भविष्यानन्द** : जी हाँ, उसी की आपको महादशा चल रही है। और साढ़े सातीक दशा भी। महादशा के भीतर दो दिशाएँ और होती हैं एक अन्तरदशा और दूसरी प्रत्यन्तरदशा। शनीचर की दशा में इस वक्त आपको राहु का अन्तर चल रहा है।

**तरलोकसिंह** : राहू भी बड़ा बुरा ग्रह है ?

**भविष्यानन्द** : जी हाँ, फिर यह राहू आपकी कुण्डली में नीच का पड़ा है।

**तरलोकसिंह** : याने ?

**भविष्यानन्द** : हर आदमी की कुण्डली में कुछ ग्रह उच्च के पड़ते हैं और कुछ नीचे के। यह ज्योतिष साइन्स का एक मामला है। यह जल्दी आपकी समझ में नहीं आयेगा। इतना ही समझ लीजिए कि राहू आपकी कुण्डली में अच्छा ग्रह नहीं है। शनीचर की महादशा में राहू की अन्तर दशा है और अब प्रत्यन्तर में केतू आने वाला है।

**तरलोकसिंह** : केतू भी बहुत बुरा गिरह है।

**भविष्यानन्द** : जी, हाँ।

**तरलोकसिंह** : तो……तो एक अप्रेल सन् ५५ को दिन को बारह बजकर एक सैकिंड पर मेरा मरना तय है !

**भविष्यानन्द** : क्या कहूँ ! आप यही जानने तो मेरे पास आये थे। मैंने सब बातें खोलकर आपके सामने रख दीं। सन् ५५ की एक अप्रेल को दिन के बारह बजकर एक सैकिंड पर आपका इन्तकाल हो जायगा।

[**तरलोकसिंह कुछ सिर झुका लेता है। कुछ देर निस्तब्धता।** ]

**तरलोकसिंह** : (**चारों तरफ साहस को बटोरते हुए सिर उठाकर**) मुझे, पंडत जी, मरने का ज़रा भी अफसोस नहीं है। जिन्दगी में सब कुछ कर लिया। मरना तो एक दिन है ही, जल्दी या देर से। कुछ लोग बड़ी लम्बी उम्र पाते हैं, कुछ कम। मैं भी बूढ़ा तो हो रहा हूँ लेकिन कई शख्स नब्बे-नब्बे, सौ-सौ साल तक जिन्दा रहते हैं। तन्दुरुस्ती अच्छी थी। सोचता था और कुछ साल लड़कों-बच्चों में और रह लूं, मुल्क और दुनियाँ की भी कुछ और खिदमत कर लूं, पर खैर ! अब तो जाने की तैयारी करनी है।

**भविष्यानन्द** : दुनियाँ में बहुत कम आपके मानिन्द खुशकिश्मत होते हैं, सरदार बहादुर साहब। और फिर आपको तो अपने जाने का साल, महीना, दिन, मिनिट ही नहीं सैकिंड तक मालूम हो गया है। अब आखरी वक्त के तमाम काम कर डालिए। राजा परीक्षित को एक हफ्ते पहले मालूम हुआ था कि उसे फलाँ वक्त साँप डसने वाला है, राजा खट्वांग

को मालूम हो गया था कि उसकी उम्र सिर्फ कुछ घण्टे ही बाकी रही है और इतना कम वक्त रहते हुए भी उन्होंने ऐसे काम किये जिससे वे तर गये ।

**तरलोकसिंह** : **(जेब से पैन्सिल और नोटबुक निकालते हुए )** क्या नाम बताये आपने ? पारीछत और······और क्या ?

**भविष्यानन्द** : राजा परीक्षित और खट्वांग ?

**तरलोकसिंह** : फिर बताइए एक दफा, जरा धीरे-धीरे ।

**भविष्यानन्द** : प री क्षि त, खट्वांग ।

**तरलोसिंहक** : **( लिखते हुए )** आप संस्कीरत में लिख भी दीजिए ।

[ **नोटबुक भविष्यानन्द को देता है । वह उसमें लिख देता है ।** ]

**भविष्यानन्द** : **(नोटबुक तरलोकसिंह को वापिस देते हुए )** और देखिए ; आप बड़े आदमी हैं, हमारे मुल्क में राजा, महाराजाओं और अमीरों में बड़े-बड़े दानी हुए हैं । राजा रघु और सम्राट् हर्ष तो अपना सब कुछ दान में दे डालते थे ।

**तरलोकसिंह** : कौन······कौन ? क्या नाम लिये आपने ? राजा······

**भविष्यानन्द** : रघु और हर्ष ।

**तरलोकसिंह** : **(नोटबुक में नोट करते हुए)** राजा रघु और और······

**भविष्यानन्द** : हर्ष ।

**तरलोकसिंह** : **(नोट करते)** हरष······हरष । **(नोटबुक भवि-**

**ष्यानन्द को देते हुए )** संस्कीरत में भी लिख दीजिए।

[**भविष्यानन्द नोटबुक लेकर लिखता है और नोटबुक तरलोकसिंह को लौटाता है।** ]

**तरलोकसिंह** : ये लोग सब कुछ दे डालते थे, कुछ नहीं रखते थे ?

**भविष्यानन्द** : जी हाँ।

**तरलोकसिंह** : (**कुछ विचारते हुए**) मैं भी···मैं भी कुछ नहीं रक्खूंगा, पंडत जी, कुछ सातों लड़कियों और दामादों को बाँट दूंगा, कुछ चारों लड़कों और पतोहुओं को दे दूंगा। कुछ खैरात कर दूंगा। एक पाई······एक पाई भी सन् ५५ पहली अप्रेल को १२ बजे दिन के पहले न रक्खूँगा।

**भविष्यानन्द** : धन्य है, आपको, सरदार बहादुर साहब ! धन्य है !

[**कुछ देर निस्तब्धता**]

**तरलोकसिंह** : आपका मेहनताना, पंडत जी ?

**भविष्यानन्द** : (**साइनबोर्ड की ओर संकेत कर**) श्रद्धानुसार।

[**तरलोकसिंह जेब से एक हजार रुपये के नोट निकालकर भविष्यानन्द को देता है।**]

**भविष्यानन्द** : ( **अत्यन्त प्रसन्नता से नोटों को देखते हुए** ) आप बड़े फ़ैयाज हैं······सचमुच बड़े फैयाज हैं।

[**तरलोकसिंह उठकर भविष्यानन्द से हाथ मिलाता है।**]

**यवनिका**

# दूसरा अंक

## पहला दृश्य

स्थान : फैजाबाद के एक साधारण से मुहल्ले में एक साधारण से मकान का आँगन

समय : सन्ध्या

[इस आँगन में विवाह की तैयारी है। जहाँ भाँवर पड़ने वाली हैं वह छोटा-सा मण्डप आँगन के बाँयीं ओर बनाया गया है। उस मण्डप में विवाह की तैयारी हो रही है। स्त्रियों का एक समूह उस मण्डप के निकट बैठा हुआ है। दाहिनी ओर एक लम्बी-सी दरी बिछी है, उसके पीछे के सिरे पर एक मैला-सा गलीचा बिछा है और गलीचे पर एक मैली-सी खोली की मसनद रखी है। रमारमर्णसिंह की बरात आ चुकी है। दूल्हे के वेश में रमारमर्णसिंह, हिचकचाया-सा इस मसनद के सहारे बैठा हुआ है। उमारमर्णसिंह, उसके कई नातेदार और मित्र बरातियों के रूप में उस दरी पर बैठे हैं। सभी बरातियों के चेहरों पर हवाइयाँ उड़ रही हैं; उमारमर्णसिंह के चेहरे पर सबसे अधिक। लड़की वाला अत्यन्त सधारण वस्त्रों में अपने थोड़े से नातेदारों के साथ इन लोगों के सामने बैठा है। नेपथ्य में बजती हुई देहाती शहनाई की मन्द-मन्द ध्वनि आ रही है।]

एक पण्डित : (विवाह के मण्डप के पास आकर उमारमर्णसिंह से) भाँवर की बेला हो गयी ठाकुर साहब : कुँअरजी पधारें।

**उमारमणसिंह** : (**भर्राये स्वर में**) उठो, बेटा।

[**अत्यन्त अनमनी मुद्रा में रमारमणसिंह उठता और पंडित के साथ बाँयीं ओर जाता है। उसके साथ उसका सहबाला और कुछ मित्र भी जाते हैं। इसके मण्डप में पहुँचने पर पण्डित स्वस्तिवाचन का पाठ करता है।**]

**पण्डित** : (**पाठ करते हुए बीच ही में स्त्रियों से**) कन्या को लाइए।

[**कुछ स्त्रियाँ उठकर आँगन से मकान के भीतर जाती हैं और बधू के रूप में कन्या को लाती हैं। कन्या एकदम काले रंग की है, बहुत ही साधारण वस्त्र पहने है, हाथों और पैरों में चाँदी के भद्दे भूषण हैं। स्त्रियाँ मंगल-गान आरम्भ करती हैं।**]

**रमारमणसिंह** : (**वधू को देख, क्रोध से आग बबूला हो भृकुटी चढ़ा पंडित से कड़ककर**) ठहरिए, पण्तिडजी, मैं विवाहनहीं करूँगा। (**जल्दी से उठकर बरातियों के बीच आता है।**]

[**पण्डित जी का स्वस्तिवाचन, स्त्रियों का गायन यकायक बन्द हो जाता है। बरात में खलबली-सी मच जाती है। एक विचित्र प्रकार की निस्तब्धता।**]

**उमारमणसिंह** : (**अत्यन्त भर्राये स्वर में**) क्यों···क्यों क्या हुआ, रमा ?

**रमारमणसिंह** : जाकर देखिए अपनी उस कमल-विहारिणी पद्मिनी होने वाली पुत्र-वधू को और उसके अंग-प्रत्यंगों के आभूषणों को जिनसे आपको दहेज में मिलने वाली अतुल

सम्पत्ति का अनुमान हो जायगा।

**लड़की का पिता : (एकदम चौंककर)** कैसी···कैसी पद्मिनी... कैसा दहेज !

**रमारमणसिंह :** पिताजी, वह लड़की पद्मिनी नहीं है, काली-कलूटी डाकिनी-पिशाचिनी है। मैं ऐसी लड़की से कदापि विवाह नहीं करूँगा।

[**बरातियों में फुसफुसाहट आरम्भ होती है।**]

**लड़की का पिता : (क्रोध से उमारमणसिंह से)** ठाकुर साहब ! यह सब कुँअर जी क्या बक रहे हैं ? क्या इनको पागलपन के दौरे होते हैं ? मैंने बड़ी गलती की कि इनकी डाक्टरी परीक्षा के बाद मुझे सगाई स्वीकार करनी थी। मेरी लड़की डाकिनी ···! पिशाचिनी !

**रमारमणसिंह :** डाकिनी और पिशाचिनी नहीं तो और क्या ?

**लड़की का पिता : (उमारमणसिंह और बरातियों से)** मैंने ठाकुर साहब का नाम सुन रखा था। समझा था भले आदमी होंगे ; भलों की भली ही सन्तान होती है। समझा था दामाद भी भला मिलेगा। भलों के नातेदार-दोस्त भी भले ही होते हैं। समझा था भले आदमी बरात में आयेंगे। पर कल का यह छोकरा मेरा इस तरह अपमान कर रहा है ! और ठाकुर साहब, आप और सब बराती मिट्टी की मूर्तियों के सदृश बैठे हैं ! यह सब है क्या ?

**रमारमणसिंह : (उठकर बाहर की ओर जाते हुए)** पिताजी··· पिताजी, मैंने कह दिया ऐसी लड़की से मैं विवाह नहीं

करूँगा, कदापि नहीं करूँगा।

**एक वृद्ध बराती** : (**उमारमणसिंह से**) क्या लड़की और घर को आपने पहले देखा नहीं था ?

**उमारमणसिंह** : क्या कहूँ धोखा···बड़ा भारी धोखा हो गया।

**लड़की का पिता** : कैसा धोखा ? मैंने कोई धोखा दिया ?

**उमारमणसिंह** : (**सकपकाते हुए**) नहीं, नहीं, आपने ··· आपने नहीं।

**लड़की का पिता** : तब ?

**उमारमणसिंह** : तब ?···तब ? क्या कहूँ···क्या कहूँ, कहते नहीं बनता, पर···पर व्याह तो अब···अब नहीं होगा। (**वह भी उठकर रमारमणसिंह के पीछे जाता है।**)

[**सारी बरात उठती है।**]

**लड़की का बाप** : (**चिल्लाकर**) याद रखियेगा, ठाकुर साहब ! यह कोई मजाक नहीं है ! मैं फौजदारी और दीवानी दोनों में ही मान-हानि की नालिश करूँगा।

**लघु यवनिका**

## दूसरा दृश्य

स्थान : दिल्ली के सीताराम बाजार में लक्ष्मीदास का दफ्तर

समय : तीसरा पहर

**[आधुनिक ढंग का दफ्तर है। राइटिंग टेबल पर लिखने-पढ़ने के सामान के सिवा, टेलीफोन रिसीवरों की एक पंक्ति लगी हुई है। लक्ष्मीदास घूमने वाली आॅफिस चेअर पर बैठा हुआ है। उसकी मुद्रा से भान पड़ता है कि वह एकदम घबड़ाया हुआ है। टेलीफोन की घण्टी बजती है।]**

**लक्ष्मीदास : (टेलीफोन का रिसीवर कानों में लगाकर)** हलो हलो···बम्बई का ट्रंक ! हाँ······हाँ······हाँ बोलो······ बोलो, हाँ, रिसबदासजी, काँई हूकुम छै ? दस रूपिया एक दम, दस रूपिया रूई और घट गई···काँई हूयो···काँई हुयो···बाजार घटतौई जावै छै ? सोदो काट देऊँ ? ईं भाव माँ ! ···फाटका में भाव नईं देख्यो जावै ? पण······ पण ईं भाव में सौदो कियाण काटो जावे ?·· तो···तो डिफरेन्स को नाणों और भेजूं ?······पण···पण थोड़ी······ थोड़ी तो आप किरपा करने धीरज······धीरज राखो। **(टेलीफोन बन्द हो जाता है, वह रिसीवर रख देता है।)**

**[लक्ष्मीदास का मुनीम आता है। अवस्था अधेड़ है। वेश-भूषा लक्ष्मीदास के सदृश।]**

**लक्ष्मीदास** : मुनीम जी, बम्बई को ट्रंक आयो थो। रुई दस रूपिया घट गयी। आढ़तिया कहे छै या तो सौदो काटो या डिफरेन्सरो नाणो भेजो।

[**मुनीम कुर्सी पर बैठता है और कुछ बोलने वाला ही है कि दूसरे फोन में घण्टी बजती है।**]

**लक्ष्मीदास** : (**रिसीवर उठा कान में लगा**) हलो……हलो, कलकत्ते का ट्रंक ? ……बोलो··बोलो···हाँ……हाँ कुण ···कुण, दानमलजी ?···हाँ, हाँ,···हाँ, चाँदी में एकदम पाँच-पाँच रूपिया उतर गया ?···सौदो काटूं ? ···ई भाव माँ ?···ई भाव माँ ?……नई नई। भाव बधसी…… जरूर···जरूर बधसी।···डिफरेन्स भेजूं।···थोड़ी…… थोड़ी सबर··· (**टेलीफोन बंद हो जाता है, लक्ष्मीदास रिसीवर रख देता है। मुनीम से**) रुई और चाँदी दोनों बाजार कुलेप्स हो गया मुनीम जी, कुलेप्स ! (**कुर्सी पर टिकते हुए एक दम घबराहट भरे स्वर में**) अब काँई करनो ?

**मुनीम** : गजब हो गयो, सेठ जी, गजब ! रुई और चाँदी दोनौई आपने इतनी पोते करलीं कि कोई ठिकाणो है ? यो के करयो आपने ?

**लक्ष्मीदास** : काँई बताऊँ, मुनीम जी।

[ **फिर से फोन की घण्टी बजती है।** ]

**लक्ष्मीदास** : (**रिसीवर उठाकर**) हलो···हलो···फिर बम्बई का ट्रंक ? अर्जेन्ट काल……बोलो……बोलो……हाँ, फेरूँ रिसबदास जी।···रूई रे भाव पाँच रूपिया और घटया···

म्हारो सोदो चूकती काट दियो ?...ओ नुकसानी का आठ लाख अठहत्तर हजार बलण रे पेले भेजूँ ? ... पण ... पण आपने कीरे कहणे सूँ सौदो काट्यो ? ई नुकसान री म्हारी जुम्मेदारी नईं। ... धमकी देवो छो ... इन्सानवेन्सी में ले जावारी। ...तो...तो रिसबदास जी, म्हारे हाथा में भी चूड़ियाँ नहीं छै ... । **(टेलीफोन बन्द हो जाता है। लक्ष्मीदास रिसीवर पटक देता है। मुनीम से)** बिना पूछेई सौदो काट दियो, कहे छे बलण रे पेले रूपिया भेजो। धमकी देवे छे, ईसानी में ले जावा री !

**मुनीम** : पण, सेठ जी ! वो ईसानी में के ले जावेगो ? आपने खुद ही ईसानी में जाणो पड़सी ? ...के... कियो यो आपने ?

**लक्ष्मीदास** : अब काँईं घर मे ई झगड़ो सुरू होसी ?

[**फिर से टेलीफोन की घण्टी बजती है।**]

**लघु यवनिका**

## तीसरा दृश्य

स्थान : दिल्ली के सब्जी मण्डी मुहल्ले में सरस्वतीचन्द्र के साधारण से मकान का एक साधारण कमरा

समय : सन्ध्या

[**कमरे में आधुनिक ढंग के फर्नीचर की बहुत साधारण सजावट है। सरस्वतीचन्द्र एक आरामकुर्सी पर लेटा हुआ है। उसके हाथ में एक पोस्ट कार्ड है। सरस्वतीचन्द्र की पत्नी उसी के निकट की कुर्सी पर बैठी हुई है। उसकी अवस्था सरस्वतीचन्द्र से चार-पाँच वर्ष कम है। वह गौर वर्ण की सुन्दर महिला है। खादी की साड़ी और सलूका पहने हुए है।**]

**सरस्वतीचन्द्र** : हाँ, उर्मिला, साहित्य सम्मेलन ने मेरी कविताओं पर पुरस्कार दे दिया। इस पोस्टकार्ड में यही सूचना है।

**उर्मिला** : तुम जिस दिन उस ज्योतिषी से प्रश्न कर लौटे थे और तुमने उसका सब हाल बताया था मुझे तो उसी दिन से आशा थी कि तुम्हें यह पुरस्कार अवश्य मिलेगा।

**सरस्वतीचन्द्र** : स्त्रियों को ऐसी बातों पर बड़े शीघ्र विश्वास हो जाता है।

**उर्मिला** : पर, देखो न ! तुम्हारा मत ठीक निकला या मेरा ?

**सरस्वतीचन्द्र** : उस ज्योतिषी ने तो और भी बड़ी-बड़ी बातें बतायी हैं।

**उर्मिला** : हाँ, उस दिन तुमने कहा था कि उसने तो यह कहा है

कि तुम्हें नोबल प्राइज़ मिलेगी।

**सरस्वतीचन्द्र** : हाँ, उसने तो यही कहा है।

**उर्मिला** : आहा ! यदि तुम्हें नोबल प्राइज़ मिल गयी तो तुम में और रवीन्द्रनाथ ठाकुर में क्या अन्तर रह जायगा ?

**सरस्वतीचन्द्र** : अरे वह लफंगा है, लफंगा।

**उर्मिला** : तुम अपनी प्रतिभा जानते नहीं और बेचारे ज्योतिषी को कहते हो लफंगा।

**सरस्वतीचन्द्र** : सौ आदमियों को उनके भविष्य के सम्बन्ध में मैं भी अटकल पच्चू कुछ कह दूं तो कम से कम दस के सम्बन्ध में तो मेरी अटकल पच्चू भविष्यवाणी भी सत्य निकलेगी।

**उर्मिला** : पर, तुम तो कहते थे, उन ज्योतिषी जी का बड़ा ठाट-बाट है।

**सरस्वतीचन्द्र** : ठाट-बाट तो बहुत है। क्या पूछती हो ! ऐसा साइन बोर्ड तो मैंने कहीं देखा ही नहीं। एक लगा है मकान के बाहर और दूसरा जिस गद्दी पर वह बैठता है उसके पीछे। भृगुसंहिता पोथी के इतने बस्ते रखे हैं कि उनके सब पन्ने यदि फैलाये जायँ तो सारी भूमध्य रेखा ढक जाय। जन्म-पत्री के इतने पुलन्दे हैं कि बड़े से बड़ा पेपर मिल एक साल में भी उतना कागज़ न बनाता होगा। और कितने आदमी जन्मपत्रियाँ और वर्षफल गोदते हैं। फिर सामुद्रिक की स्याही, रमल के पाँसे। पंडित जी के नाम और उनकी उपा-धियाँ। भविष्यानन्द ! ऐसा किसी का नाम आज तक सुना था ? ज्योतिष-ज्योति, सामुद्रिकाचार्य, रमल-मार्त्तण्ड ! ऐसी

उपाधियाँ किसी की सुनी थीं ?

**उर्मिला** : तुम सब पुरुष तो आजकल ऐसे अविश्वासी हुए हो कि क्या कहूँ ?

**सरस्वतीचन्द्र** : देखो, उर्मिला , ज्योतिष, सामुद्रिक, रमल आदि विद्याएँ वैज्ञानिक हैं ही नहीं। ज्योतिष की समस्त गणनाएँ ग्रह-नक्षत्रों पर ही होती हैं ?

**उर्मिला** : और काहे पर होंगी ?

**सरस्वतीचन्द्र** : अब विचार करो ज़रा, इन ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति और इस स्थिति के कारण ज्योतिषी लोग जो फल बताया करते हैं, उस पर। हमारे सौरमण्डल में सूर्य सबसे प्रधान ग्रह है।

**उर्मिला** : अवश्य।

**सरस्वतीचन्द्र** : सूर्य के बाद दूसरे ग्रह हैं। अब किसी व्यक्ति के जन्म के समय सूर्य और सौरमण्डल के ग्रहों के किन्हीं विशिष्ट स्थानों पर होने के कारण जन्मे हुए व्यक्ति का सारा जीवन उन ग्रहों के अमुक-अमुक स्थानों पर रहने के कारण अमुक-अमुक प्रकार से चलेगा, यह धारणा ही हास्यास्पद है। एक बात और समझ लो।

**उर्मिला** : कौनसी ?

**सरस्वतीचन्द्र** : ज्योतिषियों के अनुसार इन ग्रहों का फल, ग्रहों के एक दूसरे से क्या सम्बन्ध रहता है इस पर निर्भर करता है। हमारे सौरमण्डल के कुछ ग्रह ऐसे हैं जिनका ज्योतिषियों को पहले पता ही न था और जिनका पता अभी

कुछ समय पूर्व लगा है ।

**उर्मिला** : जैसे ?

**सरस्वतीचन्द्र** : जैसे, हरषल और नेपच्यून । और अब तो यह माना जाता है कि हमारे सौरमण्डल के कुछ ग्रहों का अभी भी पता नहीं लगा ।

**उर्मिला** : ऐसा !

**सरस्वतीचन्द्र** : हाँ, अब यदि इन ग्रहों का फल उनके एक दूसरे के सम्बन्ध पर निर्भर है तब हरषल और नेपच्यून जिनका पहले पता न था उनके बिना एवं जिन ग्रहों का अभी भी पता नहीं है, इनका पता लगे बिना सब ग्रहों का आपस का सम्बन्ध कैसे निर्णय किया जा सकता है ? और बिना इस निर्णय के जो फल बताये जाते हैं वे कैसे ठीक हो सकते हैं ? फिर यह पुनर्जन्म की कल्पना तो इतनी बे सिर-पैर की है जिसकी कोई सीमा नहीं ।

**उर्मिला** : मैं जानती हूँ, तुम पुनर्जन्म नहीं मानते ।

**सरस्वतीचन्द्र** : वह मानने की चीज ही नहीं है । देखो, हमारा सूर्य कितना बड़ा है । इस विश्व में उससे भी बड़े न जाने कितने सूर्य हैं । हमारे सूर्य के सामने यह पृथ्वी कितनी क्षुद्र है । और इस पृथ्वी पर यह मानव । शायद इसकी तुलना सूखी पत्ती, पानी के बुदबुदे और धूल के कण से ही की जा सकती है । यदि सूखी पत्ती, पानी के बुदबुदे और धूल के कण का पुनर्जन्म नहीं होता तो इस मानव का क्या होगा ।

**उर्मिला** : और सामुद्रिक ?

**सरस्वतीचन्द्र :** वह तो ज्योतिष से भी गया-बीता है। सामुद्रिक ! झुर्रियों के सदृश हाथ-पैर की कुछ इधर-उधर की टेढ़ी-सीधी रेखाएँ और उन पर से जीवन सम्बन्धी भविष्य।

**उर्मिला :** और रमल ?

**सरस्वतीचन्द्र :** शायद, रमल से बड़ा तो कोई पाखण्ड हो ही नहीं सकता। तीन पाँसे फेंके, उसमें कुछ अंक निकले और भविष्य-कथन कर दिया।

**उर्मिला :** तब साहित्य सम्मेलन की पुरुस्कार सम्बन्धी भविष्य-वाणी कैसे सत्य हो गयी ?

**सरस्वतीचन्द्र :** अटकलपच्चू एक बात कोई सही हो गयी होगी।

**उर्मिला :** पर, मैं तो अब एक बार उन ज्योतिषी जी महाराज के दर्शन करने और उनसे कुछ प्रश्न पूछने अवश्य जाऊँगी।

**सरस्वतीचन्द्र :** प्रश्न वे ही संतान के सम्बन्ध में ।

**उर्मिला :** तुम पुरुष स्त्रियों के हृदय की भावनाओं को क्या जानो ? **(कुछ रुककर)** पर देखो तुम्हें भी एक दिन उन्हें धन्यवाद देने जाना चाहिए और उस दिन जो तुम उनका अपमान कर आये थे उसका परिमार्जन करना चाहिए।

**सरस्वतीचन्द्र :** अच्छा, अच्छा। एक दिन हम दोनों ही चले चलेंगे।

**उर्मिला :** अच्छा, आज तो चलो, तुम्हारे पुरुस्कार प्राप्ति के हर्ष में सिनेमा देख आएँ।

**सरस्वतीचन्द्र :** हाँ, हाँ, अवश्य ।

[ **दोनों उठते हैं।** ]

**लघु यवनिका**

## चौथा दृश्य

स्थान : गाजियाबाद में मजूमदार के पिता के एक साधारण
से मकान में एक साधारण कमरा

समय : सन्ध्या

[ आधुनिक ढंग का साधारण से साधारण फर्नीचर। एक्स वाइ जेड मजूमदार घबड़ाया हुआ बैठा है। उसके चारों तरफ बहुत से अखबार फैले हुए हैं। कभी कोई अखबार उठाता है, कभी कोई। और बार-बार उन्हें उलट-पलटकर देख रहा है। नेपथ्य में बाइसिकिल की घण्टी बजती है और आवाज आती है। "एक्स वाई जेड मजूमदार, तार है।" मजूमदार दौड़कर बाहर जाता है और एक खुला हुआ तार पढ़ते हुए लौटकर अपने पलँग पर गिर-सा पड़ता है। कुछ देर पड़ा रहता है। फिर उठकर दोनों हाथों से सिर पकड़कर बैठ जाता है। कुछ देर चुपचाप बैठा रहता है। फिर उठकर बड़बड़ाने लगता है। ]

**मजूमदार :** शाला···शाला केता था फर्स्ट डिवीज़न फर्स्ट इन युनिवर्सिटी ! बोदमाश का बोच्चा। धोकाबाज। होम कोबी फेल नेई हुवा उसने कोहा फर्स्ट डिवीज़न फर्स्ट इन युनिवर्सिटी और होम फेल होगिया। जोगदीशचोन्दर बोस और आइन्स्टीन से बी बोडा साइन्टिस्ट ! बोदमास का बोच्चा ! धोकाबाज, धोकाबाज ! (कुछ रुककर) शाला का सारा भोविष्यबानी कार्यालोय को बोम से उड़ा देगा····

बोम से··· । **ओबी** बोम लेकर होम जाता हूँ । (**एक आलमारी खोलते हुए**) नेई···नेई । कोल···कोल सोबेरे की गाड़ी से जायेगा । (**पुनः सिर को दोनों हाथों पर रख बैठ जाता है ।**)

**लघु यवनिका**

## पाँचवाँ दृश्य

स्थान : नयी दिल्ली की कर्जन रोड पर तरलोकसिंह के बंगले का एक कमरा

समय : मध्याह्न

[ बड़ा-सा कमरा है। दीवालों पर सुन्दर रंग है, छत से बिजली के झाड़ और पंखे झूल रहे हैं, जमीन पर ऊनी कालीन। क़ालीन पर बेशकीमती फर्नीचर है। बीच में पलँग है, जिस पर गले तक चादर ओढ़े तरलोकसिंह लेटा है। उसके निकट उसकी पत्नी बैठी है। उसकी उम्र तरलोकसिंह से कुछ ही कम है। गेहुँए रंग की ऊँची-पूरी कुछ मोटी महिला है। शानदार गहने हैं। आँसू उमड़-उमड़कर उसकी आँखों में आते हैं। और उन्हें वह रूमाल से पोंछती जाती है। दाहिनी ओर तरलोकसिंह की सातों लड़कियाँ और चारों पतोहू हैं। कोई सोफा-कुर्सियों आदि पर बैठी हैं कोई खड़ी हैं। लड़कियों की अवस्था पैंतीस और बीस वर्ष के बीच में है। कुछ अन्य महिलाएँ भी हैं। सभी गौरवर्ण की ऊँची-पूरी हैं और सब सलवार पहने हुए हैं। सबके चेहरे चिंताग्रस्त, किसी-किसी के आँसू आ जाते हैं जिन्हें वह रूमाल से पोंछने लगती है। बायीं ओर दो एलोपैथी के डाक्टर, एक वैद्य, एक हकीम और एक होम्योपैथिक डाक्टर है। एलोपैथिक और होम्योपैथिक डाक्टर पश्चिमी ढंग के कपड़े पहने हैं। हकीम अँगरखाँ और ढीला पाजामा पहने है। सिर पर तुर्की टोपी

**लगाये है। वैद्य अँगरखा और धोती पहनें है, गले में दुपट्टा डाले है तथा सिर पर पगड़ी लगाये है। ये सब चिकित्सक अधेड़ अवस्था को पार कर गये हैं। कमरे में इधर-उधर तरलोकसिंह के चारों लड़के और सातों दामाद खड़े हैं, बैठे हैं और कुछ घूम भी रहे हैं। सब सिक्ख हैं, पश्चिमी ढंग के कपड़े पहने हैं। सिर पर साफा बाँधे हैं। अवस्था सब की ४० और २५ के बीच में। कुछ और भी नातेदार और मित्र कमरे में हैं। सब मिलकर एक खासी भीड़ इकट्ठी हो गयी है। कमरे की घड़ी में बारह बजने को थोड़ा ही समय बाकी है। घड़ी इस तरह लगी है कि तरलोकसिंह को समय बराबर दिख रहा है।]**

**तरलोकसिंह : (चिकित्सकों से)** देखिए, फिर देखिए मुझे, और बताइए कि अब क्या हाल है?

**[ एक एलोपैथिक डाक्टर स्टैथोस्कोप से दिल देखता है। दूसरा ब्लड प्रैशर लेता है। वैद्य एक हाथ की नब्ज़ देखता है, हक़ीम दूसरे हाथ की। होम्योपैथिक डाक्टर बड़े ध्यान से चेहरा देखता है। ]**

**तरलोकसिंह : (घड़ी की ओर देखकर)** बारह बजने में थोड़ी ही देर है। देखिए सच-सच बताइयेगा। मैं मरने से डरता नहीं हूँ। राजा पारीछत को एक हफ्ते पहले मालूम हुआ था कि उसे साँप डसेगा। राजा खटवांग को कुछ ही घण्टे पहले मालूम हुआ था कि वह मरने वाला है, और इन दोनों ने अपने मरने का ऐसा इन्तजाम किया कि मर क्या दोनों तर गये। मुझे तो उस नज़ूमी ने महीनों पहले बतला दिया। एक

दिन मरना सबको है। कोई जल्दी मरता है कोई देर से। मैं मरना नहीं चाहता था, बाल-बच्चों में रहकर और जीना चाहता था।

[ **कई महिलाएँ चिल्लाकर रोने लगती हैं। सबसे ज्यादा जोर से तरलोकसिंह की पत्नी।** ]

**तरलोकसिंह** : अरे यह तुम क्या करती हो ? मुझे आराम से मरने भी न दोगी !··· जैसा मैंने कहा है मरना सबको पड़ता है, कोई जल्दी मरता है कोई देर से। मेरा वक्त आ गया।

**ब्लड प्रैशर देखने वाला डाक्टर** : आप थोड़ा चुप रहें, मैं ज़रा ब्लड प्रैशर देख लूं।

[ **कुछ देर निःस्तब्धता। चिकित्सकों का काम समाप्त होने पर सब पलँग से कुछ हटते हैं।** ]

**तरलोकसिंह** : (**चिकित्सकों से**) कहिए, क्या हाल है ? सच-सच कहियेगा।

**दिल देखने वाला डाक्टर** : कोई खास बात तो नहीं मालूम होती, लेकिन····(**चुप हो जाता है।**)

**तरलोकसिंह** : हाँ, लेकिन क्या डाक्टर ? साफ-साफ कहिए। मैंने आपसे कहा न मैं मरने से डरता नहीं हूँ।

**दिल देखने वाला डाक्टर** : क्या कहूँ, शायद दिल कुछ कमज़ोर हो रहा है।

**तरलोकसिंह** : (**ब्लड प्रैशर देखने वाले डाक्टर से**) और ब्लड-प्रैशर डाक्टर ?

**ब्लड प्रैशर देखने वाला डाक्टर** : इस वक्त तो सच-सच कहना

ही होगा, सरदार साहब।

**तरलोकसिंह :** जरूर।

**ब्लड प्रैशर देखने वाला डाक्टर :** आपका ब्लड प्रैशर तो तेजी से घट रहा है।

**तरलोकसिंह : (वैद्य और हकीम से)** और नब्ज वैद्य जी, हकीम जी ?

**वैद्य :** नाड़ी वेगवती, चोष्णा !

**तरलोकसिंह :** याने ?

**वैद्य :** मैंने आपको चरक का महावाक्य बताया। जिसका अर्थ यह है कि नाड़ी शीघ्र और उष्णता से चल रही है।

**हकीम :** वैद्यराज जी ठीक फरमा रहे हैं।

**होम्योपैथिक डाक्टर :** चेहरा भी कुछ··· कुछ···

**तरलोकसिंह :** कुछ दिन पहले कोई मुझे तसल्ली देता था और कोई मजाक उड़ाता था। मैं शुरू से ही कहता था कि उस नजूमी की एक बात भी गलत होने वाली नहीं है। **(घड़ी को देखकर)** अफसोस यही है कि अभी तक एडवोकेट सब कागजात की रजिस्ट्री कराकर नहीं लौटे। मैं चाहता था कि मरने के वक्त जिसको जो दिया है उसका कागज अपने हाथ से बाँट देता।

[ **फिर स्त्रियों में से कई जोर से रो पड़ती हैं, तरलोकसिंह की पत्नी सबसे जोर से।** ]

**तरलोकसिंह :** तुम लोगों ने तो मेरा नाक में दम कर डाला। **(अपनी पत्नी से)** और तुम ऐसे मौके पर इतनी बेसमझ हो

जाओगी यह मैं सोच ही नहीं सकता था। तुम्हारा यह हाल होगा तो इन बच्चों की क्या हालत होगी ?

[ **एडवोकेट का हाथ में बहुत से रजिस्ट्री-शुदा कागजात लेकर प्रवेश। एडवोकेट भी एक सिक्ख है। अवस्था अधेड़ है, लिवास पश्चिमी।** ]

**तरलोकसिंह** : (**एडवोकेट को देखकर कुछ प्रसन्नता से**) अच्छा, आप आ गये। ठीक वक्त पहुँचे। सब बख्शीसनामों की रजिस्ट्री हो गयी ?

**एडवोकेट** : जी हाँ; सब डाकुमेन्ट्स रजिस्टर्ड-शुदा ही लेकर आया हूँ।

**तरलोकसिंह** : बख्शीसनामा करना ही ठीक हुआ, एडवोकेट साहब, वसीहतनामे में हमेशा झगड़े उठा करते हैं। और जो रुपया खैरात में दिया है उसका ट्रस्ट भी रजिस्ट्री हो गया न ?

**एडवोकेट** : जी हाँ; वह भी हो गया।

**तरलोकसिंह** : ट्रस्टियों में मेरा बड़ा लड़का, बड़ा दामाद और आप।

**एडवोकेट** : जी।

**तरलोकसिंह** : (**फिर घड़ी देखते हुए**) सभी रिश्तेदार आ गये हैं और कितनी दूर-दूर से आये हैं। मैं चाहता तो यह था हर एक बख्शीशनामा खुद देता लेकिन अब मुझे बहुत कम-जोरी मालूम हो रही है।

[ **महिलाओं में फिर कुछ जोर से रो पड़ती हैं। सबसे**

**अधिक तरलोकसिंह की पत्नी। ]**

**तरलोकसिंह :** इन औरतों में कभी समझ नहीं आयगी। (**एडवोकेट से**) एडवोकेट साहब, आप ही इन सबके बख्शीसनामे बाँट दीजिए।

[ **एडवोकेट हर व्यक्ति को उसका नाम देख-देखकर उसका बख्शीसनामा देता है।** ]

**तरलोकसिंह :** (**बख्शीसनामों के बँटने के पश्चात् एडवोकेट से**) और ट्रस्टडीज आपने रख लिया न ?

**एडवोकेट :** जी हाँ।

**तरलोकसिंह :** (**चिकित्सकों से**) फिर देखिए।

[ **पहले के सदृश फिर जाँच होती है।** ]

**तरलोकसिंह :** (**जाँच होने के बाद चिकित्सकों से**) कहिए क्या हाल है ?

**दिल देखने वाला डाक्टर :** अब, दिल बहुत कमजोर हो गया है।

**ब्लड प्रेशर देखने वाला डाक्टर :** ब्लड प्रैशर भी और घटा है।

**वैद्य :** नाड़ी अब टूट-टूट कर चलती है।

**हकीम :** हाँ, मुश्किल से मिलती है।

**होम्योपैथिक डाक्टर :** चेहरा भी बिगड़ ही रहा है।

[ **महिलाएँ फिर जोर-जोर से रो पड़ती हैं। तरलोकसिंह की पत्नी सबसे अधिक चीखकर।** ]

**तरलोकसिंह :** इन लोगों को तो यहाँ से हटा देना ही ठीक होगा। (**घड़ी की ओर देखकर**) बारह बजने में अब थोड़ी ही देर है। सुनें, सब लोग सुनें। राजा रघु और राजा हरष वकत-वकत

पर सब कुछ खैरात में दे देते थे। मेरे पास भी जो कुछ था मैंने सब बाँट दिया। एक पाई का भी बोझ अब मेरे ऊपर नहीं है। (फिर घड़ी की ओर देखकर) ओह! बारह··· बारह सिर्फ एक सैकिंड··· सिर्फ एक सैकिंड, एक सैकिंड··· सत श्री अकाल।

[तरलोकसिंह अपना सिर ढाँक लेता है। औरतें चिल्ला-चिल्ला कर छाती पीटती हुई साँपा करती हैं। पुरुष सब एक ओर खड़े हो जाते हैं। कुछ देर यही होता रहता है। हार्ट देखने वाला डाक्टर पलँग के नजदीक आ चादर के भीतर स्टैथेटैस्कोप डाल देखता है। ]

**हार्ट देखने वाला डाक्टर :** (जोर से) अरे, अरे तुम लोग ये सब क्या कर रहे हो? सरदार साहब तो जिन्दा हैं।

[ रोना-पीटना एक दम बन्द हो जाता है। ]

**तरलोकसिंह :** (चादर को चेहरे पर से हटाते हुए) मैं अभी भी जिन्दा हूँ। (घड़ी देखकर) बारह बजकर पाँच मिनट हो गये। मैं मरा नहीं?

**यवनिका**

# तीसरा अंक

स्थान : दिल्ली के चाँदनी चौक में एक तिमंजले मकान का सामना

समय : प्रातःकाल

[ **लक्ष्मीदास का अपने मुनीम के साथ प्रवेश।** ]

**लक्ष्मीदास : (मकान को खूब गौर से देख मुनीम से)** योई मकान छै, मुनीम जी, पण जोसी को साइन बोर्ड कठे गयो ?

[ **उमारमणसिंह और रमारमणसिंह का लठैतों के साथ प्रवेश** ]

**उमारमणसिंह : (मकान को अच्छी तरह देखकर रमारमणसिंह से)** रमा, मकान तो वही है न ?

**रमारमणसिंह : (मकान को ध्यान से देखते हुए)** बेशक यही है।

**लक्ष्मीदास : (उमारमणसिंह और रमारमणसिंह से)** बो जोसी अठेई बैठतो थो न !

**उमारमणसिंह :** अच्छा, आप भी उसी ज्योतिषी के लिए आये हैं ?

**लक्ष्मीदास :** हाँ, जी। बड़ो खोटो आदमी निकल्यो।

[ **तरलोकसिंह का प्रवेश। उसके साथ कई हथियारबंद आदमी हैं। एक व्यक्ति मिट्टी के तेल का कनस्टर सिर पर उठाये है और एक व्यक्ति अपने सिर पर पुराने चिथड़ों से भरा हुआ टोकरा रखे है।** ]

**तरलोकसिंह : (मकान को देखते हुए उमारमणसिंह और लक्ष्मीदास से)** इस मकान पर एक नजूमी का साइन बोर्ड लगा था न ?

**उमारमणसिंह** : अवश्य था।

**लक्ष्मीदास** : जरूर था।

**तरलोकसिंह** : तो कहाँ गया ?

**उमारमणसिंह** : इसी पर तो हम लोग आश्चर्य कर रहे थे।

[ **सरस्वतीचन्द्र और उर्मिला का प्रवेश। इन सबको देखकर ठिठककर खड़े रह जाते हैं।** ]

**तरलोकसिंह** : अच्छा ! आप लोग भी उसी के पास आये हैं।

**उमारमणसिंह** : जी हाँ। उस धूर्त्त ने ऐसा धोका दिया कि क्या बताऊँ ! (**लठैतों की ओर संकेत कर**) अवध के इन लठैतों को उसी को ठोकने लाया था। आप भी उसी के लिए आये हैं ?

**तरलोकसिंह** : मेरी तो उसने जान ही ले ली थी और भिखारी तो मुझे बना ही दिया ? उसकी सारी भिरगू संहिता जनमपतरी वगैरह को जलाने के लिए ये मिट्टी का तेल और चिथड़े लाया था।

**लक्ष्मीदास** : अरे, म्हारी दूकान को तो बीने टाट हो उलटवा दियो।

**तरलोकसिंह** : (**मकान के दरवाजे के पास जा उसे भड़भड़ाते हुए**) अन्दर से बंद है। बदजात साइन बोर्ड हटा दरवाजे को अन्दर से बंद कर ऊपर बैठा है। (**जोर से**) नजूमी ! ओ नजूमी का बच्चा ! इस शैतान नजूमी ने इतना धोखा दिया है कि मैं कुछ कह नहीं सकता।

**रमारमणसिंह** : मेरी तो शादी ही एक पिशाचनी से करवा रहा था।

**लक्ष्मीदास** : कुछ पूछो नेई।

**तरलोकसिंह** : पर, बच नहीं सकेगा। (**उमारमणसिंह से**) आप अपने इन लठैतों को हुक्म तो दीजिए कि लट्ठों से इस दरवाजे को तोड़ डालें।

**उमारमणसिंह** : बहुत अच्छा। (**लठैतों से**) तोड़ो इस दरवाजे को।

**तरलोकसिंह** : हाँ, सोंटा दा काम बड़ा ओखा। लगे इक्क दो तीन !

[ **लठैत दरवाजे पर लाठियों का प्रहार आरम्भ करते हैं। लाठियों का शब्द होते ही वहाँ पर एक भीड़ जमा होने लगती है। मजूमदार का प्रवेश। वह कुछ देर तक यह सब देखता रहता है।** ]

**तरलोकसिंह** : इस बदजात नजूमी से आज बदला न लिया तो कुछ न किया। ( **कुछ रुककर लठैतों की ओर देखते हुए** ) पर दरवाजा बड़ा मजबूत है।

**मजूमदार** : होम भी उस ज्योतिषी द्वारा धोका दिया गोया हूँ। आप लोग जोरा होट जाइए। इन डोंडा वाला को रोकिए। होम अबी दोरवाजा खोल देता है।

**उमारमणसिंह** : अच्छा ! (**लठैतों से जोर से**) जरा हटो तो।

[ **लठैत हटते हैं और मजूमदार दरवाजे पर बम फेंकता है। दरवाजा चूर-चूर होता है। दरवाजे के भीतर से जल्दी से स्लीपिंग सूट पहने हुए एक युवक निकलता है।** ]

**युवक** : (**चिल्लाकर**) यह सब क्या है, मेरे मकान के सामने !

**तरलोकसिंह** : (**आगे बढ़कर युवक से हाथ मिलाते हुए**) अच्छा, मुंशी प्रेमनाथ साहब ! यह आपका मकान है ?

**प्रेमनाथ** : अच्छा आप सरदार तरलोकसिंह जी !

**तरलोकसिंह** : जी हाँ ! लेकिन मुंशी, यहाँ तो एक नजूमी रहता था न ?

**प्रेमनाथ** : हाँ, उसने कुछ दिन के लिए मुझसे मकान किराये पर लिया था।

**तरलोकसिंह** : अब वह कहाँ है ?

**प्रेमनाथ** : कुछ दिन हुए यहाँ से चला गया।

**उमारमणसिंह** : कहाँ ?

**लक्ष्मीदास** : कठे ?

**मजूमदार** : कहाँ पोलोइन कोर गिया ?

**प्रेमनाथ** : मैं नहीं जानता।

**सरस्वतीचन्द्र** : (**अट्टहास कर**) भविष्यवाणी कार्यालय का स्थान अखिल भू-मण्डल है।

**प्रेमनाथ** : लेकिन, आपने मेरे मकान का दरवाजा क्यों तोड़ा है ?

[**बम की आवाज के कारण एक सब-इन्सपेक्टर पुलिस के कई जवानों के साथ पहुँचता है। पुलिस को देखते ही भीड़ एकदम तितर-बितर होने लगती है।**]

**सब-इन्सपेक्टर** : यहाँ बम चला है ? यह सब क्या है ? कैसी बारदात ?

**यवनिका**

**समाप्त**

# जाति-उत्थान

## मुख्य पात्र, स्थान

**रग्घूमल** : पीछे से रघुराजसिंह—एक कायस्थ

**सत्तूपरसाद** : पीछे से सीताशरण—एक दूसर

**मुलुग्रा** : पीछे से मल्लिनाथ—एक नाई

## स्थान

एक कस्बा

एक नगर

## उपक्रम

स्थान : एक कस्बे के एक कच्चे मकान का एक कोठा

समय : प्रातःकाल

[कोठे की दीवालें देखने से मालूम होता है कि कच्ची दीवालें होने पर भी उन पर मिट्टी चढ़ाकर, उन्हें सफेद कलई से पोत, स्वच्छ बनाने का प्रयत्न किया गया है। पीछे की दीवाल में एक खिड़की है, जिसमें लकड़ी का जंगला लगा है। दाहिनी तरफ की दीवाल में एक दरवाजा है। खिड़की और दरवाजे की चौखट, किवाड़ इत्यादि देहाती लकड़ी के हैं, पर उन पर तेल-पानी कर उन्हें भी स्वच्छ रखा गया है। छत में बोरे बँधे हैं, पर वे ठीक ढंग से, एक-से करके बाँधे गये हैं। जमीन पर साफ-सुथरी जाजम है; उस पर एक छोटी-सी गद्दी। गद्दी पर तीन मसनद हैं और मसनदों से टिके हुए रग्घूमल, सत्तूपरसाद और मुलुआ बैठे हुए हैं। तीनों युवक हैं, अवस्था लगभग २२-२३ वर्षों के बीच में। रग्घूमल साँवले रङ्ग का ऊँचा-पूरा मनुष्य है; सत्तू-परसाद गेहुँए वर्ण का ठिगना और कुछ मोटा आदमी; मुलुआ काले रंग का साधारण उँचाई का दुबला-पतला व्यक्ति। तीनों के सँवारने योग्य लम्बे बाल और छोटी-छोटी मूँछें हैं। रग्घूमल और सत्तूपरसाद कोट और पाजामा पहने तथा फेल्ट कैप लगाये हैं, मुलुआ कोट और धोती पहने तथा दुपलिया टोपी लगाये है।]

**रघ्घूमल** : भाई, हरेक नौजवान के सामने पढ़ना-लिखना खत्म करने के बाद यही सवाल उठता है।

**सत्तूपरसाद** : हम तीनों के सामने तो विद्यार्थी अवस्था में भी यह प्रश्न उठता रहा है।

**मुलुआ** : और हम लोगों ने इस पर विचार भी कम नहीं किया है।

**रघ्घूमल** : तो उसी विचार पर हम लोग कायम रहना चाहते हैं?

**सत्तूपरसाद** : मैं तो समझता हूँ कि उस विचार को कार्य रूप में परिणत करने से अच्छा काम हम अपने जीवन में कर ही नहीं सकते।

**मुलुआ** : हाँ, अपने जाति-उत्थान से अधिक संसार में दूसरा महान् और पवित्र कार्य हो ही कौनसा सकता है?

**सत्तूपरसाद** : फिर, रघ्घूमल, हम दो ने हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी पढ़ी है, आपने इन तीन भाषाओं के साथ उर्दू और फारसी भी। इस प्रकार के पढ़े-लिखे युवकों से ही तो देश और जाति आशा करते हैं।

**मुलुआ** : और उस आशा को पूर्ण करने के लिए हमारे हृदय में कार्य करने की भावनाएँ भी हैं।

**रघ्घूमल** : **(विचारते हुए)** मैं यही सोच रहा था कि भावनाएँ सच्ची और गहराई लिये हुए हैं न, सतह पर ही तो नहीं; नौजवानी का जोश भर तो नहीं है, क्योंकि उन भावनाओं के मुताबिक काम करने के लिए अपनी जिन्दगी निसार कर देनी होगी, न जाने क्या-क्या कुर्बान करना पड़ेगा।

**सत्तपरसाद** : हमारी भावनाओं की गहराई का पता तो इसी से

लग जाता है कि बार-बार वे ही भावनाएँ हमारे हृदयों में उठती हैं।

**मुलुश्रा** : श्रौर जिन्दगी यदि इस काम के लिए निसार नहीं की जा सकती, कुर्वानियाँ यदि जाति-उत्थान के लिए नहीं की जा सकतीं, तो देश की उन्नति का नाम नहीं लेना चाहिए। रग्घूमलजी, यह देश जातियों का ही तो समूह है। फिर इतनी जातियाँ हैं, खान-पान, रीति-रिवाज में इतने श्रन्तर हैं कि सब को मिला कर उन्नति करने का संघठन नहीं किया जा सकता।

**सत्तूपरसाद** : हाँ, इस देश की उन्नति का मार्ग ही यह है कि प्रत्येक जाति श्रपनी-श्रपनी उन्नति करे। उस जाति के पढ़े-लिखे लोग उस उन्नति की दिशा निश्चित करें श्रौर उस दिशा में बढ़ने के लिए मार्ग।

**मुलुश्रा** : फिर, रग्घूमलजी, यहाँ तो हम तीन जातियों के—कायस्थ, ढूसर श्रौर नाई—तीन जातियों के तीन पढ़े-लिखे युवक, जातिभक्त युवक, देशभक्त युवक इकट्ठे बैठ कर श्रपनी-श्रपनी जाति के उत्थान की बात सोच रहे हैं, श्रपने-श्रपने जीवन इस महान श्रौर पवित्र कार्य के लिए उत्सर्ग करने का स्वप्न देख रहे हैं।

**रग्घूमल** : **(विचारपूर्वक)** हाँ, वह स्वप्न कहीं ख्वाब ही न रह जाय, मैं यह सोच रहा हूँ।

**सत्तूपरसाद** : यह कदापि नहीं हो सकता। हममें से प्रत्येक श्रपनी-श्रपनी जाति की सर्वांगपूर्ण उन्नति की भावना रखता है।

फिर एक पर एक ग्यारह, और एक, एक सौ ग्यारह होते हैं।

**मुलुआ :** **(मुस्कराते हुए)** हाँ, हाँ, यदि हम तीन मिलकर कुछ नहीं कर सकते तो फिर संसार में कोई कुछ नहीं कर सकता।

**रघ्घूमल :** **(विचारपूर्वक अत्यन्त गम्भीरता से)** अच्छी बात है तो तय हुआ कि हम अपनी-अपनी जिन्दगी अपनी-अपनी जाति की तरक्की के लिए निसार कर देंगे और इस काम में जितनी भी कुर्बानियाँ करनी होंगी उन्हें बखुशी करेंगे।

**सत्तूपरसाद :** प्रतिज्ञा का संकल्प कीजिए, रघ्घूमलजी।

**मुलुआ :** **(मुस्कराकर)** हाँ, हाँ, यह ठीक है।

**रघ्घूमल :** **(मुस्कराकर)** आप संकल्प बोलिए, सत्तूपरसादजी, मुलुआजी और मैं उसे दोहरायेंगे।

**सत्तूपरसाद :** अच्छी बात है। जल ले आता हूँ।

**[सत्तूपरसाद दरवाजे के बाहर जाता और एक देहाती पीतल के लोटे में जल्दी से जल लेकर आता है। तीनों अपने-अपने दाहिने हाथों में जल लेते हैं।]**

**सत्तूपरसाद :** कहिए—ॐ विष्णु: विष्णु: विष्णु:

**रघ्घूमल**
**मुलुआ** } **(एक साथ)** ॐ विष्णु: विष्णु: विष्णु:

**सत्तूपरसाद :** ॐ अद्यैतस्य ब्रह्मणोहि

**रघ्घूमल**
**मुलुआ** } ॐ अद्यैतस्य ब्रह्मणोहि

**सत्तूपरसाद :** द्वितीय प्रहरार्द्धे

**रघ्घूमल**
**मुलुआ** } द्वितीय प्रहरार्द्धे

**सत्तूपरसाद** : श्रीश्वेतवाराहकल्पे

**रघ्घूमल**
**मुलुआ** } श्रीश्वेतवाराहकल्पे

**सत्तूपरसाद** : जम्वूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्ते

**रघ्घूमल**
**मुलुआ** } जम्वूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्ते

**सत्तूपरसाद** : कलियुगे कलिप्रथमचरणे

**रघ्घूमल**
**मुलुआ** } कलियुगे कलिप्रथमचरणे

**सत्तूपरसाद** : पुण्य क्षेत्रे

**रघ्घूमल**
**मुलुआ** } पुण्य क्षेत्रे

**सत्तूपरसाद** : विजयनामसंवत्सरे

**रघ्घूमल**
**मुलुआ** } विजयनामसंवत्सरे

**सत्तूपरसाद** : श्रीसूर्यउत्तरायणे

**रघ्घूमल**
**मुलुआ** } श्रीसूर्यउत्तरायणे

**सत्तूपरसाद** : वसन्तऋतौ

**रघ्घूमल**
**मुलुआ** } वसन्तऋतौ

**सत्तूपरसाद** : चैत्रमासेशुभेशुक्लपक्षे

**रघ्घूमल**
**मुलुआ** } चैत्रमासेशुभेशुक्लपक्षे

**सत्तूपरसाद** : एकादश्याँतिथौ गुरुवासरे

**रघ्घूमल**
**मुलुआ** } एकादश्याँतिथौ गुरुवासरे

**सत्तूपरसाद** : अमुक गोत्रोत्पन्नो

**मुलुआ** : अमुक गोत्र ?

**रघ्घूमल** : हाँ, भाई, गोत्र तो हमें अभी अपना-अपना बनाना होगा न ?

**रघ्घूमल**
**मुलुआ** } अमुकगोत्रोत्पन्नो

**सत्तूपरसाद** : अपना-अपना नाम लीजिए, सत्तूपरसादो····

**रघ्घूमल** : भाई, नाम इसी वक्त बदल लो, हमारे नाम अच्छे नहीं हैं।

**मुलुआ** : हाँ यह ठीक है।

**सत्तूपरसाद** : ऐसा ? (**कुछ सोचकर**) अच्छी बात है, मैं अपना नाम सीताशरण रखता हूँ।

**रघ्घूमल** : और मैं····(**विचारकर**) मैं रघुराजसिंह।

**मुलुआ** : सुन्दर। (**विचार करते हुए**) मैं··मैं··मैं मल्लिनाथ रख लेता हूँ।

**सत्तूपरसाद** : वाह ! वाह ! अच्छी खोज की प्रसिद्ध टीकाकार (**कुछ रुककर**) अपना-अपना नाम लीजिये सीताशरणो हं

**रघ्घूमल** : रघुराजसिंहो हं

**मुलुआ** : मल्लिनाथो हं

**सीताशरण** : अब वर्ण।

**रघुराजसिंह** : यह बाद में तय करेंगे।

**मल्लिनाथ** : हाँ, यह ठीक है।

**सीताशरण** : स्वजाति उत्थान कर्यार्थि

**रघुराजसिंह**
**मल्लिनाथ** } स्वजाति उत्थान कर्यार्थि

**सीताशरण** : स्वजीवनसमर्पणं

**रघुराजसिंह**
**मल्लिनाथ** } स्वजीवनसमर्पणं

**सीताशरण** : करिष्ये।

**रघुराजसिंह**
**मल्लिनाथ** } करिष्ये।

[**तीनों जल छोड़ते हैं।**]

**मल्लिनाथ** : देखो तो, कैसा तो संवत्सर मिला—विजय, कैसा सूर्य मिला—उत्तरायण, कैसी ऋतु मिली—वसन्त, कैसी तिथि मिली—एकादशी, कैसा वार मिला—गुरु।

**सीताशरण** : दैवी-प्रेरणा; देखा, दैवी-प्रेरणा इसे कहते हैं। भगवान हमारे साथ हैं।

**रघुराजसिंह** : अच्छे कामों में भगवान हमेशा मददगार रहते हैं। (**कुछ रुककर**) अच्छा, देखो, अब अपनी-अपनी जाति को कौनसी जाति बनाना है, यह तय करो।

**सीताशरण** : याने ?

**रघुराजसिंह** : याने यह कि कायस्थ समझे जाते हैं शूद्र, दूसर समझे जाते हैं नीचे दरजे के बनिये और नाई को तो छूकर कई लोग नहाते हैं। अगर कायस्थ शूद्र बने रहे, दूसर बनिये और नाई अछूत, तो इन जातियों की तरक्की हो चुकी।

**सीताशरण** : हाँ, यह तो ठीक है।

**मल्लिनाथ** : बिलकुल।

**रघुराजसिंह** : **(विचार करते हुए)** भाई, मैं तो कायस्थों को क्षत्रिय बनाऊँगा। क्षत्रियों की ही इस वक्त मुल्क को सबसे ज्यादा जरूरत है।

**सीताशरण** : और सच्चे ब्राह्मणों की उससे अधिक। जिस देश का सच्चा ज्ञान लुप्त हो जाता है, उसका उत्थान नहीं हो सकता। मैं दूसरों को ब्राह्मण बनाऊँगा।

**मल्लिनाथ** : मैं भी नाइयों को ब्राह्मण।

**रघुराजसिंह** : एक दम इतनी बड़ी छलाँग।

**मल्लिनाथ** : छलाँग ही मारना है तो फिर छोटी क्यों मारी जाय।

**सीताशरण** : और मेरी तो छलाँग उतनी ही है जितनी आपकी। आपने दो सीढ़ियाँ चढ़ीं—शूद्र से क्षत्रिय, मैंने दो सीढ़ियाँ चढ़ीं—वैश्य से ब्राह्मण।

[**तीनों कुछ देर चुप रहते हैं।**]

**रघुराजसिंह** : देखो, सिर्फ कह देने से कि कायस्थ क्षत्रिय हैं, दूसर और नाई ब्राह्मण, काम न चलेगा, इसके लिये वेदों के, स्मृतियों के, शास्त्रों के, पुराणों के सबूत देने होंगे, तब लोग मानेंगे।

**सीताशरण** : हिन्दुओं के लिए इसमें कोई कठिनाई नहीं हो सकती—इतने वेद, इतनी स्मृतियाँ, इतने शास्त्र, इतने पुराण हैं, और फिर श्लोक बना बनाकर उनमें इतना जोड़ा जा सकता है, कि कभी भी बात का प्रमाण मिल सकता है।

**मल्लिनाथ** : बहुत सरलता से, बहुत सरलता से।

**रघुराजसिंह** : फिर हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी भी हमें उन्हीं जातियों के मानिन्द बनानी होंगी, जिन जातियों के हम बन रहे हैं।

**सीताशरण** : अवश्य।

**मल्लिनाथ** : सर्वथा।

**रघुराजसिंह** : अपने-अपने गोत्र बनाने होंगे। अपनी-अपनी जाति की जाति सभाएँ कायम करनी होगी। उन सभाओं के अखबार निकालने होंगे। तकरीरें करनी होंगी। शायरी लिखना होगी। भाई, बहुत···बहुत काम है।

**सीताशरण** : सब हो जायगा।

**मल्लिनाथ** : हम लोग मिलते रहें, किस प्रकार काम बढ़ रहा है, इसकी आलोचना करते रहें, आगे का कार्यक्रम निश्चित करते रहें, आपकी सम्मति हमारी पथ-प्रदर्शक रहे, बस हो जायगा।

[**कुछ देर फिर तीनों चुप रहते हैं।**]

**रघुराजसिंह** : अच्छा तो फिर अब आज तो···

[**तीनों खड़े होते हैं।**]

**यवनिका**

## मुख्य दृश्य

स्थान : एक नगर के मकान में एक कमरा

समय : मध्याह्न

[कमरे की दीवालें कलई से पुती हुई हैं। दीवालों में कई दरवाजे और खिड़कियाँ हैं, जिनके किवाड़ों में शीशे लगे हैं। छत से कई बिजली की बत्तियाँ और पंखे झूल रहे हैं। जमीन पर कालीन बिछा है, जिस पर बेशकीमती फरनीचर है। कुर्सियों पर रघुराजसिंह, सीताशरण और मल्लिनाथ बैठे हुए हैं। तीनों की अवस्था देखने से जान पड़ता है कि उपक्रम की घटना को १०, १२ वर्ष बीत चुके हैं। तीनों की वेश-भूषा में बहुत परिवर्तन हो गया है। रघुराजसिंह अब बड़ा-सा साफा बाँधे हुए है। कोट की जगह शेरवानी है और सादे पाजामा की जगह चूड़ीदार पाजामा। शेरवानी में छाती पर बाँयीं ओर एक बड़ा लोहे का बैज लगा हुआ है, जिसमें भैंसे की मूर्ति बनी है। कमर में कमर-पट्टा है और उसमें तलवार के सदृश लम्बी एक कलम लटक रही है। सीताशरण का सिर मुड़ा हुआ है, चोटी भी नहीं है और सिर पर कोई वस्त्र भी नहीं। शरीर पर केवल दुपट्टा और धोती है। वक्षस्थल पर मोटा यज्ञोपवीत दिखायी देता है। मल्लिनाथ का सिर भी खुला है। उसके सिर पर गोखुर के सदृश चौड़ी शिखा है। शरीर के ऊपर का भाग नंगा है और नीचे के भाग में धोती। यज्ञोपवीत वह भी धारण किये हुए हैं, पर यज्ञोपवीत

**में एक बड़ा ग्रस्तुरा बँधा है। रघुराजसिंह के ललाट पर रामनंदी तिलक, सीताशरण के त्रिपुण्ड ग्रौर मल्लिनाथ के सिन्दुर का बिन्दु लगा हुग्रा है। ]**

**रघुराजसिंह** : हाँ, उस संकल्प को एक युग, बारह साल का पूरा एक युग खत्म हो गया। ग्राज चैत के उजले पेखवाड़े की एकादशी है। ग्राज ही के दिन, बारह साल पहले, हमने ग्रपनी-ग्रपनी जाति की तरक्की के लिए संकल्प किये थे।

**सीताशरण** : ग्रौर गत बारह वर्षों में क्या हुग्रा, इसकी ग्रालोचना यद्यपि हम समय-समय पर कर ग्रागे के कार्य का कार्यक्रम तैयार करते रहे हैं तथापि युग-समाप्ति पर हमें ग्रपनी समस्त कार्यवाही का सिंहावलोकन कर लेना चाहिए।

**मल्लिनाथ** : ग्रवश्य, जिससे ग्रागे का कार्यक्रम ग्रौर भी व्यवस्थित हो सके।

**सीताशरण** : (**रघुराजसिंह से**) ग्राप ही ग्रारम्भ करें, सिन्हाँ साहब।

**रघुराजसिंह** : मैं ही शुरू करूँ ? (**कुछ रुककर**) ग्रच्छी बात है। पण्डितो ! कायस्थ जाति ने इस एक युग में ग्रजहद तरक्की की है। वेदों, स्मृतियों, शास्त्रों ग्रौर पुराणों से यह तय पा गया कि कायस्थ शूद्र न हो कर क्षत्रिय हैं। कायस्थों की पैदायश यमपुरी के बादशाह चित्रगुप्त से हुई है। चित्रगुप्त यमपुरी के तेरहवें बादशाह थे। शूद्र तो ब्रह्मा के पैरों से पैदा हुए थे, लेकिन शास्त्र कहते हैं चित्रगुप्त ब्रह्मा के तमाम बदन से। दुनियाँ की सबसे पुरानी किताब ऋग्वेद में जैसे

अग्नि, वायु, इन्द्र, वरुण वगैरह के लिए देव सूक्त हैं, उसी तरह चित्रगुप्त के लिए ।

ऋग्वेद कहता है—(**हाथ हिलाकर गाते हुए**)

**'सचित्र चित्रं चितयन्तमस्मैं चित्र क्षत्रं**
**चित्र तमंबयोधाम् चन्द्र रविं पुरुषौरं**
**बृहह्म चन्द्रचन्द्राभिर्गृणते युवस्व'**

इस पर आश्वालायन ने श्रौत सूत्र में कहा है—

**(फिर हाथ हिलाकर गाते हुए)**

**'सचित्र चित्रं चितयन्तमस्मे अग्निरीशेंवृहतः क्षत्रियस्य'**

यजुर्वेद शतपथ ब्राह्मण में लिखा है—(**फिर हाथ हिला कर गाते हुए**)

**'यान्यैतान देवत्रा क्षत्राणीन्द्रोंवरुणः**
**सोमोरुद्रः पर्जन्यो यमः,'**

वगैरह वगैरह

**सीताशरण** : वाह ! वाह ! वाह ! वाह ! एक नहीं, दो-दो वेदों के प्रमाण हैं ।

**मल्लिनाथ** : अकाट् प्रमाण ! अकाट् प्रमाण !

**रघुराजसिंह** : सिर्फ वेदों में नहीं, वेदों में, ब्राह्मण ग्रन्थों में फिर स्मृतियों में उसके बाद पुराणों में सिलसिले वार सबूत हैं कि चित्रगुप्त ब्रह्मा के तमाम बदन से पैदा हुए। यमपुरी के वे तेरहवें और आखिरी बादशाह थे। वे क्षत्रिय थे और हमारी जाति के वे सबसे पहले बुजुर्ग। एक शायर ने इस तमाम किस्से पर बड़ी अच्छी शायरी की है। हमारे बुजुर्ग बादशाह

चित्रगुप्त के मुताल्लिक वह कहता है—(**गाता है।**)

**'श्यामल अंग पितांबर शोभित**
**भाल विशाल त्रिपुण्डहु भ्राजै।**
**दीर्घ भुजासुठि लोचन आनन**
**नासिका चारु महाछवि छाजै॥**
**कानन भूषण लेखनि पट्टिका**
**हाथ खरी मसि भाजन साजै।**
**रूप विलोकि विरंच थके**
**पद पावन सुन्दर पद्म विराजै॥'**

**सीताशरण :** वाह ! वाह ! वाह ! वाह ! सुन्दर सवैया है।

**मल्लिनाथ :** कितनी सुन्दर भाषा और कितने सुन्दर भाव हैं। हाँ, ब्रजभाषा का अब प्रचार कम हो चला है, इसलिए इसकी टीका करनी होगी।

**सीताशरण :** (**मुस्कराकर**) आपका नाम ही मल्लिनाथ है।

**रघुराजसिंह :** ऐसे फर्ज़न्द को पाकर ब्राह्माजी बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा तुम मेरी काया में पोशीदा रहे हो इसलिए तुम्हारा नाम होगा—चित्रगुप्त। और फिर तुम मेरी काया से ही पैदा हुए हो इसलिए तुम्हारी जाति होगी—कायस्थ। इस दुनिया में कुछ कर सको इसके लिए तुम कोट नगर में जाकर, जिसे आजकल उज्जैन कहते हैं, चण्ड-मुण्ड नाशिनी चण्डिका देवी का नमाज पढ़ो। वालिद ब्रह्मा का हुक्म पाकर चित्रगुप्त कोट नगर गये और वहाँ उन्होंने बारह हजार साल तक, सुना बारह हजार साल···

**सीताशरण :** थोड़ी-सी तपस्या से उन्हें इतनी बड़ी-चढ़ी शक्ति थोड़े ही मिल सकती थी।

**मल्लिनाथ :** कदापि नहीं, कदापि नहीं।

**रघुराजसिंह :** ···बारह हजार साल तक तपस्या की और चण्डिका देवी का नमाज पढ़ा। देवी खुश हो गयी। शेर पर बैठकर पैदा हुई, शेर पर····

**सीताशरण :** हाँ, हाँ, शक्ति देने के लिए शक्तिशाली वाहन पर बैठकर तो प्रकट होती ही।

**मल्लिनाथ :** अवश्य, अवश्य।

**रघुराजसिंह :** देवी बोली मैं तुमसे बहुत खुश हो गयी हूँ। **(गाकर)**

**'सन्तति सम्पति आयु बहु पर उपकारहि लीन।**
**हुइ हौ भागी सुयश के लेखकि कला प्रवीन॥'**

देवी की खुशी में अपनी भी खुशी शामिल कर देने के लिए फिर भी वहाँ ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी पैदा हुए। शायर कहता है—**(गाकर)**

**'विधि हरि हर हर्षित भये सुनि दुर्गा के बैन।**
**तीनहुँ लागे मुदित मन चित्रगुप्त वर दैन॥'**

ब्रह्मा बोले—**(गाकर)**

**'धर्मराज ढिग तुम रहहु करहु सहाय सुजान।**
**बारह यम के बीच महँ तुम हो मुख्य प्रधान॥'**

विष्णु बोले—**(गाकर)**

**'आहुति देवन संग नित पैहो अति हरषाय।**
**कर्म शुभाशुभ जीव के सदा लिखहु बिलगाय॥'**

महेश बोले—(**गाकर**)

**'जगत पूज्य गुण आगरे अजर अमर गुण खान ।**
**तुम सेवत पै हैं सकल सुत वित यश कल्याण ।।'**

**सीताशरण** : धन्य है ! धन्य है !

**मल्लिनाथ** : चित्रगुप्त महाराज की जय !

**रघुराजसिंह** : अब चित्रगुप्त ने यमपुरी आकर अपनी बादशाहत सँभाली । लेकिन शादी की भी जरूरत थी ।

**सीताशरण** : अवश्य । बिना विवाह के कभी धर्म पालन हो सकता है ?

**मल्लिनाथ** : कदापि नहीं, कदापि नहीं ।

**रघुराजसिंह** : विवस्वान मनु के दो शाहजादे हुए—श्राद्धदेव और धर्मशर्मा । श्राद्धदेव के सात शाहजादे और एक शाहजादी हुई, लेकिन धर्मशर्मा के सिर्फ एक शाहजादी ही ! श्राद्धदेव की शाहजादी का नाम था—नंदिनी और धर्मशर्मा की शाहजादी के दो नाम थे—ऐरावती और शुभावती । महादेव के हुक्म से इन दोनों, शाहजादियों की शादी बादशाह चित्रगुप्त से हुई । बादशाह चित्रगुप्त के आठ फर्ज़न्द बेगम शुभावती और चार बेगम नंदिनी से हुए । शायर कहता है—( **गाकर** )

**'भये सकल सुत आनँद राशी ।**
**जनु रवि द्वादश कला प्रकाशी ।।**
**चित्रगुप्त अति आनँद पाये ।**
**घर घर मंगल बजत बधाये ।।'**

**सीताशरण** : बधाई है ! बधाई है !

**मल्लिनाथ** : बधाई है ! बधाई है !

**रघुराजसिंह** : इन बारहों फर्ज़न्दों की शादियाँ बादशाह चित्रगुप्त ने बारह नाग कन्याओं से कीं। अपनी-अपनी बेगमों के साथ चित्रगुप्त महाराज के ये बारह फर्ज़न्द हिन्दुस्तान की अलग-अलग जगहों में रहने के लिए आये और सबने अपने इष्ट के नमाज के साथ अपने-अपने फर्ज़ों को अदा करना शुरू किया। शायर कहता है। —(**गाकर**)

**'माथुर, गौड़, कर्ण भटनागर ।**
**बालमीक, अम्बष्ठ उजागर ॥**
**सकसेना, अष्टानहिं मानो ।**
**शुभावती के सुत ये जानो ॥**
**निगम, सूरध्वज जग जाने ।**
**श्रीवास्तव, कुलश्रेष्ठ बखाने ॥**
**ये सुत चार नन्दिनी जाये ।**
**सब मिल द्वादश बन्धु कहाये ॥'**

**सीताशरण** : इस प्रकार कायस्थों के बारह विभाग हुए ?

**मल्लिनाथ** : महान विभाग ! महान विभाग !

**रघुराजसिंह** : हाँ, पंडितो, कायस्थ जाति ने अपने पहले बुजुर्ग को पहचान लिया है। अपने बारह फिर्कों को जान लिया है। उसे मालूम हो गया है कि वह शूद्र नहीं लेकिन सच्ची क्षत्रिय जाति है। उसने अपनी जाति-सभा कायम कर ली है। जाति-सभा का अखबार निकलने लगा है। हर साल जाति

की सभा के जलसे होते हैं, जिसमें जाति की तरक्की के लिए रजोल्यूशन्स के बंडल पास किये जाते हैं और उन पर आँधी के मानिंद धुआँधार तकरीरें होती हैं। हर कायस्थ के मकान में अब फिर से सोलह संस्कार होने लगे हैं, उनको उनके गोत्र भी मालूम हो गये हैं। चित्रगुप्त बादशाह की सवारी भैंसा होने के सबब हमने अपना बैज भैंसे की शक्ल का बनाया है और उनका सच्चा हथियार कलम होने के सबब हम लोग कमर में तलवार की जगह कलम बाँधते हैं। राजा रामचन्द्र जी क्षत्रिय थे इसलिए पेशानी पर हम लोग रामानंदी तिलक लगाते हैं। बारह सालों का यह युग कायस्थ जाति की तवारीख़ में सतयुग के नाम से सुनहले हरफ़ों में लिखा जायगा। इसी तवारीख़ को लिखने के लिए चित्रगुप्तेश्वर पुराण बनाये जाने का इन्तज़ाम हो रहा है।

**मल्लिनाथ** : बोलो महाराज चित्रगुप्त की जय !

**सीताशरण** : सच्ची आर्य क्षत्रिय जाति कायस्थ की जय !

[ **कुछ देर निस्तब्धता रहती है।** ]

**रघुराजसिंह : (सीताशरण से)** अच्छा, पंडितजी, आपकी जाति ने इस एक युग में क्या किया उसका हाल आप फ़रमाइए।

**सीताशरण**—बहुत अच्छा; सुनिए। हमारी जाति को मालूम हो गया है कि 'धूसर' शब्द संस्कृत के बधूसर शब्द का अपभ्रंश है। यथार्थ में हमारी जाति ऋग्वेद में वर्णित महर्षि भृगु से उत्पन्न हुई है और उसका प्राचीन नाम 'बधूसर-

भार्गव' है। भृगु-वंश ब्राह्मण वर्ण में प्राचीनतम है। ऋग्वेद में 'भृगु' तथा बहुवचन 'भृगवः' अनेक स्थलों पर आया है। वैदिक साहित्य में महर्षि भृगु को 'वारुण' अर्थात् वरुण का पुत्र कहा गया है। उनका इतना बड़ा महत्त्व था कि भगवान् श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं—'महर्षीणां भृगुरहं'। महर्षि भृगु की दो पत्नियाँ थीं। पहली का नाम था 'पौलोमा'। पौलोमा के गर्भ में जब च्यवन ऋषि थे उस समय महर्षि भृगु की अनुपस्थिति में एक दिन एक दैत्य उसे हरण कर ले गया। शोक तथा भय के कारण उसका गर्भपात हो गया और शिशु पृथ्वी पर गिर पड़ा इसीलिए वह 'च्यवन' अर्थात् 'गिरा हुआ' कहा गया। उस शिशु के सूर्य सदृश तेज से वह दैत्य भस्म हो गया। पौलोमा जब रोती हुई शिशु को उठा महर्षि भृगु के आश्रम को लौटीं तब उनकी अश्रुधारा से एक नदी बह चली जिसका नाम ब्रह्मा ने 'बधूसरा' रखा। आगे चल इसी के किनारे च्यवन ऋषि ने अपना आश्रम बनाया। वर्तमान समय के रिवाड़ी फुलेरा कार्ड रेलवे पर बसी नारनौल नगरी से लगभग पाँच मील पश्चिम की ओर यह च्यवनाश्रम था। इसके किनारे आज भी बधूसरा नदी बहती है और उसी के पास एक गाँव है जिसका नाम 'बधूसरी' है।

**रघुराजसिंह** : च्यवन ऋषि के आश्रम का पता लग गया है ?

**सीताशरण** : जी, सिन्हा साहब, और पते के कई प्रमाण हैं।

**मल्लिनाथ** : अच्छा !

**सीताशरण** : देखिए पहला प्रमाण है—'च्यवन गुफा'; दूसरा

प्रमाण है 'च्यवन कुंड'; और तीसरा प्रमाण है एक मंदिर, जिसमें च्यवन ऋषि की मूर्ति स्थापित है।

**रघुराजसिंह** : वाह ! वाह ! इससे बड़े और क्या सुबूत हो सकते हैं ?

**मल्लिनाथ** : अकाट्य प्रमाण ! अकाट्य प्रमाण !

**सीताशरण** : महर्षि च्यवन का विवाह पुराणों में वर्णित राजा शर्याति की राजकुमारी सुकन्या से हुआ; परन्तु तपस्या करते-करते च्यवन ऋषि वृद्ध हो गये थे। देवताओं के राज-वैद्य अश्विनी कुमार ने आकर औषधियों के जल का एक कुण्ड बनाया। उसमें स्नान कर महर्षि च्यवन पुनः युवा हुए। वही कुण्ड आज इस आश्रम के निकट 'च्यवन कुंड', 'बधूसर कुण्ड', 'सिद्धकुण्ड' इत्यादि नामों से विख्यात है। च्यवन ऋषि के युवा होने के पश्चात् राजकुमारी सुकन्या से उनकी जो संतति हुई वह 'बधूसरा' नदी के तट पर 'बधूसरी' बस्ती में रहने लगी। धीरे-धीरे बधूसरा नदी धूसरा नदी और 'बधूसरी' बस्ती ढोसी गाँव कहलाने लगा। यह सन्तति पहले 'बधूसर भार्गव' कहलायी और भाषा के बिगाड़ के कारण जिस प्रकार 'बधूसरा नदी' 'धूसरा' और 'बधूसरी' बस्ती ढोसी गाँव कहलाया उसी प्रकार 'बधूसर भार्गव' को लोग पहले 'धूसर' और फिर दूसर कहने लगे।

**मल्लिनाथ** : अनर्थ है, घोर अनर्थ ! श्रेष्ठतम ब्राह्मण, महर्षि भृगु के पुत्र, महर्षि च्यवन की संतति बधूसर-भार्गव-जाति निम्न कोटि के बनिये !

**रघुराजसिंह** : तभी तो इस मुल्क की यह हालत हो गयी।

**सीताशरण** : एक कवि ने हमारी जाति का सुन्दर वर्णन किया है, सिन्हा साहब, और, पंडित जी।

**रघुराजसिंह** : फ़रमाइए, फ़रमाइए।

**मल्लिनाथ** : हाँ, हाँ, अवश्य सुनाइए।

**सीताशरण** : कवि कहता—( **गाता है।** )

**'परम तपस्वी ऋषि को कहिए।**
**च्यवन नाम पुनि तिन को लहिए॥**
**पुनि ऋषि की संतान भयी जो।**
**तिनको दूसर कहिए तहँ सो॥**
**ढोसीपुर में बास जो पायो।**
**तासों दूसर नाम कहायो॥'**

**मल्लिनाथ** : सुन्दर वर्णन है। भाषा तो इतनी सरल है कि इसकी टीका की आवश्यकता नहीं।

**सीताशरण** : इस प्रकार के भार्गव मूल गोत्र में ७ गण, १२ पक्ष और ८३९ वर्ग या शाखा गोत्र हैं। वर्तमान काल में इनमें कितने ही हैं और कितने ही नष्ट भी हो गये हैं। वे समस्त भारतवर्ष के ब्राह्मणों के भिन्न-भिन्न भेदों और उपभेदों में फैले हुए हैं जिनके साथ यद्यपि आज बधूसर भार्गवों का कोई संबंध नहीं तथापि वस्तुतः वे उनके सगोत्री बन्धु हैं।

**मल्लिनाथ** : उँह ! संबंध आज नहीं है तो क्या हुआ, हो जायगा।

**रघुराजसिंह** : बेशक, बहुत जल्दी।

**सीताशरण** : बधूसर भार्गवों के ७½ गोत्र हैं। उनका वेद शुक्ल

यजुर्वेद, शाखा माध्यदिन, उपवेद धनुर्वेद, श्रौत्रसूत्र कात्यायन, गृह्यसूत्र पारस्कर प्राचीन समयाचारिक या धर्म सूत्र कात्यायन, कुल देवता वरुण, देवियाँ शकरा आदि १८ हैं।

**रघुराजसिंह** : ओहो ! आपने तो बड़ी बारीकी से रिसर्च किया है।

**मल्लिनाथ** : अवश्य ।

**सीताशरण** : उनमें शिखा के संबंध में एक बड़ी विचित्र बात मिली है ।

**रघुराजसिंह** : कैसी ?

**सीताशरण** : गौभिल्य गृह्य संग्रह परिशिष्ट में कहा है—

**'दक्षिण कपर्दा वासिष्ठाः आत्रेयास्त्रि कर्पादिनः ।**
**आंगिरसः पंचचूड़ा मुण्डा भृगवः शिखिनोऽन्यो ।'**

**रघुराजसिंह** : इसीलिए आपने चोटी मुड़ा दी है ।

**मल्लिनाथ** : जाति-भक्तों को तो शास्त्रों के वचनानुसार ही रहना चाहिए ।

**सीताशरण** : ऐसे प्राचीन 'बधूसर भार्गव' आगे चलकर भी अपना उत्कर्ष रख सके। महाराजा जन्मेजय के राज्य-काल में वे ही कुरुदेश के राजाओं के पुरोहित थे। उज्जैनी के महाराजा विक्रमादित्य के भी वे पुरोहित बने। महाराजा पृथ्वीराज के वे ही पुरोहित रहे ।

**मल्लिनाथ** : धन्य है ! धन्य है !

**सीताशरण** : और फिर एक बात तो देखिए। जब विदेशी मुसलमानों ने भारत पर आक्रमण किया तब उन्होंने देश की रक्षा के लिए ब्राह्मण वृत्ति छोड़कर क्षात्र धर्म स्वीकार कर लिया

श्रौर इस संबंध में उनका पूर्णोत्कर्ष हुआ महाराजा हेमू विक्रमादित्य के समय ।

**रघुराजसिंह** : हाँ, हाँ, यह तो तवारीख़ की मशहूर बात है। बदायूनी तक ने हेमू के मुताल्लिक लिखा है ।

**सीताशरण** : सिन्हाँ साहब, हेमू बधूसर भार्गव ही थे। उन्होंने दिल्ली को जीता था। दिल्ली जीतकर उन्होंने विक्रमादित्य की उपाधि ग्रहण की थी श्रौर इस प्रकार वे अन्तिम हिन्दू सम्राट् माने जाने चाहिएँ। वह तो उनके सेनानायकों ने उन्हें धोखा दिया नहीं तो इस देश पर से विदेशियों की सत्ता का अन्त हो ही गया था।

**मल्लिनाथ** : बोलो महाराजाधिराज राजराजेश्वर सम्राट् हेमू विक्रमादित्य की जय !

**सीताशरण** : वही परम पवित्र श्रौर परम प्रतापी बधूसर भार्गव जाति आज निम्नतम बनियों की जाति समझी जाती है; परन्तु सत्य सदा छिप नहीं सकता। उसने अपनी प्राचीन उत्पत्ति तथा प्राचीन इतिहास को जान लिया है। भार्गव महासभा की स्थापना हो गयी है। प्रतिवर्ष उसके अधिवेशन धूम-धाम से हो रहे हैं। इस अधिवेशन में जाति-सुधार पर विचार किया जाता है। नाना प्रकार के प्रस्ताव पास होते हैं। उन पर धारावाहिक भाषण दिये जाते हैं। भार्गवों में पुनः षोडश संस्कार होने लगे हैं। इन बारह वर्षों के एक युग में जो कुछ किया गया है वह इस जाति के पुनरुत्थान के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा। वह समय बहुत

निकट है, सिन्हा साहब, और, पंडित जी, जब यह जाति भारतवर्ष के ब्राह्मणों में पुनः अग्रगण्य हो भारतवर्ष को सच्चे ज्ञान का प्रकाश दिखाने में समर्थ हो सकेगी। इस समय देश को सच्चे ज्ञान की ही सबसे अधिक आवश्यकता है।

**मल्लिनाथ** : बोलो भार्गव जाति की जय !

[**कुछ देर निस्तब्धता।**]

**रघुराजसिंह** : **(मल्लिनाथ से)** अच्छा, पंडितजी, अब आप अपनी जाति की तरक्की का हाल बताइए।

**मल्लिनाथ** : **(गला साफ करते हुए)** हमारी जाति उत्थान के उस शिखर पर तो अब तक नहीं पहुँच सकी है, जिस पर आप लोगों की जातियाँ इस एक युग में ही पहुँच गयीं, किन्तु उत्कर्ष का कार्य आरम्भ अच्छी प्रकार हो गया है, इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता।

**रघुराजसिंह** : हाँ, इसमें तो क्या शक हो सकता है ?

**मल्लिनाथ** : हम लोगों ने सबसे पहले तो अपनी जाति के नाम में ही संशोधन किया। पाणिनी के व्याकरण के अनुसार 'नाई' शब्द का कोई अर्थ ही नहीं निकलता था।

**सीताशरण** : सर्वथा नहीं।

**मल्लिनाथ** : और निरर्थक शब्द संस्कृत के सदृश भाषा में हो नहीं सकता।

**सीताशरण** : कदापि नहीं।

**मल्लिनाथ** : हमने 'नाई' शब्द का 'न्यायी' शुद्ध रूप बना दिया।

**रघुराजसिंह** : बिलकुल ठीक, लफ़्ज़ में इतना रद्दोबदल तो

आसानी से हो सकता है ।

**सीताशरण :** 'न्यायी' शब्द ही बिगड़कर 'नाई' बन गया है, इसमें सन्देह का स्थान ही नहीं ।

**मल्लिनाथ :** फिर हमने अपने आदि-पुरुष नाभिक को ढूँढ़ निकाला और जब पीढ़ियों का मिलान किया तो स्पष्ट हो गया कि नाभिक विष्णु जी का भाई था ।

**रघुराजसिंह :** जब यह पता लग गया, तब तो फिर इसके दूसरे सुबूतों की जरूरत ही नहीं रह सकती कि नाई दर असल न्यायी ब्राह्मण हैं, क्योंकि विष्णु तो शूद्र होने से रहा ।

**सीताशरण :** बिल्कुल ठीक ।

**मल्लिनाथ :** इसके पश्चात् हमने क्षौर-कर्म किस जाति का कर्म है इसका पता लगाया और हमें अथर्व वेद में लिखा मिल गया—'तेन ब्राह्मणो वपत्' अर्थात् उस्तरे से ब्राह्मण लोग क्षौर करें; अतएव क्षौर-कर्म ब्राह्मण-कर्म है ।

**रघुराजसिंह :** वाह ! वाह ! वाह ! वाह ! अथर्व वेद के सूत्र से ज्यादा बड़ा सबूत और कहाँ मिल सकता है ?

**मल्लिनाथ :** इसीलिए, सिन्हा साहब, पण्डित जी, उस्तरे को हम लोगों ने यज्ञोपवीत के साथ यज्ञोपवीत में बाँधना आरम्भ किया है । **(अपनी यज्ञोपवीत में बाँधे हुए उस्तरे को दिखाकर)** इस प्रकार ।

**रघुराजसिंह : (विचार करते हुए)** यह तो ठीक है लेकिन इससे ···इससे किसी वक्त एक्सीडेंट का डर है ।

**मल्लिनाथ :** नहीं, नहीं, हम लोग ऐसे उस्तरे बाँधते हैं, जिनमें

धार नहीं रहती। और फिर रात को सोने के समय यज्ञोपवीत सहित उसे खूँटी पर टाँग देते हैं।

**रघुराजसिंह** : तब··ठीक है; तब कोई हर्ज नहीं।

**मल्लिनाथ** : हमारी सभा 'न्यायी ब्राह्मण सभा' के नाम से स्थापित हो गयी है। हमारी जाति में भी यज्ञोपवीत होने लगे हैं। हमारे एक कवि ने हमारी सारी कथा पर सुन्दर कविता की रचना भी की है।

**सीताशरण** : अवश्य सुनाइए। अवश्य सुनाइए।

**रघुराजसिंह** : जरूर, जरूर।

**मल्लिनाथ** : भाषा की ओर ध्यान न दीजिएगा; वह तो ऐसी है जिससे हमारी जाति के लोग अच्छी प्रकार समझ लें। भावों पर लक्ष्य रखिए। कवि कहता है—(**गाता है**)

**'एक समय की बात को सुनलो पंच सुजान।**
**महादेव कैलाश पर समझाते थे ज्ञान॥**

**एक समय श्रीमहादेव ने पर्वत कैलास पर पंचायत किया।**
**सब देवता बुलवाये गये और अच्छे अच्छे राय दिया॥**

**नाई जन्म कहाँ से पाई सुनो सब जगत के भाई।**
**शिव के पुत्र भये विष्णु नाभिक जिनके भाई॥**
**विष्णु का पोता ब्रह्मा जानो नाभिक बेटा नाई।**
**इसी हिसाब से जोड़ लगाया नाई के ब्रह्मा भाई॥**

**माई नाई सब कहैं, नाई हैगा कौन ?**
**नाभिक ब्रह्मा ने कही शंकर जी के भौन ?**

हे भाइयो, फिर पूर्वजों के तुल्य तुम ज्ञानी बनो ।
भूलो न अनुपम आत्म गौरव धर्म के ध्यानी बनो ।।
कर दो चकित फिर विश्व को अपने पवित्र प्रकाश से ।
मिट जाय सारा तम तुम्हारी जाति के आकाश से ।।
विद्या भूषण तजा तुम्हीं ने किसको दोष जमाने में ।
किया बहाना यजमानी का सभा आपनी आने में ।।
आज समझ कर मूर्ख तुमको चिलमें लोग भराते हैं ।
यज्ञ वपन का कर्म तुम्हारा धर्म शास्त्र बतलाते हैं ।।
कहो भइया अब कुछ समझे कैसी कथा सुनायी ।
क्षौर कर्म की महिमा देखो वेदों ने जो गायी ।।

धीरे धीरे यवनिका

## उपसंहार

स्थान : एक नगर के मकान में एक कमरा

समय : सन्ध्या

**[दृश्य वैसा ही जैसा मुख्य दृश्य में था। अन्तर इतना ही है कि दीवालें और किवाड़ इत्यादि मैले हो गये हैं। फर्नीचर बेमरम्मत है। कालीन इधर-उधर से फट गया है। बिजली की बत्तियों के शेड और पंखों पर गर्द है। कुछ बत्तियों में बल्ब भी नहीं है। रघुराजसिंह, सीताशरण और मल्लिनाथ कुर्सियों पर बैठे हुए हैं। उनकी अवस्था से जान पड़ता है कि मुख्य दृश्य की घटना को दस-बारह वर्ष बीत चुके होंगे। तीनों के काले बालों में सफेदी आ रही है। वेष-भूषा तीनों की मुख्य दृश्य के सदृश है, पर मुख हतोत्साह हैं।]**

**सीताशरण :** आज हमारे संकल्प के दूसरे युग का अंत होता है। इस युग का वृत्त बताइए, सिन्हा साहब।

**[ कुछ देर निस्तब्धता रहती है। ]**

**रघुराजसिंह :** अकेले में तो हम लोगों को एक दूसरे के सामने सच्ची हालत पेश करनी चाहिए।

**मल्लिनाथ :** इसमें क्या संदेह है।

**रघुराजसिंह :** तो मुझे तो अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि इस युग में हमारी कायस्थ जाति ने वैसी तरक्की नहीं की

जैसी पहले युग में की थी।

**सीताशरण :** हमारी भार्गव जाति की भी यही दशा है, सिन्हा साहब।

**मल्लिनाथ :** और हमारी न्यायी जाति की तो उससे भी बुरी। हर एक कायस्थ अपने को तो क्षत्रिय मानता है, चाहे दूसरे क्षत्रिय न मानें, प्रत्येक भार्गव अपने को तो ब्राह्मण मानता है, चाहे दूसरे ब्राह्मण उसे ब्राह्मण न मानें, पर हमारी जाति के न्यायी भाइयों में तो अधिकांश न्यायी भाई ही अपने को ब्राह्मण नहीं मानते। इतना ही नहीं, जब कुछ यज्ञोपवीत पहन-पहन कर क्षौर-कर्म करने गये और हज़ामत बनवाने वालों ने कहा कि हम ब्राह्मणों से हजामत न बनवायेंगे तब उन्होंने अपने-अपने यज्ञोपवीतों को उतार दियासलाई की डिबियों में बन्द करके रख लिया है। शायद सभा में ही पहनकर आयेंगे।

[**तीनों कुछ देर चुप रहते हैं। निस्तब्धता रहती है।**]

**रघुराजसिंह :** बात यह है कि इस वक्त मुल्क बिल्कुल ही गलत और बहके हुए रास्ते पर चल रहा है। गान्धी ने 'स्वराज्य स्वराज्य' चिल्ला-चिल्लाकर यहाँ के लोगों को और किसी काम का नहीं रखा। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सब एक हो जाओ, अछूत तक मिल जाओ, इस तरह की वाहियात बातें कही जा रही हैं। हिन्दू-मुसलमान भी मिलकर एक हिन्दुस्तानी जाति बनाओ, यह हल्ला मचा हुआ है। कुछ दिन में कहा जायगा तमाम दुनियाँ की आदमी जाति की

एक जाति कायम करो। बेवकूफी की भी कोई इंतहा है।

**सीताशरण :** आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। सिन्हा साहब। देखिए न, जाति-सभाओं के अधिवेशन तक में कोई नहीं आते।

[**कुछ देर फिर निस्तब्धता।**]

**रघुराजसिंह :** इस हालत में भी तब्दीली होगी, ज़रूर होगी।

**सीताशरण :** इसमें कोई सन्देह है ?

**रघुराजसिंह :** बस थोड़ा सब्र रखना चाहिए, गांधी की आँधी निकल जाने दीजिए, फिर सब ठीक हो जायगा।

**सीताशरण :** धैर्य्य का फल सदा मीठा होता है।

**मल्लिनाथ :** (**विचारते हुए**) परन्तु··परन्तु··जहाँ तक नाइयों का सम्बन्ध है, वे··वे तो कभी भी इसे न मानेंगे कि वे न्यायी ब्राह्मण हैं। इसीलिए··इसीलिए, सिन्हा साहब और पण्डितजी, मैंने तो एक दूसरी ही संस्था के पास सदस्य होने के लिए प्रार्थना-पत्र भेजा है।

**सीताशरण :** किस संस्था के पास, पण्डित जी ?

**रघुराजसिंह :** हाँ, किस जमात के पास, पण्डित जी।

**मल्लिनाथ :** (**गला साफ करते हुए**) जाति-पाँति··जाति-पाँति-तोड़क-मण्डल के पास।

**सीताशरण :** (**चिल्लाकर**) जाति-पाँति-तोड़क-मण्डल के पास !

**रघुराजसिंह :** (**चिल्लाकर**) जाति-पाँति-तोड़क-मण्डल के पास।

[ रघुराजसिंह और सीताशरण मल्लिनाथ की ओर घूरकर देखते हैं । मल्लिनाथ दोनों की ओर न देखकर दूसरी ही तरफ देखने लगता है । ]

यवनिका

समाप्त

# विटेमिन

# मुख्य पात्र, स्थान

## पात्र

| | | |
|---|---|---|
| **बच्छराज** | : | एक धनिक युवक |
| **कपिला** | : | बच्छराज की पत्नी |
| **गोपाल नंदन** | : | एक डाक्टर |
| **अच्छेलाल** | : | बच्छराज का नौकर |

## स्थान

एक नगर

## उपक्रम

स्थान : बच्छराज का बैठकखाना

समय : सन्ध्या

[बैठकखाना आधुनिक ड्राइंग-रूम के सदृश सुन्दरता से सजा हुआ है। दीवालें और छत रंगी हुई हैं। दीवालों के अनेक दरवाजों और खिड़कियों से बाहर का उद्यान और उस पर पड़ती हुई डूबते सूर्य की सुनहली किरणें दिखायी देती हैं। दरवाजों और खिड़कियों पर महराबदार रेशमी परदे पड़े हुए हैं। दीवालों पर कई तैल चित्र लगे हैं। छत से बिजली के झाड़ और पंखे झूल रहे हैं। जमीन पर कालीन है, जिस पर बेशकीमती फर्नीचर है। सोफे तथा कुर्सियाँ रेशमी कुशनदार हैं; और टेबिलें रेशमी मेजपोशों से ढकी हुई, जिन पर फूलों से भरे कई गुलदस्ते और तस्वीरें सजी हैं। कुछ बुकशेल्फ भी हैं, जिनमें किताबें रखी हैं। एक ईज़ी चेयर पर बच्छराज बैठा हुआ स्वास्थ्य सम्बन्धी एक पुस्तक पढ़ रहा है। उसकी अवस्था बाईस-तेईस वर्ष की है। वह गेहुँए रंग का ऊँचा पूरा और मोटा-सा मनुष्य है। लम्बे बाल और छोटी-छोटी मूँछें हैं। उसके वस्त्र अंग्रेजी ढंग के हैं। गोपाल नंदन का प्रवेश। वह साँवले रंग का कुछ ठिगना और दुबला पतला व्यक्ति है। उसकी उम्र करीब चालीस वर्ष की है। वह क्लीनशेव्ड है, और उसके कपड़े भी अंग्रेज़ी फैशन के हैं। गोपाल

**नंदन के आने की आहट पाकर बच्छराज उसकी ओर देखता है और "ओ, डाक्टर" कहते हुए खड़े हो पुस्तक टेबिल पर रख उसकी तरफ बढ़ उससे हाथ मिलाता है। दोनों सोफ़े पर बैठते हैं।]**

**गोपाल नंदन : (जो किताब बच्छराज पढ़ रहा था उसे उठा कर इधर-उधर से देखते हुए)** ओ! हाईजीन पर सचमुच यह अच्छी पुस्तक है।

**बच्छराज :** क्या करूँ, पुस्तकों से ही स्वास्थ्य विषयक कुछ नियम निर्धारित कर रहा हूँ, क्योंकि आप तो वह नोट-बुक लायँगे नहीं।

**गोपाल नंदन : (पतलून की जेब से कुछ निकालते हुए)** इसीलिए एक हफ्ते से नहीं आया था। मैं जानता था इस बार बिना नोट-बुक के आया तो आप क्षमा करने वाले नहीं। **(नोट-बुक निकालता है।)**

**बच्छराज : (जल्दी से नोट-बुक लेने को हाथ बढ़ा, प्रसन्नता से)** देखूँ···देखूँ, डाक्टर।

**गोपाल नंदन : (नोट-बुक न देकर हाथ पीछे हटाते हुए)** भाई, समझाना पड़ेगा, मुझे हर बात समझानी होगी।

**बच्छराज :** अच्छी बात है, समझा कर दीजिए। गनीमत यही है कि आखिर आप इसे ले आये।

**गोपाल नंदन :** मैंने कहा न, इसीलिए एक हफ़्ते से आया नहीं। फिर अब तो आने के दो सबब और थे।

**बच्छराज :** कौन से ?

**गोपाल नंदन** : पहला आपका मोटा होते जाना और दूसरे **(मुस्कराते हुए)** अच्छेलाल ने मुझे कहा था कि अगले महीने बहू जी आ रही हैं।

**बच्छराज** : **(मुस्कराकर)** ऐसा।

**गोपाल नंदन** : स्वास्थ्य संबंधी नियमों की जीवन के इसी काल में सबसे ज्यादा जरूरत होती है।

**बच्छराज** : अच्छा, अच्छा, **(नोट-बुक की तरफ़ देखकर)** समझाओ इसमें क्या लूघर-पत्थर लिखा है।

**गोपाल नंदन** : **(नोट-बुक खोलते हुए)** अभी लो। **(नोट-बुक के पेज उलटते तथा गला साफ करते हुए)** देखिए, मैंने सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक की सारी दिनचर्या लिख दी है। अलस्सुबह उठना। शौच से निवृत हो व्यायाम करना, दंड बैठक मुगदर नहीं, कुछ लाइट एक्सरसाइज़ेज़, अनेक सिस्टम्स में से छाँटकर मैंने निकाली हैं, और इन्हें आपको सिखा दूंगा। फिर व्यायाम से निपट चहल-कदमी करना; चहल-कदमी में एक-एक कदम कितने फुट और इंच का होना चाहिए और उसकी लम्बाई धीरे-धीरे क्यूँ कर बढ़नी चाहिए। फिर एक कड़ी टेबिल पर सीधे, उलटे, आड़े, टेढ़े लेटकर उल्टी मालिश कराना··एक दिन आकर खुद करवा दूँगा, तब आप समझेंगे; सीधी मालिश नहीं, उल्टी मालिश। और उसका समय भी धीरे-धीरे बढ़ाना। मालिश के बाद थरमामीटर से पानी का टेम्प्रेचर नाप स्नान करना। फिर शरीर पर पफ़ से पाउडर

लगाना। उसके बाद नीरा पीना। फिर मध्याह्न को भोजन। भोजन से निवृत हो बामकुक्षि, फिर अपराह्न का नाश्ता। उसके बाद शाम की हवाखोरी। हवाखोरी में मोटर की ठीक स्पीड। फिर शाम का भोजन। और तब सोना तथा बहू जी के आने के बाद उनके···उनके **(बच्छराज की ओर देखते हुए मुस्कराकर)** समझ लिया न ?

**बच्छराज : (मुस्कराते हुए)** जी हाँ···समझ, बिल्कुल समझ लिया।

**गोपाल नंदन : (जल्दी-जल्दी नोट-बुक के पेज उलटते हुए)** इस तरह इसमें सुबह बिस्तर छोड़कर रात को बिस्तर पर जाने तक और रात को बिस्तर पर जाने के बाद की भी **(मुस्कराते हुए)** सारी दिनचर्या लिखी हुई है। इसके अनुसार आप चलें तो "जोवेम शरदःशतम्" की हमारी प्राचीन युक्ति के अनुसार आप नीरोग सौ वर्ष जिएँगे। पुराने लोगों ने सौ वर्ष तक जीने की कल्पना की थी, लेकिन उसके लिए जीवन की जिस प्रणाली की जरूरत है, वह आधुनिक साइन्टिस्ट ही निकाल सके हैं।

**बच्छराज :** इसमें क्या सन्देह है, आखिर दुनियाँ में तरक्की जो हो रही है।

**गोपाल नंदन :** बेशक और इस जीवन-प्रणाली में जो सबसे मुख्य बात है उसी को आपको अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

**बच्छराज :** कौन सी ?

**गोपाल नंदन** : वही बताता हूँ। **(गला साफ़ कर)** देखिए, मनुष्य को स्वस्थ और दीर्घजीवी बनने के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ है साइन्टिफ़िक़ भोजन; भोजन में अस्वाभाविकता और कृत्रिमता ले आने के कारण ही मनुष्य ने अगणित बीमारियाँ पैदा की हैं, अपनी उम्र घटा ली है, और अपना शारीरिक और आत्मिक बल खोया है।

**बच्छराज** : **(गोपाल नंदन के आने के पहले जो पुस्तक पढ़ रहा था उसे उठाते हुए)** आप बिल्कुल ठीक कहते हैं, डाक्टर इस पुस्तक में भी यही बात लिखी है।

**गोपाल नंदन** : वह तो लिखी ही होगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी आप किसी किताब को भी उठा लीजिए, सबमें आपको यही बात मिलेगी।

**बच्छराज** : ऐसा ?

**गोपाल नंदन** : बेशक ! जो प्राणी स्वाभाविक तथा अकृत्रिम भोजन करते है उनका और मनुष्य का मिलान कीजिए, आपको फौरन इसका सच्चा रहस्य मालूम हो जायगा। **(फिर गला साफ कर)** मांसाहारी पशु-पक्षी, शाकाहारी पशु-पक्षी, मनुष्य से बहुत मिलता-जुलता बन्दर सब कच्ची चीजें खाते हैं। हर तरह की चीजों को मिला-मिलूकर आग पर उन्हें भिन्न-भिन्न प्रकार से उबालना, सेंकना और तलना भोजन के मूल की खराबी है।

**बच्छराज** : तो पशु-पक्षी इसीलिए स्वस्थ रहते हैं कि वे कच्ची चीजें खाते हैं और मनुष्य इसीलिए बीमार रहता है कि

उसने अग्नि देव का सहारा लिया है ।

**गोपाल नंदन** : निःसन्देह अग्नि देव नहीं दैत्य है, विकराल से विकराल दैत्य । उसका उपयोग करना चाहिए बीमारियों के कीटाणुओं के संहार के लिए। अस्पतालों में औजारों, बैन्डेज इत्यादि को डिसइन्फ़ैक्ट करने के लिए, घरों में बर्तनों, कपड़ों इत्यादि को साफ़ रखने के लिए। चौके में इस दैत्य का काम नहीं।

**बच्छराज** : ठीक ।

**गोपाल नंदन** : बात यह है कि वैज्ञानिकों ने बहुत शोध के बाद 'विटेमिन थ्योरी' निकाली है।

**बच्छराज** : हाँ, हाँ, आजकल तो यह बहुत प्रसिद्ध हो गयी है । इसी के आचार्य हैं न मैककैरिसन ?

**गोपाल नंदन** : जी हाँ, अभी 'ए' से लेकर 'आइ, जे' तक विटेमिन पहुँचे हैं। धीरे-धीरे 'जैड' तक पहुँच जायँगे, इतना नहीं, इनके लिए एल्फ़ाबेट में शायद नये अक्षरों का आविष्कार करना पड़ेगा।

**बच्छराज** : ऐसा, तो अभी यह थ्योरी भी अधूरी है ?

**गोपाल नंदन** : साइंस में अधूरी तो हर एक चीज़ ही रहती है, क्योंकि रिसर्चेज़ का काम जारी जो रहता है, पर अब तक इस विषय में जितनी शोध हुई है उसी के अनुसार चला जाय तो मनुष्य नीरोग रहकर सौ वर्ष तक जी सकता है।

**बच्छराज** : और आगे रिसर्च होने पर धीरे-धीरे उम्र और भी बढ़ सकती है ।

**गोपाल नंदन :** क्यों नहीं, बर्नार्ड शा ने अपने नाटक 'बैक्टू मैथ्यू सुला' में हजारों वर्षों तक मनुष्य के जीने की कल्पना की है। संभव है कोई ऐसा विटेमिन निकल आए जिससे मनुष्य अमर हो जाय।

**बच्छराज :** तब तो, डाक्टर, अब तक जो इतने आदमी मर गये, इनके लिए और अधिक अफ़सोस करना पड़ेगा ?

**गोपाल नंदन :** हाँ, पर क्या किया जा सकता है, मनुष्य की आँखें तो चेहरे के आगे के रुख में ही हैं पीछे नहीं। आदमी तो आगे की ओर ही देखता है, पीछे की तरफ़ नहीं। (**कुछ रुककर**) अच्छा सुनिए, नयी शोधों के अनुसार आदर्श भोजन कैसा होना चाहिए, इसे थोड़ा डिटेल में सुन लीजिए। (**नोट-बुक के एक पेज पर दृष्टि गड़ाकर फिर गला साफ कर**) देखिए, सबसे पहली बात है चौके से आग का बहिष्कार।

**बच्छराज :** ( **उँगली पर अँगूठे से गिनते हुए** ) पहली बात है चौके से आग का बहिष्कार।

**गोपाल नंदन :** ( **नोट-बुक के उसी पेज को देखते हुए** ) दूसरी बात है अल्पाहार।

**बच्छराज :** (**उँगली पर अँगूठे से गिनते हुए**) दूसरी बात है अल्पाहार।

**गोपाल नंदन :** (**बच्छराज की ओर देखते हुए**) मनुष्य ज़रूरत से कहीं ज़्यादा खाता है।

**बच्छराज :** ऐसा ?

**गोपाल नंदन** : ओह ! बहुत··बहुत ज्यादा। **(फिर नोट-बुक को देखते हुए)** तीसरी बात है भोजन का ठीक मेल अर्थात् कम्पैटेबिलिटी।

**बच्छराज** : **(उँगली पर अँगूठे से गिनते हुए)** तीसरी बात है भोजन का ठीक मेल, अर्थात् कम्पैटेबिलिटी।·····याने ?

**गोपाल नंदन** : **(बच्छराज की ओर देखते हुए)** याने यह कि कुछ चीज़ एक दूसरे के साथ खायी जा सकती हैं और कुछ नहीं। मसलन हमारे यहाँ दाल-रोटी, दाल-भात बड़े प्रसिद्ध संयुक्त शब्द हैं। इन दोनों संयुक्त शब्दों का ऐसा विच्छेद करना ज़रूरी है कि ये कभी भी एक दूसरे के नजदीक न आने पावें।

**बच्छराज** : तो रोटी और चावल-दाल साथ नहीं खाये जा सकते ?

**गोपाल नंदन** : कभी नहीं, **(नोट-बुक के पीछे के कुछ पेज दिखाते हुए)** मैंने नोट-बुक में कुछ एपैन्डिक्स जोड़ दिये हैं, जिनमें से एक में मेल और बेमेल के पदार्थों की सूची दे दी है।

**बच्छराज** : तब तो, डाक्टर, आपने इस नोट-बुक के तैयार करने में सचमुच बड़ी मेहनत की है।

**गोपाल नंदन** : बेशक, तभी तो इसके तैयार करने में इतनी देर लग गयी। इसी लिए मुझे सैकड़ों पुस्तकों को कन्सल्ट करना पड़ा है। **(कुछ रुककर फिर नोट-बुक देखते हुए)** कम्पैटे-बिलिटी के बाद चौथी बात है प्रपोरशन की स्टैबिलिटी।

**बच्छराज** : **(उँगली पर अँगूठे से गिनते हुए)** कम्पैटेबिलिटी के बाद चौथी बात है प्रपोरशन की स्टैबिलिटी।······याने ?

**गोपाल नंदन : (बच्छराज की तरफ देखकर)** याने यह कि कौन चीज़ कितनी मिकदार में खानी चाहिए। **(पीछे के कुछ पृष्ठ दिखाते हुए)** इसके लिए भी एक एपैन्डिक्स है।

**बच्छराज :** अच्छा।

**गोपाल नंदन :** पाँचवीं बात है पीने शब्द का लोप।

**बच्छराज :** इसका मतलब समझ में नहीं आया।

**गोपाल नंदन :** इसका मतलब यह है कि बंगाली लोग जिस तरह 'दूध खाबो' 'जल खाबो' कहते हैं उसका व्यवहार में प्रयोग करना चाहिए अर्थात् कोई चीज़ बिना चाबे, चाहे वह पीने लायक ही क्यों न हो, चाबकर तब गले के नीचे उतारना चाहिए; पानी तक। बल्कि पीने और खाने दोनों शब्दों का बहिष्कार कर चाबने शब्द के अनुसार क्रिया करनी चाहिए। हर ग्रास या घूँट को एक सौ आठ बार चाबना चाहिए। दूध चाबना, दही चाबना, पानी चाबना, सबको चाबना चाहिए, सबको।

**बच्छराज :** ऐसा ?

**गोपाल नंदन :** बिलकुल। **(कुछ रुककर)** अच्छा अब देखिए मैंने कौन कौन चीज़ें नहीं खाना चाहिए, इसकी एक लिस्ट बनायी है। इसमें से प्रधान चीज़ें सुन लीजिए।

**बच्छराज :** ज़रूर।

**गोपाल नंदन :** मैंने आपसे कहा ही, आग पर उबली, सिकी और तली चीज़ें न खाकर कच्ची चीज़ें खानी चाहिएँ, पर मनुष्य आग का इतना आदी हो गया है कि वह एकदम से इस दैत्य

से अपना पीछा न छुड़ा सकेगा। कच्ची चीज़ों के साथ ही अभी वह आग पर बनायी हुई चीज़ें भी खायेगा। पर इनमें कुछ ऐसी हैं जो उसे कभी न खानी चाहिएँ। (**नोट-बुक देख**) पहली चीज़ है चावल।

**बच्छराज** : चावल नहीं खाना चाहिए।

**गोपाल नंदन** : नहीं, उसमें विटेमिन का अंश नहीं के बराबर है। फिर उससे 'बैरी बैरी' हो जाती है।

**बच्छराज** : 'बैरी बैरी' क्या?

**गोपाल नंदन** : यह बंगाल की एक बीमारी है और इसीलिए वहाँ शुरू हुई है कि वहाँ के लोग मुख्यत: चावल खाते हैं।

**बच्छराज** : इस बीमारी में क्या होता है, डाक्टर?

**गोपाल नंदन** : विचित्र बीमारी है। पैरों से लेकर सारे शरीर में झुनझुनी होती है। और इलाज भी इसका अजीब है। हज़ारों घड़े ठंडा पानी सिर से उँड़ेलना पड़ता है। या तो मरीज़ ठंडा हो जाता है या बीमारी।

**बच्छराज** : अच्छा।

**गोपाल नंदन** : (**नोट-बुक देख**) शक्कर नहीं खानी चाहिए।

**बच्छराज** : शक्कर भी नहीं?

**गोपाल नंदन** : नहीं। शक्कर को आप सफेद ज़हर समझिए। (**नोट-बुक देख**) मिठाई और नमकीन दोनों नहीं खाने चाहिएँ।

**बच्छराज** : मिठाई और नमकीन भी नहीं?

**गोपाल नंदन** : ना; ये सब मुर्दा खाने (**डेड फ़ूड्स**) हैं।

**बच्छराज** : तब फिर खाना क्या चाहिए ?

**गोपाल नंदन** : खाना क्या चाहिए । (**फिर पीछे के पृष्ठों को दिखाकर**) नहीं खाने लायक और खाने योग्य चीज़ों के एक एपैण्डिक्स भी इस नोट-बुक में जुड़े हैं। पर आदर्श भोजन और उसकी मिकदार का एक स्पेशल चार्ट मैंने अलग लिख दिया है वह आपको पढ़कर सुना देता हूँ ।

**बच्छराज** : हाँ, यह ठीक होगा ।

**गोपाल नंदन** : (**नोट-बुक के एक पेज को पढ़ते हुए**)

१—कच्चा गेहूँ दो तोले ।

२—अंकुरित चना 'स्प्राउटेड ग्रेम' जो ३६ घण्टे पानी में रखकर तैयार किया जाता है, एक तोला छः माशे ।

३—सोयाबीन एक तोला ।

४—चोकर नौ माशे ।

५—गुड़, और राब हो तो और भी अच्छा, छः माशे ।

६—मक्खन चार माशे तीन रत्ती । मक्खन इस देश में अच्छा नहीं बनता । फ़ारिन बटर लेना चाहिए ।

७—शहद तीन माशे छः रत्ती । शहद यहाँ प्रायः नकली आती है, इसलिए फ्रेंच या अमेरिकन हनी अच्छी होगी ।

८—यह सब मिलकर जितना हो उससे चौगुना शाक-भाजी और फल । शाक-भाजी में पत्ती अधिक और फल मय छिलके के ।

९—और यह सब मिलकर जितना हो उतनी ही ऑयल-केक याने खली ।

**बच्छराज** : (**आश्चर्य से**) खली ?

**गोपाल नंदन : (बच्छराज की ओर देखकर)** हाँ, खजी । वह तो विटेमिन का घर, निवास-स्थान है। **(कुछ रुककर)** यह भोजन का आदर्श चार्ट है।

**बच्छराज :** और पीना क्या चाहिए ?

**गोपाल नंदन :** उसी पर मैं आ रहा था। खाद्य के बाद पेय का ही मुख्य स्थान है । शराब की बाबत तो आपसे कुछ कहना ही निरर्थक है। चाय, कॉफ़ी, कोको आदि को भी हाथ नहीं लगाना चाहिए।

**बच्छराज :** ऐसा ?

**गोपाल नंदन :** हाँ, एक साल तक चा का एक कप पीने का क्या मतलब है आप जानते हैं ?

**बच्छराज :** क्या ?

**गोपाल नंदन :** एक जोड़ी जूता पेट में खा लेना।

**बच्छराज :** याने ?

**गोपाल नंदन :** याने यह कि उसमें चमड़े के इन्ग्रीडियेन्ट्स रहते हैं। **(कुछ रुककर)** प्रातःकाल आपको नीरा पीना चाहिए। दोपहर को थोड़ा-सा दूध, और वह डायल्यूट करके, याने एक आउन्स दूध और तीन आउन्स पानी, फिर बिना शक्कर।

**बच्छराज :** तो दूध मुझे मुफ़ीद न होगा ?

**गोपाल नंदन :** बात यह है कि आपकी टेंन्डेंन्सी मुटाई की तरफ़ है। आपके पिता जी भी मोटे थे, दादा जी भी। इसीलिए आपको फ़ैट की चीज़ों से दूर रहना चाहिए। तभी तो मैंने मक्खन भी चार माशे तीन रत्ती ही प्रिसक्राइब किया है।

यह भी एक-एक आधी-आधी चौथाई-चौथाई रत्ती आप घटा सकें तो अच्छा ही होगा। और दूध भी आपको बहुत कम ही पीना चाहिए।

[**दोनों कुछ देर चुप रहते हैं। गोपाल नंदन नोट-बुक के पेज इधर-उधर से उलटकर, नोट-बुक बन्द कर बच्छराज को देता है।**]

**बच्छराज : (नोट-बुक लेते हुए)** मैनी मैनी थैंक्स, डाक्टर।

**गोपाल नंदन :** मैंने आपको सिर्फ़ मोटी-मोटी बातें बतायी हैं डिटेल में तो सब चीज़ें आपको नोट-बुक में मिलेंगी। (**कुछ रुककर**) बहू जी के आने के पहले ठीक वक्त पर आपने मुझसे इस विषय में सलाह ली है। इस नोट-बुक के अनुसार आप चलें तो मैं गैरन्टी दे सकता हूँ कि आप नीरोग सौ वर्ष तक जियेंगे। आपका शरीर फूल-सा हलका और सुन्दर रहेगा। चिड़िया के सदृश आप में फुर्ती रहेगी। दिल और दिमाग़ ऐसे रहेंगे जैसे ऋषियों, महर्षियों के रहते थे और बल रहेगा अर्जुन के सदृश, भीम के समान नहीं।

**बच्छराज : (नोट-बुक के पेज उलटते हुए)** डाक्टर, मैं आपके कथन का अक्षरश: पालन करूँगा।

**गोपाल नंदन :** मुझे यक़ीन है। आप मनस्वी हैं, दृढ़-प्रतिज्ञ हैं। शरीर के सब अवयवों से हलकी कुछ तोले, माशे और रत्तियों की यह जीभ सबसे प्रधान चीज़ है। इसके चंगुल से छुटकारा पाना सहज नहीं। अरे! मैं तक इस आदर्श खान-पान पर टिका नहीं रह सकता; कई बार फिसल पड़ता हूँ।

पर आप···आप पर मुझे विश्वास है कि आप अपनी टेक पर क़ायम रहेंगे।

**बच्छराज :** **(नोट-बुक देखते हुए)** डाक्टर, इस नोट-बुक रूपी गागर में सचमुच आपने सागर···हाँ, सागर भर दिया है।

**यवनिका**

## पहला दृश्य

स्थान : बच्छराज का भोजनालय

समय : मध्याह्न

[ भोजनालय आधुनिक डाइनिंग-रूम के सदृश सुन्दरता से सजा हुआ है। दीवालें और छत रंगी हुई हैं। दीवालों में अनेक दरवाज़े और खिड़कियाँ हैं जिनसे बाहर के बगीचे का कुछ हिस्सा दिख पड़ता है, जिसे मध्याह्न के सूर्य की श्वेत किरणें आलोकित किये हुए हैं। दरवाज़ों और खिड़कियों पर महराबदार मखमली परदे पड़े हैं। दीवालों पर कई वाटर-पेंटिंग टँगे हैं। फ़र्श पर संगमरमर लगा है और उस पर सफ़ेद टेबिल-क्लाथ से ढँकी हुई एक लम्बी डाइनिंग टेबिल रखी है। टेबिल के चारों ओर ऊँची चमड़े की कुशनदार डाइनिंग-चेअर्स हैं। टेबिल पर अनेक एल्यू-मीनियम के डब्बे और चौड़े मुँह की काँच की शीशियाँ रखी हुई हैं; सबके ढक्कन खुले हैं। डिब्बों में तरह-तरह की मिठाइयाँ और नमकीन भरे हैं और शीशियों में मुरब्बे और अचार। डिब्बों और शीशियों के पास चाँदी की कई छोटी-छोटी रकाबियाँ, कटोरियाँ और चमचे रखे हुए। कपिला इन डिब्बों और शीशियों में से चमचों के द्वारा मिठाइयाँ हैं नमकीन, मुरब्बे, अचार इत्यादि निकाल-निकाल कर इन तश्तरियों में और कटोरियों में बड़े उत्साह से सजा रही है। कपिला अठारह-उन्नीस वर्ष की गौर

वर्ण की ऊँची-पूरी, भरे हुए मुख तथा शरीर की सुन्दर स्त्री है। रेशमी साड़ी और ब्लाऊज़ पहने है तथा रत्नजटित आभूषणों से सुसज्जित है। अच्छेलाल का एक बड़ी भारी चाँदी की ट्रे (एक तरह की बड़ी थाली) लिये हुए प्रवेश। इस ट्रे में कच्चे गेहूँ, अंकुरित चने, चोकर, सोयाबीन, राब, मक्खन, शहद, भाजियाँ, आम, केले, संतरे, मोसंबी, सेब के छिलके और खली रखे हैं। एक काँटा और तोले माशे के बाट, रत्तियाँ और खस-खस के दाने भी रखे हैं। अच्छेलाल करीब ३० वर्ष का गेहुँए रंग का ऊँचा-पूरा गठे हुए शरीर का मनुष्य है। वह सफेद वर्दी लगाये हुए है। आते ही वह ट्रे को टेबिल पर रख देता है और मुस्कराता हुआ इन मिठाइयों, नमकीन, मुरब्बों, अचारों इत्यादि की तरफ देखता है। कपिला आश्चर्य से इस ट्रे और इसके सामान की ओर देखती है।]

**कपिला :** (**सामान रकाबियों और कटोरियों में सजाना बन्द कर**) यह सब क्या है, अच्छेलाल ?

**अच्छेलाल :** मालिक का खाना, मालकिन !

**कपिला :** (**और भी आश्चर्य से**) मालिक का खाना ?

**अच्छेलाल :** जी हाँ।

**कपिला :** तेरे मालिक इसे खायेंगे ?

**अच्छेलाल :** आजकल वे सान्टफक खाना खाते हैं, मालकिन !

**कपिला :** सान्टफक खाना क्या ?

**अच्छेलाल :** (**ट्रे के सामान की ओर संकेत कर**) यही कच्चा गेहूँ, इस टड गरम, जो छत्तीस घण्टे पानी में रखकर

तैयार किया जाता है, चोकर, साबून, राब, पालायन बटर, फरासीसी हन्नी, भाजी, फलों के बकले और खली।

**कपिला : (और अधिक आश्चर्य से)** याने ?

**अच्छेलाल :** ···याने !···याने···मैं समझा नहीं, मालकिन !

**कपिला :** तू समझा नहीं······मैं भी नहीं समझी, अच्छेलाल।

**[अच्छेलाल कुछ देर चुप रहता है, जब कपिला और कुछ नहीं कहती तब, काँटे से एक-एक चीज़ को तोलना शुरू कर, अलग-अलग तश्तरी और कटोरी में रखना आरम्भ करता है।]**

**कपिला : (आश्चर्य से चिल्लाकर)** और यह तू क्या करता है ?

**अच्छेलाल : (तोलते-तोलते)** इन सब सामानों को तोलता हूँ, मालकिन !

**कपिला :** तोलता······तोलता है······तोलता क्यों है ?

**अच्छेलाल :** वे हर चीज़ को तोल-तोल कर खाते हैं, मालकिन !

**कपिला :** अच्छेलाल, तू पागल तो नहीं हो गया ?

**अच्छेलाल : (तोलते-तोलते ही)** मैं······मैं मालकिन ? मैं तो समझता हूँ मैं पागल नहीं हूँ।

**[कपिला कुछ न कह चुपचाप उस तोल को देखती है। अब अच्छेलाल मक्खन को माशे और रत्तियों से तोल रहा है। चौथाई रत्ती के लिए कुछ खस-खस के दानों को काँटे के एक पलवे में डालता है। जब जिस पलवे में मक्खन है, वह कुछ भारी रहता है, तब एक पतली-सी चाँदी की सींक से उसके मक्खन को निकालता है।]**

**कपिला :** मक्खन की तोल रत्तियों और खसखस के दानों से

होती है !

**अच्छेलाल :** हाँ, मालकिन ! हर हफ़्ते चौथाई रत्ती बटर कम किया जाता है और चौथाई रत्ती के लिए खसखस के दानों के सिवा और कोई बाँट मिलते ही नहीं ।

**कपिला :** मुझे अब इसमें थोड़ा भी सन्देह नहीं कि या तो तू पागल हो गया है, या तेरे मालिक ।

**अच्छेलाल :** (**अपना काम जारी रखते हुए**) मैं···मैं तो, मालकिन, बिल्कुल···कितई पागल नहीं हूँ ।

**कपिला :** तब तेरे मालिक हैं !

[**अच्छेलाल कोई उत्तर नहीं देता । कपिला चुपचाप उस तोल को देखती रहती है । अब अच्छेलाल फलों के छिलके की तोल पर पहुँचता है ।**]

**कपिला :** और फल न खाकर फलों के छिलके खाते हैं ?

**अच्छेलाल :** जी हाँ, सान्टफक बकले ही हैं ।

[**फिर कपिला कुछ नहीं कहती । कुछ देर फिर निस्तब्धता । अब खली तुलना शुरू होती है ।**]

**कपिला :** और खली सबसे ज़्यादा ?

**अच्छेलाल :** जी हाँ, जितना सब खाना उतनी अकेली खली । इसमें सबसे जादा विटमनी हैं ।

**कपिला :** विटमनी ! विटमनी क्या ?

**अच्छेलाल :** सो तो मैं नहीं जानता; कोई ख़ास तरह की मणियाँ होंगी ।

**कपिला :** मणियाँ ?

**अच्छेलाल :** जी हाँ, जैसे मोती, पन्ना, मानक की भस्में, आँखों से राख सी दिखतीं पर वैद्यों, हकीमों की राय से ताक़त पहुँचाती हैं, उसी तरह ये भी आँखों से न दिख ताक़त पहुँचाती होंगी। (**कुछ रुककर**) मालकिन, यह सब डाक्टर गोपाल नंदन को मालूम है।

**कपिला :** (**कुछ विचारते हुए**) समझी; तो डाक्टर गोपाल नंदन ने कच्चे गेहूँ, भीगे चने, चोकर, फलों के छिलके और खली, मिलाकर उनके मनुष्य के शरीर के योग्य नहीं; पर उनके नाम के लायक खाना बना दिया है। मेरे लिए भी शायद इसी प्रकार के खाने का नुस्ख़ा तैयार होगा, क्योंकि मेरा नाम भी तो कपिला है न ?

**अच्छेलाल :** (**कपिला की ओर देखते हुए**) मैं समझा नहीं, मालकिन !

**कपिला :** यह तेरे समझने की बात नहीं, उनके समझने की बात है, अच्छेलाल !

[**अच्छेलाल कोई उत्तर न देकर सब रक़ाबियों और कटोरियों को व्यवस्थित रूप से जमाता है। कुछ देर फिर निस्तब्धता।**]

**कपिला :** तो तेरे मालिक ससुराल से आयी हुई यह मिठाई, नमकीन, मुरब्बे, आचार कुछ न खायँगे ?

**अच्छेलाल :** सो तो मैं कैसे कह सकता हूँ, मालकिन; पर· · ·पर (**चुप हो जाता है।**)

**कपिला :** पर क्या ?

**अच्छेलाल :** मैं यह कह रहा था कि इन सब चीज़ों को वे डडं-

फड्स कहते हैं।

**कपिला** : डड-फड्स क्या ?

**अच्छेलाल** : मुर्दाखाने !

**कपिला** : मुर्दाखाने ! याने··याने ?

**अच्छेलाल** : याने·····याने··

[**बच्छराज का प्रवेश।**]

**बच्छराज** : (**टेबिल के पास आकर अपने भोजन और डिब्बों, शीशियों को देख, कपिला से**) ओ ! सचमुच मैं ससुर जी और सास जी का बड़ा अनुगृहीत हूँ, कि उन्होंने यह सारा बेशक़ीमती सामान मेरे लिए भेजा; किन्तु···किन्तु, डियर, यह सब डेड् फ़ड्स की संज्ञा में हैं। विटेमिन 'ए' से लेकर 'जेड तक, जितने अब तक निकले और निकल जाने वाले हैं, सबसे रहित। किसी··किसी को भी, तुम्हें तक, सास, ससुर जी को भी इन सब चीज़ों को नहीं खाना चाहिए, अरे ! छूना तक नहीं चाहिए। (**अपने खाने की ओर संकेत कर**) वह है साइन्टिफ़िक फ़ूड। सौ वर्ष तक जीने, नीरोग रहने, शरीर को फूल-सा हलका और सुन्दर रखने, चिड़िया के सदृश फुर्तीलापन लाने, दिल और दिमाग़ को ऋषि-महर्षियों के सदृश बनाने और अर्जुन के सदृश बल पाने के लिए ठीक खाना सब से ज़रूरी है। ठीक खाने के लिए आवश्यक बातें हैं—अग्नि का बहिष्कार, अल्पाहार, कम्पैटिबिलिटी, प्रपोर्शन की स्टैबिलिटी और पीने शब्द के स्थान पर चबाने शब्द की नियुक्ति। (**कुर्सी पर बैठते हुए मुस्कराकर**) अभी

तुम इस सब मामले को अच्छी तरह समझ न सकोगी। इसके लिए मुझे तुम्हें कई लैक्चर देने होंगे; हाँ दूसरों से तुम जल्दी समझोगी, क्योंकि तुम पढ़ी-लिखी हो। फिर मेरे शरीर को देखकर भी तुम समझ सकती हो। हर हफ़्ते में दो-तीन पाउंड घट रहा हूँ। शरीर फूल-सा हल्का हो रहा है, पर साथ ही मुझ में चिड़िया-सा फुर्तीलापन आ रहा है। दिल और दिमाग़ ताज़े हो रहे हैं। शरीर में सच्ची ताकत आ रही है। **(कच्चे गेहूँ चबाते हुए)** बैठो, मैं सब···सब तुम्हें समझाऊँगा।

**[कपिला दूसरी कुर्सी पर बैठती है।]**

**लघु यवनिका**

## दूसरा दृश्य

स्थान : बच्छराज का भोजनालय

समय : सन्ध्या

[ दृश्य वैसा ही है जैसा पहले दृश्य में था। पर इस समय टेबिल के चारों ओर की कुर्सियाँ भरी हुई हैं। हर कुर्सी के सामने दो-दो बड़े थाल रखे हैं। दोनों के बीच में मेनू के चार्ट की जगह गोपाल नंदन के नोट्स छोटे-छोटे स्टैन्ड्स पर टँगे हैं। एक थाल में वैज्ञानिक भोजन है और दूसरे में कपिला के मैके से आया हुआ। बच्छराज की कुर्सी के सामने सिर्फ एक वैज्ञानिक भोजन का थाल है। मेहमानों में डाक्टर गोपाल नंदन भी हैं। वैज्ञानिक भोजन बच्छराज के सिवा और कोई नहीं छूता। सब लोग मिठाई, नमकीन आदि पर टूटे हुए हैं। हाँ, डाक्टर गोपाल नंदन, जब कभी बच्छराज उनकी ओर देखता है, तब मिठाई, नमकीन के थाल में से हाथ हटा वैज्ञानिक भोजन के थाल में से जल्दी से कुछ खाने लगता है, पर ज्योंही बच्छराज की दृष्टि वहाँ से हटती है, त्योंही फिर मिठाई, नमकीन पर टूट पड़ता है। ]

**एक मेहमान** : बहूजी के प्रवेश का यह दिन मुझे तो हमेशा याद रहेगा।

**दूसरा** : हाँ, हाँ, क्यों नहीं, क्यों नहीं, दो-दो तरह का इतना सुंदर भोजन !

**तीसरा** : एक पूरा वैज्ञानिक और दूसरा इतना स्वादिष्ट।

**बच्छराज** : पर वैज्ञानिक भोजन के थाल में तो आप लोगों ने हाथ भी नहीं लगाया।

**गोपाल नंदन** : इसके लिये टेस्ट कल्टीवेट करना पड़ता है, बच्छराज जी, बात यह है कि हम लोगों ने अस्वाभाविक और कृत्रिम भोजन की ऐसी बुरी आदत डाल ली है कि स्वाभाविक और अकृत्रिम भोजन अच्छा ही नहीं लगता।

**चौथा** : बेशक, बेशक।

**पाँचवाँ** : पर, डाक्टर साहब, रोटी, दलिया इत्यादि आग पर बनी हुई चीजें, उबली हुई तरकारियाँ और सब तरह के फल तो नये से नये वैज्ञानिक अनुसन्धानों के अनुसार भी खाये जा सकते हैं न? यहाँ के वैज्ञानिक थाल में तो सिर्फ़ कच्ची चीज़ें तरकारियों में केवल भाजियाँ और फलों के छिलके भरे हैं।

**गोपाल नंदन** : हाँ, मैं तो······

**बच्छराज** : **(बीच ही में)** आप ठहरिए, डाक्टर, मैं इसका रहस्य समझता हूँ। देखिए, साइन्टिफ़िक रिसर्चेज़ अभी हो रहे हैं, पूरे नहीं हुए। वैज्ञानिकों का कथन है कि आग पर बनी हुई चीज़ों से कच्ची चीज़ें श्रेष्ठ हैं, तरकारियों में भाजियाँ उत्तम और फलों में उनके छिलके सर्वोत्तम। आप देखेंगे अगली रिसर्चों में आग के कंप्लीट बायकाट के लिए कहा जायगा। तरकारियों में शेष तरकारियाँ छोड़कर, भाजियाँ और फलों में, उनके गूदे और रस को छोड़, सिर्फ़ छिलकों को

खाने की हिदायत होगी। आई हैव स्टोलन ए मार्च ऑन फ्यूचर रिसर्चेज़।

**छठवाँ :** ओह! काँग्रेच्यूलेशन्स! हार्टी काँग्रेच्यूलेशन्स।

**बच्छराज :** और देखिए, डाक्टर गोपाल नंदन, आपने मुझे आदर्श भोजन के सम्बन्ध में पाँच बातें बतायी थीं—अग्नि का बहिष्कार, अल्पाहार, काम्पैटिलिटी, प्रपोर्शन की स्टैबिलिटी और पीने शब्द के स्थान पर चबाने शब्द की नियुक्ति!

**गोपाल नंदन :** जी हाँ।

**बच्छराज :** पर आपने इन बातों के सबब नहीं बताये थे। मैंने इनके सच्चे कारणों को सोचा है।

**गोपाल नंदन :** अच्छा?

**बच्छराज :** देखिए, आग के बहिष्कार का कारण है हर प्राणी में स्वाभाविक जठराग्नि का रहना। दो बार कोई चीज़ गरम करने से वैज्ञानिक दृष्टि से उसमें दोष आ जाते हैं, अतः भीतरी अग्नि के रहते बाहरी अग्नि का उपयोग भोजन में कैसे किया जा सकता है?

**गोपाल नंदन :** वाह! वाह! वाह! वाह! कैसा सुन्दर अनुसंधान है।

**पहला :** बेशक, बेशक।

**बच्छराज :** अल्पाहार का सबब यह है कि आहार से शरीर की वृद्धि होती है और निराहार रहने से दिमाग़ की। पशु इसीलिए अधिक खाता है कि उसके शरीर की ही वृद्धि हो सकती है, दिमाग़ की नहीं। मनुष्य ही रैशनल प्राणी है।

अल्पाहार करते-करते मनुष्य को तो निराहार हो जाना चाहिए। तभी दिमाग़ पूरी तरह चमकता है। ऋषि-महर्षियों ने बड़े-बड़े अनुसंधान निराहार तपस्या के बाद ही किये हैं।

**गोपाल नंदन** : क्या बात है, क्या बात है, अद्‌भुत खोज है। आपकी, अद्‌भुत खोज !

**दूसरा** : निःसन्देह, निःसन्देह।

**बच्छराज** : कम्पैटिबिलिटी तो हमारे भारत में जितनी थी उतनी कहीं नहीं। विश्वामित्र जब राजर्षि से ब्रह्मर्षि हुए तब उन्होंने एक हज़ार वर्ष तक की तपस्या में केवल लोहभस्म, एक ही चीज़ का भक्षण किया था। धीरे-धीरे मनुष्य को एक ही चीज़ खाने का अभ्यास करना चाहिए, दो चीज़ें तक साथ में नहीं खानी चाहिएँ।

**गोपाल नंदन** : आपने ठीक, बिल्कुल ठीक सोचा।

**तीसरा** : बिल्कुल, बिल्कुल।

**बच्छराज** : पीने के स्थान पर चबाना शब्द कितना ज़रूरी है, इसका पता हमें जानवरों की जुगाली से लगता है। वे खाने और पीने के सारे सामान को पेट में डाल फिर उसे मुँह में ला जुगाली करने की नैसर्गिक शक्ति रखते हैं। इसलिए उसे हर ग्रास या घूँट को एक सौ आठ बार चबाना ही चाहिए और पीने शब्द का स्थान आपने जिस तरह चबाने को दिया है, उससे भी अच्छा होगा चबाने शब्द का स्थान जुगाली को दिया जाय, क्योंकि जुगाली खाये और पिये दोनों प्रकार के सामान के मिलने के बाद की जाती है।

**गोपाल नंदन :** आप में रिसर्च की नैसर्गिक···नैसर्गिक शक्ति है।

**चौथा :** सर्वथा, सर्वथा।

**बच्छराज :** प्रपोर्शन की स्टैबिलिटी के सम्बन्ध में मैं अभी सोच रहा हूँ।

**पाँचवाँ :** प्रपोर्शन की स्टैबिलिटी क्या है सो तो मैं अभी नहीं समझा, पर (**आम और केले के छिलके उठाकर**) इन छिलकों में विटेमिन की जितनी स्टैबिलिटी होगी उसे देखते हुए मेरे ख़्याल से कटहर, अनार, नारियल आदि के छिलकों में विटेमिन कहीं अधिक स्टेबिल रहते होंगे। मैं सजैस्ट करता हूँ कि वैज्ञानिक भोजन में इन्हें भी स्थान दिया जाय।

**छठवाँ :** और मैं एक चीज़ सजैस्ट करता हूँ।

**बच्छराज :** ज़रूर, ज़रूर।

**छठवाँ :** मेरा ख्याल है कि आगे की रिसर्चेज़ के द्वारा वैज्ञानिक भोजन में एक बहुत बड़ा खाद्य-पदार्थ और जोड़ा जायगा।

**बच्छराज :** कौनसा ?

**छठवाँ :** दूर्वादल।

[**बच्छराज को छोड़कर सब लोग हँस पड़ते हैं। गोपाल नंदन केवल मुस्कराता है।**]

**छठवाँ :** (**मुस्कराते हुए**) नहीं, नहीं, हँसने की बात नहीं। मुझे विश्वास है कि शोध के बाद पता लगेगा कि दूर्वादल में 'ए' से 'जेड' तक सारे विटेमिन हैं और इसका कारण है··

**बच्छराज :** क्या ?

**छठवाँ :** प्राचीन भारतीय सभ्यता का हर पहलू विज्ञान की नींव

पर खड़ा है। मामूली-मामूली बातों तक में वैज्ञानिक रहस्य भरे हैं। मसलन हम गोबर से ज़मीन लीपते हैं। गोबर से ज़्यादा एन्टीसैप्टिक शायद कोई चीज़ ही नहीं। हमारे चौक में तुलसी धरा रहता है। तुलसी से अधिक हवा को साफ करने वाला कोई पौधा नहीं। हमारे यहाँ गणेश जी का पूजन सबसे पहले क्यों होता है, आप लोग जानते हैं ?

**पहला :** आप ही बताइए।

**छठवाँ :** विद्या और बुद्धि में वे सब देवताओं से श्रेष्ठ हैं। सृष्टि में सबसे बुद्धिशाली दो प्राणी हैं—मनुष्य और हाथी। दोनों का गणेश जी के शरीर में मेल है। आप जानते हैं उनका मुख्य भोजन क्या है।

**दूसरा :** दूर्वादल।

**छठवाँ :** बिलकुल ठीक। अरे भाई, भारतीयों ने जिस चीज़ का पता हज़ारों वर्ष पहले लगाया, विज्ञान ने आज। यह विटेमिन थ्योरी यथार्थ में हमारी थ्योरी है। तपोवनों में, जहाँ हर ज्ञान का अनुसंधान हुआ, वहाँ के ऋषि, मुनि, ब्रह्मचारी कच्चे कन्दमूल ही तो खाते थे। निरोग रहते थे। हज़ारों वर्ष जीते थे। हमारे विद्या और बुद्धि के देवता के प्रधान भोजन दूर्वादल में 'ए' से लेकर 'जेड' तक सारे विटेमिन होना ही चाहिए।

**बच्छराज :** (**अत्यन्त गम्भीरता से**) आप बिल्कुल ठीक कहते हैं। मैं तो विज्ञान को लीड करता हूँ। कल···कल से ही लीजिए, मैं दूर्वादल को अपने भोजन में अवश्य जोड़ूँगा और

थोड़ा बहुत नहीं, सब चीजों के बराबर खली रहती है, खली से दूना दूर्वादल होगा।

**[ सब लोग खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं। डाक्टर गोपाल नंदन अपना गला साफ करता है। ]**

**लघु यवनिका**

## तीसरा दृश्य

स्थान : बच्छराज के मकान में अच्छेलाल की कोठरी

समय : रात्रि

[**नौकरों के रहने के योग्य कोठरी है, पर काफी बड़ी। अच्छेलाल, उसकी स्त्री, और उसका एक बच्चा तथा बच्ची— छिलके निकले हुए फलों—आम, केले, संतरे, मोसंबी, सेब इत्यादि को, जो आज की दावत के कारण प्रचुर परिमाण में सब के बीच में रखे हैं, खूब खा रहे हैं। बच्चे तालियाँ बजा-बजा कर हँस और किलक रहे हैं।**]

**औरत :** अब तो पेट में जगह नहीं रही।

**अच्छेलाल : (बच्चों से)** और खावोगे ?

**बच्चा :** ना, बाबा; कै हो जायगी।

**बच्ची :** हाँ, हाँ, अब नहीं, अब नहीं।

**अच्छेलाल : (उठते हुए)** अच्छी बात है, मुहल्ले में बाँटे आता हूँ। **(हँसते हुए)** पर, इतना सबसे कह दूंगा मणि निकल गयी है, सूत रह गया है, मणि निकल गयी है, सूत रह गया है।

**यवनिका**

## उपसंहार

स्थान : बच्छराज का शयनागार

समय : प्रातःकाल

[शयनागार आधुनिक बेड-रूम के सदृश सुन्दरता से सजा है। दीवालें और छत रंगी हुई हैं। दीवालों के दरवाज़े और खिड़कियों से आकाश और वृक्षों के ऊपरी भाग दिखायी देते हैं, जिससे जान पड़ता है कि कमरा दूसरी या तीसरी मंज़िल पर है। आकाश में प्रातःकाल के सूर्य की रक्त रश्मियाँ दीखती हैं। एक दरवाज़े से नीचे उतरने के ज़ीने का कुछ हिस्सा दिखता है। दरवाज़े और खिड़कियों पर धूप-छाँह के रेशमी परदे पड़े हुए हैं। दीवालों पर कृष्ण-लीलाओं के अनेक रंगीन चित्र टँगे हैं। छत से दो बिजली की बत्तियाँ और एक पंखा झूल रहे हैं। बत्तियों पर रेशमी शेड हैं, जिनके किनारों पर पोत के काम की झालर हैं। जमीन पर कालीन है। एक ओर चाँदी के पायों का एक पलँग बिछा है और दूसरी तरफ एक कुशनदार सोफा सेट है तथा उसके बीच में रेशमी मेजपोश से ढँकी एक टेबिल। सुबह हो जाने पर भी बच्छराज पलँग पर लेटा हुआ है। उसका शरीर एक रेशमी दुलाई से ढँका है। चेहरा भर खुला है। उसका चेहरा एक दम उतरा हुआ है। आँखों के चार ओरों कालिमा तथा मस्तक पर शिकन दिखायी पड़ते हैं। कपिला जीने से

**बढ़ते हुए जल्दी-जल्दी आती है।]**

**कपिला : (बच्छराज के पलँग के निकट जा उसके सिर पर हाथ रखते हुए)** क्यों, कैसी तबियत है, आज उठोगे नहीं ?

**बच्छराज : (लम्बी साँस लेकर)** क्या कहूँ, उठा ही नहीं जाता।

**कपिला : (पलँग के एक कोने पर बैठते हुए)** उठा जाए कैसे ? पेट में कुछ पहुँचता हो तब न ! **(कुछ रुककर)** प्राणनाथ ! आप अपने हाथ से अपनी तबियत बिगाड़ रहे हैं।

**[बच्छराज कुछ न कहकर करवट ले कपिला की ओर पीठ कर लेता है। कुछ देर निस्तब्धता।]**

**कपिला : (उठकर पलँग के दूसरे बाजू जाकर)** मैं कहती हूँ मान जाइए। देखिए तो आँखों के चारों तरफ कैसी स्याही आगयी है। सिर पर कैसे शिकन पड़ गये हैं। **(पलँग के एक कोने पर बैठकर)** अभी···अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। अगर आप इस विटेमिन पिशाच से अपना पिंड छुड़ा लें, रोज़मर्रा का साधारण भोजन करने लगें, तो एक हफ़्ते में तबियत ठीक हो जायगी।

**बच्छराज :** लेकिन···लेकिन, डियर, साइन्स इतना झूठा हो सकता है ? उसकी थ्योरीज़ इतनी ग़लत सिद्ध हो सकती हैं ? मेरा खयाल है कि भोजन मेरी अस्वस्थता का कारण नहीं, इसका सबब कुछ दूसरा ही होना चाहिए।

**कपिला :** तो दूसरा सबब आख़िर है क्या ? बुखार आपको आता नहीं, दस्त आपको लगते नहीं, और कुछ होता नहीं, बिना किसी कारण के दिन पर दिन कमज़ोरी बढ़ती जाती है।

जिन फलों आदि के छिलके खा-खा कर आप अपनी यह हालत कर रहे हैं, उन फलों इत्यादि को खा-खा कर अच्छेलाल कैसे अच्छे हो रहे हैं, सो देखिए। मैं कहती हूँ साइन्स की ऐसी फ़ैड ही आपकी इस हालत का कारण है। प्राणनाथ, हमारे यहाँ कहा है—'अति सर्वत्र वर्जयेत'। आपने इस विटेमिन के मामले में अति कर डाली है।

**बच्छराज :** पर, प्यारी ! डाक्टर गोपाल नंदन को शक हो रहा है कि मुझे एपैन्डीसाइटिस हो रही है।

**कपिला :** **(क्रोध से)** गोपाल नंदन ! गोपाल नंदन ! एपैन्डीसाइटिस हो रही है ! अगर एपैन्डीसाइटिस भी हो रही होगी तो इसी भोजन की बदौलत। मैंने सुना है कि गांधी जी को भी एपैन्डीसाइटिस कच्चे गेहूँ खाने के कारण हुई थी। उनके आश्रम के और भी कुछ लोगों को इसी तरह के प्रयोगों के कारण इसी प्रकार की कुछ बीमारियाँ......

**बच्छराज :** **(बीच ही में)** लेकिन, डार्लिंग, डाक्टर, साइन्स और उसकी थ्योरीज़......

**कपिला :** **(और भी क्रोध से)** अरे जहन्नुम में भेजिए इन डाक्टरों, उनके साइन्स और थ्योरीज़ को। आप जानते हैं, मेरे मैके में यदि कभी बीमारी के कारण डाक्टर, वैद्य या हकीम को बुलाना पड़ता है तो उसकी बिदाई के वक्त क्या किया जाता है ?

**बच्छराज :** क्या ?

**कपिला :** जब वह दरवाज़े के बाहर हो जाता है तो जिस रास्ते से वह बाहर तक जाता है उसी रास्ते एक जलता हुआ लूघड़

दरवाज़े तक ले जाकर उस लूघड़ को दरवाज़े पर पत्थरों से मार-मार कर ठंडा किया जाता है, याने उसके आने के अशकुन को इस प्रकार जला दिया जाता है।

**बच्छराज** : (**कुछ विचारते हुए**) अरे! तुम तो मुझे एक बड़ी विचित्र बात की याद दिला रही हो।

**कपिला** : किस बात की ?

**बच्छराज** : जिस दिन डाक्टर गोपाल नंदन मेरी दिनचर्या तथा भोजन आदि के सम्बन्ध में नोट-बुक तैयार करके लाया उस दिन मैंने उससे एकाएक पूछा—समझाओ, इसमें क्या लूघड़ पत्थर लिखा है।

**कपिला** : (**कुछ प्रसन्नता से**) आपके मुँह से भगवान ने ठीक बात निकलवा दी। उसमें अवश्य ही लूघड़ पत्थर ही लिखा है। जला दीजिए उस नोट-बुक को और बिदा कीजिए उस डाक्टर गोपाल नंदन को भी एक लूघड़ और कुछ पत्थरों के साथ।

**बच्छराज** : (**सोचते हुए**) परन्तु, प्रिये, यदि साइन्स पर भी विश्वास न रखा जाय तो संसार में आख़िर विश्वास का आधार क्या रह जाता है ?

**कपिला** : साइन्स पर अविश्वास करने को मैं नहीं कहती।

**बच्छराज** : तब ?

**कपिला** : मैं कहती हूँ साइन्स का फ़ैड छोड़ने के लिए। साइन्स के अनुसार भी स्वाभाविक जीवन इसे नहीं कहते जो आप चला रहे हैं, अकृत्रिम भोजन वह नहीं है जो आप खा रहे

हैं। इस प्रकार का जीवन चला, ऐसा भोजन कर, हमारे पूर्वज सौ-सौ वर्ष नहीं जिये। नीरोग नहीं रहे। उनका शरीर फ़ूल-सा हलका और सुन्दर नहीं रहा। उनके दिल और दिमाग़ ताज़े नहीं रहे। उनमें अर्जुन-सा बल नहीं रहा। फैडिस्ट न होइए। अस्वाभाविक जीवन बिताना बुरा है, मानती हूँ, पर किसी बात की अति करना भी उतना ही बुरा है, और एक······एक बात और करनी होगी।

**बच्छराज** : क्या ?

**कपिला** : हमें अपने नाम भी बदलने होंगे। मैं अपना नाम कपिला की जगह कमला रखूँगी और आप अपना नाम (**एक काग़ज़ का चिट ब्लाऊज़ के जेब से निकाल बच्छराज को दे**) यह रखिए क्योंकि मैं मुँह से आपका वर्तमान और भविष्य नाम क्यों कर लूँ।

**बच्छराज** : (**काग़ज़ लेकर उसे पढ़कर**) पद्मराज ?

**कपिला** : जी हाँ।

**बच्छराज** : पर यह क्यों, डियर ?

**कपिला** : यह इसलिए जिससे आगे चल कर गोपाल नंदन के सदृश कोई गो-नंदन हमें कच्चे मूँग, अंकुरित चने, चोकर, खली और दूर्वादल की सानी न······न खिला सके।

[**बच्छराज ज़ोर से हँस पड़ता है। कपिला भी हँसने में उसका साथ देती है।**]

**यवनिका**

# वह मरा क्यों ?

## पात्र, स्थान

### मुख्य पात्र

**हरदत्त** : कन्टूनमेन्ट बोर्ड का वाइस प्रेसीडेन्ट

**कर्नल सिमसन** : मिलिटरी का बड़ा डाक्टर

**कैप्टिन तारासिंह** : मिलिटरी का छोटा डाक्टर

### स्थान

एक कन्टूनमेन्ट

## पहला दृश्य

स्थान : कन्टूनमेन्ट कचहरी का एक कमरा

समय : प्रातःकाल

**[कमरा आधुनिक आफ़िस के ढंग पर सजा हुआ है। राइटिंग टेबिल की आफ़िस चेअर पर हरदत्त बैठा हुआ है, उसके सामने की दो कुर्सियों पर कर्नल सिमसन और केप्टिन तारासिंह। तीनों पश्चिमी ढंग की पोशाक पहने हैं। उम्र के सब अधेड़ हैं। हरदत्त हिन्दू, सिमसन अंग्रेज और तारासिंह सिख है]**

**सिमसन** : वो मरा क्यों ?

**तारासिंह** : हाँ, वह मरा क्यों ?

**हरदत्त** : सचमुच वह मरा क्यों ?

**तारासिंह** : ग़ज़ब हो गया, सर !

**हरदत्त** : सितम हो गया, हुज़ूर !

**सिमसन** : थर्टी फ़ाइव ईयर्स का एज में गोरा सोलजर का मरना बेशक एक टाजुब का बाट !

**तारासिंह** : पोस्ट मार्टम में भी कोई पता नहीं लगा, सर। बैरैक्स में कोई एपेडेमिक नहीं और सेनीटेशन के इन्तज़ाम की आपने जाँच करा ली।

**सिमसन** : कल राट टक वो बेशक आचा ठा।

**तारासिंह** : हाँ, सर, शाम को वैजीटेबिल मारकेट गया, स्वीट-

मीट शाप्स पर बैठा, और सिनेमा देखा।

**सिमसन** : इन सब जगा का जाँच करना होगा।

**हरदत्त** : तब अभी चलिए, हुज़ूर, जिससे दोपहर के पहले जाँच ख़त्म हो जाय।

**सिमसन** : बेशक और एकडम जाना चाये। जिस टरा कमसरियट का ठेकेदार को हम लोग ने एकडम हवालाट में बन्ड कर डिया उसी टरा इन सब जगा का जाँच बी एकडम होना चाये।

**तारासिंह** : बिना ख़बर दिये, सर, जिससे अगर कहीं कुछ गड़-बड़ हो तो वहाँ के लोग उसको ठीक न कर सकें।

**सिमसन** : बेशक ठीक।

**[तीनों खड़े हो जाते हैं।]**

**लघु यवनिका**

## दूसरा दृश्य

स्थान : कन्टूनमेन्ट का वैजीटेबिल मारकेट

समय : प्रातःकाल

**[मारकेट का कुछ हिस्सा दिखायी देता है जहाँ फल, साग-भाजी इत्यादि की दूकानें लगी हैं। कुछ कूँजड़े और कूँजड़िन दूकानों पर बैठे हुए हैं। कुछ ख़रीददार इधर-उधर आ जा रहे हैं और कुछ खड़े होकर साग-भाजी, फल इत्यादि ख़रीदते हैं। दूर पर हरदत्त, सिमसन और तारासिंह प्रवेश करते हुए दिखायी पड़ते हैं। ये लोग एक-एक दूकान को ग़ौर से देखते हुए धीरे-धीरे नज़दीक आ रहे हैं। इन्हें देखकर दूकानदार खड़े हो होकर झुकझुक कर सलाम करते हैं और कई ख़रीददार भी। कुछ ख़रीददार इनका रास्ता छोड़कर अलग खड़े हो जाते हैं। सिमसन निकट की कूँजड़े की एक छोटी सी दूकान पर रुक जाता है। यह कूँजड़ा छोटे-छोटे हरे रंग के कुम्हड़े बेच रहा है, जो आधे-आधे कटे हुए उल्टे रखे हैं।]**

**सिमसन : (तारासिंह को एक तरफ़ लेकर उन कुम्हड़ों को दिखाकर धीरे से)** वो क्या है ?

**तारासिंह : (उसी तरफ़ ग़ौर से देखते हुए)** वो, सर ?

**सिमसन :** हाँ।

**तारासिंह : (कुछ सोचते हुए)** कुछ ठीक समझ में नहीं आता, सर।

**सिमसन** : टारटाइज़ हो सकटा ।

**तारासिंह** : टारटाइज़ ?

**सिमसन** : बेशक कच्चा टारटाइज़ ।

[**वह कुँजड़ा इन लोगों को इस तरह ग़ौर से अपनी तरफ़ देखते और बातें करते हुए देखकर जल्दी-जल्दी अपने कुम्हड़े बाँध कर वहाँ से उठता है ।**]

**सिमसन** : ओ ! वो भागटा !

**तारासिंह** : (**ज़ोर से उस कुँजड़े से**) ठैरो, तुम्हारे सामान की जाँच करना है ।

[**कुँजड़ा भागता है। तारासिंह उसके पीछे दौड़ता है। मार्केट में खलबली मच जाती है ।**]

**सिमसन** : टारटाइज़, वह बेशक टारटाइज़ है ।

**हरदत्त** : टारटाइज़ क्या होता है, हुज़ूर ?

**सिमसन** : वो जो पानी में रेटा है ।

**हरदत्त** : पानी में···(**रुक जाता है ।**)

**सिमसन** : आप समजा नेई । (**हाथ की उँगलियाँ फैला फिर उन्हें सिकोड़ और फिर फैलाकर**) जो इस टरा अपना नेक् और फ़ीट को बार निकालटा और अन्डर डालटा और फिर बार निकालटा ।

**हरदत्त** : कोई जानवर ?

**सिमसन** : बेशक जानवर । आप अबी बी नेई समजा । टारटाइज़ मिस्टर हरडट्ट, टारटाइज़ । और ये डोकानडार बेशक कच्चा टारटाइज़ बेचटा ठा ।

**हरदत्त : (आश्चर्य से)** कच्चा टारटाइज़, हुज़ूर ?

**सिमसन :** बेशक कच्चा टारटाइज़, इसीलिए टो वो भागा और इसी को खाकर वो गोरा मरा।

**हरदत्त :** इसी को खाकर वह गोरा मरा ?

**सिमसन :** बेशक इसी को खाकर।

**[तारासिंह कुँजड़े को पकड़कर लाता है। कुम्हड़े कुँजड़े के कपड़े में बँधे हैं।]**

**सिमसन :** टुम टारटाइज़ बेचटा ?

**कुँजड़ा : (घबड़ाकर डरते हुए)** टार···टार···टार !

**सिमसन : (चिल्लाकर)** टार टार क्या ? बेशक कच्चा टारटाइज बेचटा। टोमने गोरा सोल्जर का ख़ून किया।

**कुँजड़ा : (और भी घबड़ाकर)** ख़ून !

**सिमसन :** बेशक ख़ून।

**कुँजड़ा : (एकदम घबड़ाकर काँपते हुए)** टार···टार···ख़ून।

**तारासिंह :** टारटाइज़ माने कछुआ, समझा, कच्चा कछुआ।

**कुँजड़ा : (हिम्मत से)** कछुआ नहीं, हुज़ूर, मैं तो कुम्हड़ा बेचता हूँ।

**सिमसन :** टारटाइज़ को हिन्डोस्टानी में कुम्हड़ा केटा ?

**कुँजड़ा : (अपनी गठरी खोलकर कुम्हड़ों को दिखाते हुए)** हुज़ूर ये कछुए नहीं, कुम्हड़े हैं।

**[सिमसन एक कुम्हड़े को हाथ में लेकर आश्चर्य से उसे इधर-उधर घुमाकर देखता है, कुँजड़ा आँख मिचकाते हुए अपने एक साथी की तरफ़, तारासिंह मुँह फाड़कर सिमसन की**

ओर और हरदत्त मुस्कराते हुए मुँह फेरकर एक दूसरे दूकान-दार की तरफ़ देखता है । बाज़ार में कई लोग मुँह फेर-फेर कर हँसते हैं ।]

सिमसन : (गम्भीरता से सोचते हुए) टब वो मरा क्यों ?

लघु यवनिका

## तीसरा दृश्य

स्थान : बाज़ार

समय : प्रातःकाल

[सड़क के एक तरफ़ दूकानें दिखायी देती हैं। ज्यादातर दूकानें हलवाइयों की हैं। अपनी-अपनी दूकानों पर दूकानदार बैठे हैं। अनेक मनुष्य आ-जा रहे हैं। कुछ लोग दूकानों पर खड़े होकर सौदा ख़रीद रहे हैं। दूर पर हरदत्त, सिमसन और तारासिंह आते हुए दिखायी देते हैं। ये लोग ग़ौर से हलवाइयों की दूकानें देखते-देखते नजदीक आ रहे हैं। इन्हें देखकर कई दूकानदार खड़े हो होकर इन्हें सलामें करते हैं। कई आने-जाने वाले भी खड़े हो जाते हैं और इनमें से भी कई इन्हें सलाम करते हैं। कुछ निकट आकर तीनों खड़े हो जाते हैं।

**सिमसन** : (ज़ोर से) कल शाम को हमारा रेजीमेन्ट का एक गोरा सोल्जर ने किसका डोकान का मिठाई खाया ?

[दूकानदार चकपकाकर एक दूसरे की तरफ़ देखते हैं। सिमसन की बात का कोई उत्तर नहीं देता।]

**सिमसन** : (ज़ोर से) टुम लोग अगर नेई बटलायगा टो टुम सबका डोकान बन्ड करा डिया जायगा।

[दूकानदार फिर सब एक दूसरे की तरफ़ देखते हैं। एक समझदार-सा हलवाई दूकान छोड़कर इन तीनों के पास आता

**है और सलाम करता है ।]**

**सिमसन :** टोमारा डोकान का खाया ?

**हलवाई :** किस सोल्जर ने हुज़ूर ?

**सिमसन :** जो राट को मर गिया ?

**हलवाई :** यह मैं या हम लोगों में से कोई भी, कैसे कह सकते हैं कि उन सोल्जर साहब ने मिठाई खायी या नहीं और खायी तो किसकी दूकान से ?

**सिमसन :** क्यूँ ?

**हलवाई :** हुज़ूर, हम लोग ख़रीददारों के नाम तो लिखते नहीं हैं ?

**सिमसन :** **(आश्चर्य से)** नाम नेई लिखटा, टो बिल कैसा बनाटा ?

**हलवाई :** बिल !

**सिमसन :** बेशक बिल । चूआ का बिल नेई, खाना का बिल ।

**तारासिंह :** हाँ, भाई, रुक्के पर हिसाब लिख ख़रीददारों को उसे देकर ही तो रुपया वसूल करते होगे ?

**हलवाई :** हम लोग कोई बिल नहीं बनाते, हुज़ूर ।

**सिमसन :** खाने का बिल नेई बनाटा ?

**हलवाई :** जी, नहीं ।

**सिमसन :** टो रुप्या कैसा लेटा ?

**हलवाई :** सौदा देते हैं, हुज़ूर, और हाथ के हाथ रुपया ले लेते हैं ।

**सिमसन :** ओ ! टुम बेशक जानटा कि उस सोल्जर ने किसका डोकान से मिटाई खाया ।

**हलवाई :** हुज़ूर, मैं बिलकुल नहीं जानता ।

**सिमसन :** टोमारा डोकान का कल किसी सोल्जर ने मिटाई खाया ?

**हलवाई :** कई ने, हुज़ूर ।

**सिमसन :** टो जो मर गिया उसने बी बेशक टोमारा डोकान का मिटाई खाया । टोमने उसका ख़ून किया ।

**हलवाई :** **(घबड़ाकर)** ख़ून !

**सिमसन :** बेशक ख़ून ।

**हलवाई :** **(और भी घबड़ाकर)** हुज़ूर ।

**सिमसन :** हम टोमारा डोकान का जाँच करेगा ।

**[सिमसन आगे बढ़कर उस हलवाई की दूकान की मिठाइयाँ देखता है । तारासिंह भी उसकी मदद करता है । हरदत्त खड़ा रहता है । बहुत से आदमी इधर-उधर खड़े हो जाते हैं । बहुत से घबड़ाकर इनकी तरफ देखते हैं ।]**

**सिमसन :** **(पिश्ते की हरी बरफ़ियों को देखकर)** ये सड़ा मिटाई बेचटा ?

**हलवाई :** सड़ी मिठाई !

**सिमसन :** बेशक सड़ा मिटाई । इसी को खाने के सबब वो गोरा मर गिया ।

**तारासिंह :** **(सिमसन को एक तरफ़ लेकर धीरे से)** सर, वह सड़ी मिठाई नहीं है, वह तो बड़ी बढ़िया हिन्दुस्थानी मिठाई है ।

**सिमसन :** बरिया हिन्डोस्टानी मिटाई ?

**तारासिंह** : हाँ, सर, पिश्ते की बरफी ।

**सिमसन : (गंभीरता से सोचते हुए)** तब वो मरा क्यों ?

**[हरदत्त इनके निकट ग्राता है । ग्रधिकांश मनुष्य इनकी तरफ़ देखते हैं ।]**

**लघु यवनिका**

## चौथा दृश्य

स्थान : सिनेमा हाल

समय : प्रातःकाल

[ **सिनेमा हाल का कुछ हिस्सा दिखायी देता है। एक तरफ़ के दरवाज़े, उन पर 'वेन्टीलेटर', सीलिंग से लटकते हुए बिजली के कुछ पंखे और बैठने की बेंचों की कुछ क़तारें दिखती हैं। हरदत्त, सिमसन और तारासिंह एक दरवाज़े से प्रवेश करते हैं। उनके साथ सिनेमा का मैनेजर है। वह नौजवान आदमी है और पश्चिमी ढंग की पोशाक पहने है।** ]

**सिमसन : (आगे आकर सिनेमा के मैनेजर से)** टो आप नेई के सकटा कि वो सोल्जर किस जगा बेटा ठा ? और उसका चारों टरफ़ कोन लोग बेटा ठा ?

**मैनेजर :** मैं तो यह भी नहीं कह सकता कि वह सिनेमा देखने आया था या नहीं !

**सिमसन :** वो बेशक आया ठा, ये हम के सकटा, इसमें आपका नो नेई चल सकटा, नो केने से आपका बचट बी नेई हो सकटा।

**मैनेजर :** बचत का सवाल नहीं है, कर्नल साहब, सवाल तो यह है कि............

**सिमसन : (बीच ही में ज़ोर से)** हम इस मामला पर बेहस नेई

करना चाटा, हम ये जानना चाटा कि वो कहाँ बेटा ठा ? और उसका चारों तरफ़ कोन लोग ठा ?

**मैनेजर :** मैं इसके सिवाय और कुछ नहीं कह सकता कि सोल्जर ज़्यादातर आठ आने की सीटों पर बैठते हैं। वह आया होगा तो इसी क्लास में बैठा होगा।

**सिमसन :** सोल्जर्स के सिवा डूसरा लोग बी इस क्लास में बेटा ठा ?

**मैनेजर :** बहुत लोग।

**सिमसन :** ओ ! टो उसको किसी का कोई इन्फ़ैक्शन लगा।

**मैनेजर :** इन्फ़ैक्शन, कर्नल साहब ?

**सिमसन :** बेशक इन्फ़ैक्शन। इन्फ़ैक्शन साँस से लग सकटा। हवा एक का बॉडी को छूकर डोसरा का बॉडी छुए, उससे लग सकटा।

**[कुछ देर सब चुप रहते हैं।]**

**सिमसन :** **(कुछ सोचते हुए)** कल बोट भीर ठा ? आप झूठ नेई बोलेगा, क्यूँकि किटना आडमी ठा, इसका पटा टिकिट का बिकरी से लग जाइगा।

**मैनेजर :** मैं झूठ हरगिज़ नहीं बोलूँगा, कर्नल साहब, कल काफ़ी भीड़ थी।

**सिमसन :** टो वो भीर में सफ़ोकेट हो गिया।

**मैनेजर :** पर पंखे चल रहे थे, कर्नल साहब।

**सिमसन :** **(पंखों की तरफ़ देखकर)** सब पंखा चलटा ठा।

**मैनेजर :** जी हाँ।

**सिमसन** : ज़ोर से ?

**मैनेजर** : जी हाँ, पूरी स्पीड से ।

**सिमसन** : ओ ! टो वो सरडी खा गिया ।

**मैनेजर** : इस गरमी की मौसम में बिजली के पंखों से इतनी सरदी तो किसी को नहीं लग सकती, कर्नल साहब, कि वह सिनेमा से लौटते ही मर जाय ।

**सिमसन** : ये आप ले मैन क्या समजटा । इन बाटों को हम डाक्टर लोग जानटा, आप नेई जानटा कि बिजली का पंखा कबी कबी केटना नोकसान पोंचाटा ।

[**कुछ देर सब लोग चुप रहते हैं ।**]

**सिमसन** : (**कुछ सोचते हुए**) कल का पिक्चर केसा ठा ?

**मैनेजर** : अच्छा था ।

**सिमसन** : सेनसेशनल ?

**मैनेजर** : हाँ, काफ़ी सेनसेशनल था ।

**सिमसन** : टो, हार्ट पर उसका बेशक असर हो सकटा, उससे मर सकटा ।

**मैनेजर** : इतना सेनसेशनल नहीं था, कर्नल साहब, कि एक सोल्जर के हार्ट पर इतना असर हो कि वह सिनेमा से लौटते ही मर जाय ।

**सिमसन** : (**कुछ सोचते हुए**) अगर पिक्चर डिप्रेसिंग ठा टो उससे बी हार्ट बेशक सिंक हो सकटा ।

**मैनेजर** : (**चिढ़कर**) मैं क्या कहूँ ।

**सिमसन** : (**कुछ सोचते हुए**) डेखिए, मिस्टर मैनेजर, आप

फ़ौरन पिक्चर का ट्रायल डीजिए।

**तारासिंह** : यह बिलकुल ठीक है, सर।

**हरदत्त** : हाँ, देखें उससे हम लोगों के दिल पर भी कैसा असर पड़ता है।

**मैनेजर** : बहुत अच्छा, मैं अभी ट्रायल देता हूँ।

**सिमसन** : बेशक, आकिर वो मरा क्यों ?

**लघु यवनिका**

## पाँचवाँ दृश्य

स्थान : कन्टूनमेन्ट कचहरी का एक कमरा

समय : प्रातःकाल

[**कमरा पहले दृश्य वाला कमरा ही है। राइटिंग टेबिल की ऑफ़िस चेअर पर हरदत्त बैठा हुआ है। उसके सामने दस्तखत के लिए कई काग़ज़ रखे हैं। उसकी बग़ल में ऑफ़िस का हेड क्लार्क खड़ा है। क्लार्क की अवस्था क़रीब ५० वर्ष की है। पोशाक पश्चिमी ढंग की है।**]

**हरदत्त** : (**टेबिल पर रखे हुए एक काग़ज़ को देखते हुए**) तो इस आर्डर के मुताबिक़ मुझे भी चौबीस घंटे के भीतर अपना मकान ख़ाली करना पड़ेगा ?

**हेड क्लार्क** : जी हाँ, सारा कन्टूनमेन्ट ख़ाली होगा, तो आप ही अपने मकान में कैसे रहेंगे ?

**हरदत्त** : चौबीस घंटे के अन्दर लोगों को मय बीवी-बच्चों के कहीं रहने का इन्तज़ाम करना है। (**बादल की गरजन सुनायी पड़ती है**) यह लीजिए, बिना मौसम पानी बरसने वाला है। शायद ओले भी गिरें।

**हेड क्लार्क** : इससे क्या, सरकार ?

**हरदत्त** : और सारे कन्टूनमेन्ट को टैक्स पेयर्स के रुपये से डिस-इन्फ़ैक्ट किया जायगा, बिना यह जाने कि किस बीमारी के

लिए डिसइन्फ़ैक्ट किया जा रहा है। **(एक काग़ज़ पर दस्तख़त करता है, जिसे हेड क्लार्क उठाता है।)**

**हेड क्लार्क :** कमसरियट के ठेकेदार साहब की गिरफ़्तारी क्या यह जानकर की गयी है कि उन्होंने फलाँ चीज़ बुरी सप्लाई की ?

**हरदत्त :** **(दूसरे काग़ज़ पर दस्तख़त करते हुए, जिसे हेड क्लार्क उठाता है)** और यह दूसरा आर्डर है मेहतरों को कि पैख़ाना गाड़ा न जाय, कचरा जलाया न जाय, क्योंकि उस सबकी भी जाँच होगी।

**हेड क्लार्क :** जी हाँ।

**हरदत्त :** **(तीसरे काग़ज़ पर दस्तख़त करते हुए, जिसे हेड क्लार्क उठाता है)** और यह तीसरा आर्डर है बाज़ार की मिठाई, और सागभाजी की ज़ब्ती का, क्योंकि उसकी भी जाँच होगी।

**हेड क्लार्क :** जी, सरकार।

**हरदत्त :** **(लम्बी साँस लेकर)** तो यह कन्टूनमेन्ट है, हेड क्लार्क साहब !

**हेड क्लार्क :** जी हाँ, और यहाँ एक गोरे की जान की क़ीमत······

**[ताराँसिह का शीघ्रता से प्रवेश।]**

**ताराँसिह :** **(हरदत्त को टेबिल के निकट आते हुए)** वे तीन आर्डर अभी इश्यू तो नहीं हुए, वाइस प्रेसीडेन्ट साहब ?

**हरदत्त :** जी नहीं, पर मैंने अभी दस्तख़त कर दिये हैं, और वे इश्यू हो ही रहे हैं।

**तारासिंह :** **(कुरसी पर बैठते हुए)** पर अब उनकी ज़रूरत नहीं है।

**हरदत्त :** **(आश्चर्य से)** यह क्यों, क्या वह गोरा जी उठा ?

**तारासिंह :** जी नहीं, लेकिन मालूम हो गया कि वह मरा क्यों ?

**हरदत्त :** **(आश्चर्य से)** अच्छा !

**तारासिंह :** **(जेब से एक चिट्ठी निकाल कर हरदत्त को देते हुए)** कर्नल सिमसन ने आपके नाम यह चिट्ठी दी है। आपको उसे पढ़कर ताज्जुब होगा कि वह मरा क्यों !

**हरदत्त :** **(चिट्ठी लेते हुए)** मैं तो इतनी अंग्रेज़ी जानता नहीं, आप ही बताइए, वह मरा क्यों ?

**तारासिंह :** **(कुरसी पर टिकते हुए अत्यन्त गंभीरता से)** जनाब, वह मरा है अपनी मेम साहिबा की एक ख़ास बीमारी के एक ख़ास इन्फ़ैक्शन से ?

**हरदत्त :** **(आश्चर्य से चिल्लाकर)** अपनी मेम साहिबा की एक ख़ास बीमारी के एक ख़ास इन्फ़ैक्शन से ?

**हेड क्लार्क :** **(आश्चर्य से चिल्लाकर)** अपनी मेम साहिबा की एक ख़ास बीमारी के एक ख़ास इन्फ़ैक्शन से ?

**तारासिंह :** जी हाँ, मालूम हो गया कि वह मरा क्यों ?

**यवनिका**

**समाप्त**

# हार्स पावर

## मुख्य पात्र, स्थान, समय

मुख्य पात्र

राजा, मंत्री, हवलदार

स्थान

एक भारतीय रियासत

समय

वर्तमान

## पहला दृश्य

स्थान : एक खेत में से जाने वाली कच्ची सड़क

समय : प्रातःकाल

[सामने बीच में से टूटी हुई खेत की मेड दिखती है। जहाँ से मेड टूटी है उस स्थान से एक कच्ची सड़क पीछे की ओर चली गयी है। उसके दोनों तरफ फसल खड़ी हुई है। सड़क के निकट दाहिने ओर की फसल रुँध-सी गयी है और उसके कारण खराब हो गयी है। जहाँ मेड टूटी है वहाँ राजा, मंत्री और हवलदार खड़े हैं। तीनों अधेड़ अवस्था के हैं। राजा रेशमी फूलदार कपड़े की शेरवानी और चूड़ीदार पाजामा पहने है। शेरवानी का कपड़ा सिर्फ बच्चों के पहनने योग्य है। राजा के सिर पर सिलमे-सितारे के काम की सुनहरी चमकदार टोपी लगी हुई है। यह भी बच्चों के लायक। अधेड़ अवस्था के व्यक्ति को वर्तमान समय में यह पोशाक खूब ही फबती है। राजा होने पर भी या तो वह बहूरूपिया दिखता है या रामलीला के लिए बना हुआ कोई स्वाँग। वर्ण में वह गेहुँआ है, कद में एकदम ठिगना और शरीर में अत्यन्त मोटा जैसा कोई नाद हो। उसका थलर मलर भद्दा शरीर खासकर पेट के स्थान पर चुस्त शेरवानी में से निकल भागने का प्रयत्न करता जान पड़ता है। इस सारी शोभा को दाढ़ी-मूँछों से रहित चेहरे की आँखों में आँजे हुए सुरमे और कपाल पर लगी

**हुई सिन्दूर की बड़ी टिकली ने कहीं अधिक बढ़ा दिया है। राजा के हाथ में एक चाँदी की मूठ का बेंत है। मंत्री एक दम ऊँचा और बाँस के समान दुबला है, यह भी शेरवानी और चूड़ीदार पाजामा ही पहने है। उसकी शेरवानी और पाजामा एकदम सफेद है, सिर पर सफेद ही साफा है और उस साफे की अत्यधिक ऊँची कलगी ने उसके शरीर की उँचाई को और भी बढ़ा दिया है। सारी सफेद पोशाक में उसका एक दम काला रंग और उस काले रंग में बड़ी-बड़ी खिचड़ी मूँछें देखते ही बनती हैं। मंत्री अपने रंग, रूप और पोशाक के कारण खानसामों से बहुत कुछ मिलता-जुलता है। हवलदार को नार्मल मनुष्य कहा जा सकता है।]**

**राजा :** ······(**क्रोध से गरजकर हवलदार से**) हाँ, जिसने·· जिसने भी इस फसल को रौंदा हो, उसे तत्काल कानी हौद के हवाले करो। यह सड़क केवल रियासत के आवागमन के लिए है, आम लोगों के लिए नहीं····(**मंत्री से**) क्यों, मंत्री जी ?

**मंत्री :** हिज हाइनेस ठीक फरमाते हैं।

**राजा :** (**हवलदार से**) और देखो महल में आकर मुझे फौरन सूचना दो, कि रौंदने वाला व्यक्ति कानी हौद के अन्दर बंद कर दिया गया।

**हवलदार :** जो हुक्म, सरकार।

**[राजा मटकता हुआ एक विचित्र चाल से बेंत को घुमाते-घुमाते सड़क पर पीछे की ओर बढ़ता है, पीछे-पीछे मंत्री और हवलदार भी चलते हैं।]**

**लघु यवनिका**

## दूसरा दृश्य

स्थान : राजमहल का बैठक खाना

समय : मध्यान्ह

**[बैठक खाने में पूर्वीय और पश्चिमी दोनों ढंग की सजावट का अद्भुत मिश्रण है। आरायशी सामान इतना अधिक है कि कमरा बैठक खाना न दीख कर सजावट का सामान बेचने की दूकान दीखता है। राजगद्दी पर राजा बैठा हुआ हुक्का गुड़गुड़ा रहा है। अब वह कुरता और ढीला पाजामा पहने है, तथा नंगे सिर। कुर्ते से उसके अंग की शोभा और अधिक खिल गयी है, और नंगे सिर पर बीच में माँग निकाले हुए लंबे बालों ने उसे हींजड़े का सा रूप दे दिया है।]**

**[स्वच्छ वस्त्रों में एक नौकर का प्रवेश।]**

**नौकर :** हुज़ूर, हवलदार साहब सेवा में हाज़िर होना चाहते हैं।

**राजा :** हाँ हाँ, भेजो, तुरन्त ही भेजो उन्हे।

**[नौकर का प्रस्थान और हवलदार का प्रवेश।]**

**राजा :** बैठो, हवलदार, कहो क्या हुआ ?

**हवलदार : (कालीन पर बैठते हुए)** सरकार के हुक्म के मुताबिक फसल रौंदने वाला कांजी हौज के हवाले कर दिया गया।

**राजा :** बहुत खुशी····· बहुत खुशी हुई मुझे यह सुनकर।

**हवलदार :** लेकिन, हुज़ूर, वह कांजी हौज के अन्दर बन्द नहीं हो सका।

**राजा :** अच्छा, यह क्यों ?

**हवलदार :** बहुत बड़ा होने की वजह से, सरकार। और उसे कांजी हौज तक पहुँचाने में भी बड़ी दिक्कत हुई, कई आदमियों को लगाना पड़ा।

**राजा :** (**अचरज से**) अच्छा, यह क्यों ?

**हवलदार :** वह बहुत बड़ा था न, सरकार ? उसी के साथ उसका मालिक भी कांजी हौज में पहुँच गया है। वह कांजी हौज की निरख के अनुसार जुर्माना देकर उसे ले जाना चाहता है। पर कांजी हौज वालों ने मुवाजा के तमाम निरख देख डाले, पर उन्हें उसे छोड़ने के लिए कितना मुवाजा लिया जाना चाहिए उसकी कोई निरख नहीं मिल रहा है।

**राजा :** अच्छा, यह क्यों ?

**हवलदार :** इसलिए सरकार कि वह न घोड़ा है न बैल, न गाय है न भैंस, न बच्छा है न पड़िया, न गधा है न खच्चर।

**राजा :** तब आखिर वह है क्या ?

**हवलदार :** मोटर लारी, हुज़ूर।

**राजा :** ओह, (**विचारते हुए**) अच्छा जरा मंत्री जी को तो लाओ।

**हवलदार :** (**उठते हुए**) जो हुक्म।

[**राजा हुक्का गुड़गुड़ाते हुए अत्यन्त गंभीरता से विचार करता रहता है। मंत्री के साथ हवलदार का प्रवेश। मंत्री अपनी पहले की ही वेष-भूषा में है।**]

**राजा** : बैठिए, मंत्री, बैठो, हवलदार ।

[**दोनों कालीन पर बैठ जाते हैं।** ]

**राजा** : (**मंत्री से**) आपने सुन लिया, कानोहौद में एक बड़ी भारी समस्या खड़ी हो गयी है ।

**मंत्री** : अभी सुना है, योर हाइनेस, और समस्या का हल भी सोच लिया ।

**राजा** : अच्छा, वह क्या ?

**मंत्री** : इन सब मशीनों में हार्स पावर होते हैं, उस मोटर लारी में कितने घोड़ों की ताकत होगी, उस हिसाब से उसका मुआवजा ले लिया जायेगा ।

**राजा** : (**हर्ष से उछलकर मानों कोई फुटबाल उछली हो, मंत्री के हाथ पर हाथ मारकर**) वाह ! मंत्री जी, वाह !······ वाह ! मंत्री जी···वाह ! क्यों न हो, आपका खानदान मंत्रियों का खानदान रहा है, आप खानदानी मंत्री हैं। (**हवलदार से**) जाओ,.फौरन जाओ, मोटर लारी के हार्स पावर के हिसाब से उसके मालिक से मुआवजा ले मोटर लारी को तत्काल छोड़ दो ।

**यवनिका**

**समाप्त**

# अर्द्ध-जागृत

## पात्र, स्थान, समय

**मुख्य पात्र** : हरि वल्लभ, काँग्रेस का एक नेता, आगे चलकर एक मिनिस्टर

**हलकुआ, फिर हलकूसिंह** : एक हरिजन, आगे चलकर प्रान्तीय असेम्बली का एक सदस्य

**नैनसुख** : प्रान्तीय असेम्बली का एक हरिजन सदस्य

**पी० डी० शर्मा** : प्रान्तीय असेम्बली का एक सदस्य

**स्थान** : एक नगर, प्रान्तीय राजधानी

**समय** : उपक्रम सन् १९३६, नाटक सन् १९३८

उपसंहार : सन् १९४२

## उपक्रम

स्थान : एक नगर की ज़िला कचहरी का एक तरफ़ का बरामदा

समय : २ बजे दिन

**[पीछे की ओर बरामदे का कुछ हिस्सा दिखायी देता है। उसके पीछे कचहरी के एक इजलास का थोड़ा-सा भाग दिखता है। बरामदे में कुछ कुर्सियाँ और बेंचें पड़ी हुई हैं। एक कुर्सी पर हरिवल्लभ बैठा है। अधेड़ अवस्था और गेहुँए रंग का कुछ ठिगना-सा व्यक्ति है। छोटी-छोटी मूँछें हैं। गांधी टोपी, खादी का कोट, धोती और चप्पल पहने हुए है। आँखों पर मोटे फ्रेम का चश्मा है और दाहिने हाथ में फाउन्टेन पैन। बाँयें हाथ की कलाई पर हाथ की घड़ी और हाथ में वोटरों की फेहरिस्त है, जिसे वह ध्यान से देख रहा है। अन्य कुर्सियों तथा बेंचों पर कई लोग बैठे हैं।]**

**हरिवल्लभ** : **(सामने देखकर)** अभी · · ·अभी तक वे सज्जन हरिजन उम्मीदवार को नहीं लाये।

**एक व्यक्ति** : और करीब दो बजे होंगे।

**हरिवल्लभ** : **(हाथ की घड़ी देखकर)** हाँ, दो। नामज़दी के लिए सिर्फ एक घंटा बाकी है। मैं उनके भरोसे रह गया, कहीं ठीक वक्त तक हरिजन उम्मीदवार न आया तो मुश्किल हो जायगी।

## पात्र, स्थान, समय

मुख्य पात्र : हरि वल्लभ, काँग्रेस का एक नेता, आगे चलकर एक मिनिस्टर

**हलकुआ, फिर हलकूसिंह** : एक हरिजन, आगे चलकर प्रान्तीय असेम्बली का एक सदस्य

**नैनसुख** : प्रान्तीय असेम्बली का एक हरिजन सदस्य

**पी० डी० शर्मा** : प्रान्तीय असेम्बली का एक सदस्य

**स्थान** : एक नगर, प्रान्तीय राजधानी

**समय** : उपक्रम सन् १९३६, नाटक सन् १९३८

उपसंहार : सन् १९४२

## उपक्रम

स्थान : एक नगर की ज़िला कचहरी का एक तरफ़ का बरामदा

समय : २ बजे दिन

**[पीछे की ओर बरामदे का कुछ हिस्सा दिखायी देता है। उसके पीछे कचहरी के एक इजलास का थोड़ा-सा भाग दिखता है। बरामदे में कुछ कुर्सियाँ और बेंचें पड़ी हुई हैं। एक कुर्सी पर हरिवल्लभ बैठा है। अधेड़ अवस्था और गेहुँए रंग का कुछ ठिगना-सा व्यक्ति है। छोटी-छोटी मूँछें हैं। गांधी टोपी, खादी का कोट, धोती और चप्पल पहने हुए है। आँखों पर मोटे फ्रेम का चश्मा है और दाहिने हाथ में फाउन्टेन पैन। बाँयें हाथ की कलाई पर हाथ की घड़ी और हाथ में वोटरों की फेहरिस्त है, जिसे वह ध्यान से देख रहा है। अन्य कुर्सियों तथा बेंचों पर कई लोग बैठे हैं।]**

**हरिवल्लभ : (सामने देखकर)** अभी···अभी तक वे सज्जन हरिजन उम्मीदवार को नहीं लाये।

**एक व्यक्ति :** और करीब दो बजे होंगे।

**हरिवल्लभ : (हाथ की घड़ी देखकर)** हाँ, दो। नामज़दी के लिए सिर्फ एक घंटा बाकी है। मैं उनके भरोसे रह गया, कहीं ठीक वक्त तक हरिजन उम्मीदवार न आया तो मुश्किल हो जायगी।

**दूसरा** : हाँ, काँग्रेस की एक सीट ही चली जायगी।

**हरिवल्लभ** : (**फिर वोटर लिस्ट को देखते हुए पास में खड़े एक व्यक्ति से**) देखो सबके नज़दीक के गांव में दो हरिजनों के नाम वोटर-लिस्ट में हैं—महगुआ और हलकुआ। तुम मोटर में दोनों को या दोनों में से एक को जो भी मिले उसे ले आओ; नामज़दी तो किसी-न-किसी की करानी ही होगी।

**तीसरा** : पर दोनों में से कोई काँगरेसी है ?

**हरिवल्लभ** : (**मुस्कराकर**) नहीं है तो बना लिया जायगा।

**चौथा** : (**हँसते हुए**) हाँ, और किया ही क्या जा सकता है।

**हरिवल्लभ** : भाई, भगवान् के घर से कोई काँग्रेस वाला बना-बनाया आता नहीं है। इसी दुनियाँ में काँग्रेस वाले बनते हैं न ?

**पाँचवाँ** : हाँ, हाँ, इसमें सन्देह ही क्या है।

**हरिवल्लभ** : कोई कभी और कोई कभी; कोई पहले और कोई पीछे। सन् ३६ के इस चुनाव में कई नये-नये काँग्रेसी बने हैं; महगुआ और हलकुआ भी सही।

[**कुछ लोगों का अट्टहास।**]

**हरिवल्लभ** : (**पहले वाले व्यक्ति से**) तो अब तुम एक मिनिट भी न खोओ; ले आओ इन दोनों या किसी एक को फौरन !

**वह व्यक्ति** : बहुत अच्छा। (**प्रस्थान।**)

[**कुछ समय बीत गया है, इस संकेत के लिए रंगमंच पर अन्धकार हो जाता है। जब फिर प्रकाश फैलता है, तब हलकुआ**

हरिवल्लभ के सामने खड़ा हुआ है। हलकुआ लगभग पचास वर्ष की उम्र का, साँवले रंग का कुछ ऊँचा दुबला मनुष्य है। हजामत बढ़ी हुई है। घुटने तक ऊँची धोती पहने है। धोती मैली-कुचैली, यहाँ-वहाँ फटी हुई और थिगड़ैल है। ऊपर के शरीर पर मिरजई है। मिरजई में टीन के बटन लगे हैं और उनमें से कुछ टूट गये हैं। उसके सिर पर चारखाने का एक पिछौड़ा बँधा है और पिछौड़ा भी धोती और मिरजई के समान है। पैरों में देहाती जूते हैं, जिनमें बहुत कीचड़ लग गया है। हरिवल्लभ हलकुआ के नामज़दी के कागज़ पर हलकुआ के अँगूठे का निशान लगवा रहा है।]

**हरिवल्लभ : (निशान लगने के बाद, नामज़दी के काग़ज़ को देखते हुए)** साफ उछर आया। **(पास में खड़े हुए व्यक्तियों में से एक को)** लीजिए, प्रस्तावक की जगह आप दस्तख़त कीजिए।

**[हरिवल्लभ उसे फाउन्टेनपैन देता है और वह दस्तख़त करता है।]**

**हरिवल्लभ :** (**एक दूसरे व्यक्ति से**) अनुमोदक की जगह आप कीजिए।

**[उसे भी हरिवल्लभ फाउन्टेनपैन देता है और वह भी दस्तख़त करता है।]**

**प्रस्तावक :** ले रे, हलकुआ, हो गया मेम्वर।

**हरिवल्लभ :** इस तरह नहीं बोला जाता, यों कहिए—लीजिए हलकुआ जी हो गये आप मेम्बर। पर अभी तो नामज़दगी भी

नहीं हुई, मेम्बर कैसे हो गये ? मेम्बर होने में तो बहुत देरी है।

**अनुमोदक :** काँग्रेस के सिर पर हाथ रखने के बाद मेम्बर न हों यह हो सकता है ? देर मेम्बर होने में नहीं, देर थी काँग्रेस के सिर पर हाथ रखने में।

**प्रस्तावक :** फिर आपका और हलकुआ जी का एक ही चुनाव-क्षेत्र है, एक साथ ही वोट पड़ेंगे।

**अनुमोदक :** हाँ, हाँ, मेम्बर होने में क्या देर है ?

**कई व्यक्ति : (एक साथ)** ज़रा भी नहीं। थोड़ा भी नहीं।

**एक :** भाग खुलना इसको कहते हैं।

**दूसरा :** पुरानी कहानियाँ नहीं सुनीं। अमुक जगह का राजा मर गया था, तय हुआ था, जो सबेरे-सबेरे शहर के फाटक में घुसेगा उसे बना दिया जायगा राजा ! फलाँ नगर का राजा फ़ौत हो गया था, निर्णय हुआ था, जिसके सिर पर कबूतर बैठेगा वह हो जायगा राजा।

**तीसरा :** हाँ, न जाने ऐसे कितने किस्से प्रचलित हैं।

**चौथा :** पर हलकुआजी का तो किस्सा नहीं है, प्रत्यक्ष घटना है।

**पाँचवाँ :** अरे, हलकुआ जी, तुम्हारे घर में लक्ष्मी छप्पर फाड़कर आयी है।

**हरिवल्लभ :** फिर तुम्हारे ! आपके कहो, आपके। हलकुआ जी, आप समझे भी क्या होने जा रहा है ?

**हलकुआ :** मेम्बरी।

[**लोगों का अट्टहास।** ]

**कुछ व्यक्ति : (एक साथ)** समझ गया, भाई, समझ गया।

**हरिवल्लभ** : कहाँ तक आप लोगों को समझाऊँ, समझ गये कहिए, समझ गया नहीं। **(हलकुआ से)** कहाँ की मेम्बरी, हलकुआ जी ?

**हलकुआ** : कचहरी की।

[**लोगों का अट्टहास।**]

**हरिवल्लभ** : कचहरी की नहीं, असेम्बली की।

**एक** : ऐसा ! समझदार है, हलकुआ भी।

**प्रस्तावक** : **(हरिवल्लभ से)** तो नामज़दगी का काग़ज़ तो दाख़िल कर दीजिए।

**हरिवल्लभ** : **(हाथ की घड़ी देखते हुए)** समय समाप्त होने के सिर्फ पाँच मिनिट पहले करना चाहता हूँ; अभी कुछ वक्त है।

[**कुछ देर निस्तब्धता।**]

**एक** : और, हलकुआ जी, असेम्बली में जाकर करोगे क्या ?

**हलकुआ** : **(हरिवल्लभ की ओर संकेत कर)** जो बाबू करि हैं।

**दूसरा** : **(तीसरे की हथेली पर हथेली मार)** भाई, क्या समझ की बात कही है।

**चौथा** : इसमें शक ही नहीं।

**कई व्यक्ति** : **(एक साथ)** बेशक ! बेशक !! निस्सन्देह ! निस्सन्देह !!

**पाँचवाँ** : **(हरिवल्लभ से)** आपने सचमुच अचानक ही योग्य आदमी को चुन लिया।

[**हरिवल्लभ मुस्कराता है। हलकुआ भी सिर झुकाकर कनखियों से इधर-उधर देखता हुआ मुस्कराता है।**]

**लघु यवनिका**

## पहला दृश्य

स्थान : प्रान्तीय राजधानी में हरिनारायण धर्मशाला का आँगन

समय : प्रातःकाल

**[ पीछे की तरफ यात्रियों की कोठरियों की कतार दिखायी पड़ती है; बाँयीं ओर रामचन्द्रजी के मन्दिर का बाहरी भाग और शिखर; दाहनी तरफ एक कुआ। कोठरियों में कुछ यात्री ठहरे हुए दिखायी देते हैं। कुएँ पर कुछ लोग पानी भर रहे हैं। आँगन में हलकुआ और धर्मशाला का व्यवस्थापक खड़े हुए हैं। हलकुआ में इतना अधिक परिवर्तन हो गया है कि उसे पहचानना कठिन है। अब उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई नहीं है। सिर पर लम्बे आधुनिक ढंग के बाल हो गये हैं जो टोपीकाट कटे हैं और आधे सफेद होने पर भी अच्छी तरह सँवारे गये हैं। बालों पर कुछ तिरछी गांधी टोपी लगी हुई है। खादी की शेरवानी और चूड़ीदार पाजामा है, यद्यपि दोनों बहुत फिट न होकर कुछ ढीले हैं। पैरों में फीतेदार जूते हैं। ]**

**हलकुआ :** तो हरिनारायण की धर्मशाला होने पर भी हरिजन यहाँ नहीं ठहर सकते ?

**व्यवस्थापक :** परन्तु दोनों हरि शब्दों में कोई सम्बन्ध नहीं है। धर्मशाला का नाम हरिनारायण धर्मशाला इसलिए है कि वह सेठ हरिनारायण जी ने बनवायी है।

**हलकुआ** : पर तुम जानते हो मैं कौन हूँ ?

**व्यवस्थापक** : आपने कहा न कि आपका नाम हलकूसिंह है और आप हरिजन हैं ।

**हल्कूसिंह** : पर ऐसा-वैसा हरिजन नहीं । वह हरिजन नहीं, जो पैख़ाना साफ़ करते हैं, वह हरिजन नहीं जो ढोरों को फाड़ते हैं, वह हरिजन नहीं जो जूते बनाते हैं । मैं हूँ असेम्बली का मेम्बर हरिजन; मैं हूँ एम० एल० ए० हरिजन ।

**व्यवस्थापक** : पर आपका जन्म तो वैसे ही हरिजनों में हुआ है न ?

**हल्कूसिंह** : इससे क्या मैं असेम्बली का मेम्बर जो होगया हूँ ।

**व्यवस्थापक** : पर हमारी धर्मशाला में दोनों तरह के हरिजनों में कोई फ़र्क नहीं । सब हरिजन, हरिजन हैं, और कोई हरिजन यहाँ नहीं ठहर सकता ।

**हल्कूसिंह** : (**क्रोध से**) तो तुम्हारी धर्मशाला की ईंट-से-ईंट बज जायगी, तुम जानते हो अब हम काँगरेसियों की सरकार है ।

**व्यवस्थापक** : सो तो मैं जानता हूँ, पर मैं क्या कर सकता हूँ, मैं हूँ नौकर, मुझे तो धर्मशाला के जैसे नियम हैं उनके अनुसार इन्तज़ाम करना होगा । आप मालिक से मिलकर इजाज़त ले आइए, मैं ठहरा दूँगा ।

[**मन्दिर में घंटा बजने लगता है ।**]

**हल्कूसिंह** : आरती हो रही है ?

**व्यवस्थापक** : जी हाँ ।

[**हल्कूसिंह मन्दिर की ओर बढ़ता है ।**]

**व्यवस्थापक : (जल्दी से उसके आगे बढ़ कर)** क्षमा कीजिए, मन्दिर में हरिजन नहीं जा सकते।

**हल्कूसिंह : (क्रोध से)** ऐसा ! **(कुछ रुक कर)** अच्छा तो मैं कुएँ पर मुँह-हाथ धो लेता हूँ और फिर जाता हूँ तुम्हारे मालिक के पास। **(कुएँ की ओर बढ़ता है।)**

**व्यवस्थापक : (जल्दी से उसके आगे आकर)** माफ़ी दीजिए, कुएँ पर भी आप नहीं जा सकते।

**हल्कूसिंह : (अत्यन्त क्रोध से पैर पटककर)** तब···तब तो सच-मुच तुम सबकी सामत आयी है। अब मैं तेरे मालिक के पास नहीं जाऊँगा। मैं जाता हूँ सीधा हमारी जो पालटी की सभा होने वाली है उसमें। यह तेरी धर्मशाला सरकार जपत करेगी और मेरा तूने जो यह इनसलट किया है इस पर तू और तेरा मालिक दोनों भेजे जायँगे जेहल। सुना···सुना··· सुन ले कान खोल के। हमारी सरकार है हमारी, तमासा नहीं। **(जल्दी से प्रस्थान।)**

[**व्यवस्थापक कुछ आश्चर्य से उसकी ओर देखता रहता है। उसी समय पी० डी० शर्मा धर्मशाला की एक कोठरी में से निकलकर जल्दी-जल्दी हल्कूसिंह के पीछे-पीछे जाता है। शर्मा की अवस्था लगभग ५० वर्ष की है। वह साँवले रंग का कुछ मोटा-नाटा आदमी है। अंग्रेज़ी ढंग के कपड़े हैं।**]

**लघु यवनिका**

## दूसरा दृश्य

स्थान : हरिनारायण की धर्मशाला की बाहर की सड़क

समय : प्रातःकाल

[**पीछे की ओर धर्मशाला की इमारत का बाहरी भाग दिखता है। सड़क पर खड़े हुए शर्मा और हल्कूसिंह बातें कर रहे हैं।**]

**शर्मा :** सचमुच मुझे बहुत अफ़सोस है कि यहाँ आपका इस तरह अपमान हुआ।

**हल्कूसिंह :** इस इनसलट का बदला मिलेगा, इन धरमसाला वालों को। हमारी सरकार है या तमासा।

**शर्मा** : माफ़ कीजिए, अगर मैं एक बात कहूँ तो, आपकी सरकार इस मामले में कुछ नहीं करेगी।

**हल्कूसिंह :** (**आश्चर्य से**) कुछ नहीं करेगी ! क्या कहते हैं आप ! धरमसाला की ईंट-से-ईंट बजेगी, वह जपत होगी। मनीजर और मालक जेहल जायँगे।

**शर्मा** : आप देखेंगे कि आपकी सरकार इस धर्मशाला, इसके मैनेजर और मालिक का कुछ नहीं करेगी।

**हल्कूसिंह** : नाऊ-नाऊ बाल कित्ते ? जजमान सामने आये जाते हैं।

**शर्मा** : तब मंजूर कर लूँगा आपका कहना ठीक था और मेरा

गलत । देखिए, मैं यह नहीं कहता कि सरकार धर्मशाला को जप्त नहीं कर सकती, मैनेजर और मालिक को सजा नहीं दे सकती । सरकार चाहे तो क्या नहीं कर सकती, उसके पास सब कुछ है ।

**हल्कूसिंह** : तब सरकार क्यों कुछ नहीं करेगी ?

**शर्मा** : इसलिए कि वह करना नहीं चाहेगी । हल्कूसिंहजी, आपकी सरकार पूँजीपतियों की सरकार है, जमींदारों की सरकार है, बड़े-बड़े आदमियों की सरकार है । सेठ हरिनारायण बहुत बड़े आदमी हैं । उनकी तरफ़ आँख उठा सकने की भी सरकार को हिम्मत नहीं ।

**हल्कूसिंह** : और हमारी सरकार ग़रीबों की सरकार नहीं है ? किसानों की नहीं है ? हरिजनों की नहीं है ? जितने हरिजन मेम्बर हमारी पालटी में हैं उतने किसी पालटी में नहीं ।

**शर्मा** : किसान और हरिजन इस सरकार की शतरंज के प्यादे हैं । अगर हरिजनों की सच्ची सरकार है तो एक मिनिस्टर हरिजन क्यों नहीं हुआ ?

**हल्कूसिंह** : **(विचारते हुए)** हाँ, यह तो आप ठीक कहते हैं, पर···पर···

**शर्मा** : पर वह कुछ नहीं, हल्कूसिंहजी, आपका कहना बिल्कुल ठीक है जितने हरिजन मेम्बर आपकी पार्टी में हैं उतने किसी में नहीं । उनका हक़ था एक मिनिस्टर उनका आदमी होता; और···और हरिजनों में यदि कोई मिनिस्टर हो सकता था तो आप; पर हरिजन-सेवा, किसान उपकार ये सब आपकी

काँग्रेस का दिखावा है। इन सबका उपयोग कर कुछ पढ़े-लिखे लोग अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। मैं तो न जाने कितने दिनों से इस असेम्बली का मेम्बर हूँ। मेरी सच्ची सेवाओं के कारण ही काँग्रेस नये चुनाव में मुझे हरा नहीं सकी। आप जानते हैं कि काँग्रेस मिनिस्ट्री के पहले जो मिनिस्ट्री बनी था उसका भो मैं मिनिस्टर था। हमारी पार्टी में हरिजन न था अन्यथा वह भी एक मिनिस्टर होता। हमेशा तो काँग्रेस मिनिस्ट्री रहने वाली है नहीं, इसके बाद अगर हम लोग फिर मिनिस्ट्री बना सके तो देख लीजिएगा आप मिनिस्टर होते हैं या नहीं।

हल्कूसिंह : **(कुछ रुककर, जो ओंठ एकाएक सूख गये थे, उन्हें जीभ से गीला करते हुए)** अच्छा अभी तो पालटी मीटिंग है। चलता हूँ। असेम्बली में मिलना होगा ही। **(कुछ रुककर)** और देखिए, आज मुझे बजट पर बोलना भी है उसके लिए भी कुछ मसाला दीजिएगा।

**शर्मा** : अवश्य। अवश्य।

**लघु यवनिका**

## तीसरा दृश्य

स्थान : मुख्य मंत्री के बँगले का हॉल

समय : प्रातःकाल

[कमरा आधुनिक बैठकख़ानों के सदृश सजा हुआ है, परन्तु टेबिल-कुर्सियाँ न होकर जमीन पर बैठक है। एक खादी के गद्दी पर खादी की मसनद के सहारे खादी के कपड़े पहने हुए मुख्य मंत्री बैठा है। उसकी गद्दी के सामने एक तख़्त है जो खादी के रंगीन मेज़पोश से ढका है। इस तख़्त पर पढ़ने-लिखने का सामान है। मुख्य मंत्री के आस-पास अन्य मंत्री बैठे हुए हैं, इन्हीं में हरिवल्लभ उपाध्याय है। मंत्रियों के सामने प्रान्तीय असेम्बली के अन्य सदस्य हैं, इन्हीं में हल्कूसिंह और नैनसुख हैं। नैनसुख लगभग साठ वर्ष का गेहुँए रंग का दुबला, पतला, ठिगना आदमी है। सूरत से बहुत सीधा जान पड़ता है। सब लोग खादी के कपड़े पहने हैं। हल्कूसिंह खड़ा-खड़ा बोल रहा है।]

**हल्कूसिंह** : हाँ, मैं फिर कहता हूँ बजट-फजट अलग फेंको; सबसे ज़रूरी पिरसन है मेरी इनसलट का। जहाँ मेरा इनसलट हुआ उस धरमसाला का नाम हरिजन धरमसाला है।

**एक सदस्य** : हरिजन धर्मशाला नहीं, हरिनारायण धर्मशाला।

**हल्कूसिंह** : एक ही बात है।

[**कुछ लोगों का अट्टहास ।**]

**हल्कूसिह** : आप सब हँसते हैं ! क्यों नहीं हँसेंगे ? आपका इनसलट थोड़े ही हुआ है ? इनसलट तो मेरा हुआ है न । अरे यह हँसने की नहीं, रोने की बात है, काँगरेस के लिए रोने की बात है, काँगरेसी सरकार के लिए रोने की बात है ।

[**कुछ लोग मज़ाक से अँ अँ करते हैं । कुछ का अट्टहास ।**]

**हल्कूसिह** : (**और क्रोध से**) मैं कहता हूँ कि आप लोग अगर इस तरह हरिजनों का मज़ाक उड़ायेंगे, तो हम लोग आपकी पालटी को छोड़ देंगे ।

**कुछ हरिजन सदस्य** : (**एक साथ**) ज़रूर ! ज़रूर !

**नैनसुख** : क्यों छोड़ देंगे पार्टी ? हम हरिजनों के लिए जिस काँग्रेस ने इतना किया, जितना किसी ने नहीं, वे काँग्रेस छोड़ देंगे ?

**मुख्य मंत्री** : शान्ति ! भाइयो ! शान्ति !

**हल्कूसिह** : हाँ, देखिए तो, परधान साहब, ये लोग मज़ाक उड़ा रहे हैं । पालटी की सभा कोई मज़ाक उड़ाने की जगह है ? आज जो कुछ उस धरमसाला में हुआ वह क्या कोई मज़ाक उड़ाने की बात है ? इस तरह मज़ाक उड़ाना तो घाव पर नोन छिरकना है !

**हरिवल्लभ** : क्या हुआ वहाँ पर ?

**हल्कूसिह** : वहाँ पर हुआ मेरा इनसलट, मिनिस्टर साहब, और मेरे इनसलट का मतलब है, आप सबका इनसलट ! काँगरेस का इनसलट ! काँगरेसी सरकार का इनसलट !

**नैनसुख :** यह तो सुना हम लोगों ने कि आपका अपमान हुआ, पर घटना क्या हुई यह बताइए ।

**हल्कूसिंह :** घटना यह हुई कि मैं वहाँ **(कुछ रुककर)** आप जानते हैं कि मैं कोई पैखाना साफ करने वाला, ढोर फाड़ने वाला, जूते बनाने वाला हरिजन नहीं हूँ ।

**हरिवल्लभ :** हमारे लिए तो सभी हरिजन एक-से ही हैं ।

**हल्कूसिंह :** आप···आप भी ऐसा कहते हैं, मिनिस्टर साहब, जैसा मैं वैसे ही वे ?

**हरिवल्लभ :** हल्कूसिंह जी, जो समाज की इतनी बड़ी-बड़ी सेवाएँ करते हैं वे कोई नीच नहीं । काँग्रेस किसी जमात को नफ़रत की नज़र से नहीं देखती, उसके लिए सभी मानव एक-से हैं ।

**कुछ सदस्य : (एक साथ)** बेशक ! बेशक !

**हल्कूसिंह :** यह···यह तो आपकी और काँगरेस की किरपा है, पर यह तो आप सब मानेंगे ही कि उन हरिजनों में और मुझ में फरक है ।

**एक सदस्य :** बहुत बड़ा; आप एम० एल० ए० हैं ।

[**कुछ का अट्टहास ।**]

**हल्कूसिंह :** और मुझे उस हरिजन धरमसाला के···**(बीच ही में)**

**एक सदस्य :** हरिजन नहीं, जी, हरिनारायण धर्मशाला ।

**हल्कूसिंह :** एक ही बात है ।

**वही सदस्य :** एक ही बात बिलकुल नहीं है । वह धर्मशाला यहाँ

के एक सनातनी मारवाड़ी सेठ हरिनारायण ने बनवायी है और वहाँ हिन्दुओं में ऊँची जातियों के लोगों के सिवा और कोई नहीं ठहर सकता।

**हल्कूसिंह** : हरि ! हरि ! हरि ! हरि ! हरि ! काँगरेसी सरकार के राज में भी ऊँची जात और नीची जात !

**कुछ हरिजन सदस्य** : (**एक साथ**) हरि हरि ! हरि हरि !

**हरिवल्लभ** : होना नहीं चाहिए, यह मैं भी मानता हूँ, परन्तु···· परन्तु····(**चुप हो जाता है।**)

**हल्कूसिंह** : परन्तु ?

**हरिवल्लभ** : (**विचारते हुए**) काँग्रेसी सरकार यह कैसे मिटावे मैं यह सोच रहा हूँ।

**हल्कूसिंह** : मैं इसका उपाय बताता हूँ; यह तो बहुत सहल है। सब से पहले इस धरमसाला को जपत कीजिए। इस धरमसाला के मनीजर और मालक को मेरे इनसलट करने के कसूर में जेहल भेजिए। दूसरों को सिच्छा हो। हमारी सरकार है या तमासा।

[ **सदस्यों का फिर अट्टहास।** ]

**हल्कूसिंह** : (**क्रोध से**) फिर हँसी ! अरे ! ये कैसी पालटी है !

**नैनसुख** : बिलकुल ठीक पार्टी है। धर्मशाला क्या हमारी पार्टी की है ? हम धर्मशाला का क्या कर सकते हैं ?

**एक सदस्य** : पर उस धर्मशाला में हुआ क्या, यह आपने अब तक नहीं बताया।

**हल्कूसिंह** : मुझे वहाँ ठहरने नहीं दिया गया। वहाँ के मन्दिर में

दरशन नहीं करने दिया गया। वहाँ के कुएँ से पानी नहीं···

**नैनसुख :** सुनिए, मैं इसका उत्तर देता हूँ।

**हल्कूसिंह :** (**क्रोध से**) अरे तुम तो हरिजन ही हो।

**नैनसुख :** हरिजन हूँ तो बेइन्साफी करूँ? देखिए, हल्कूसिंह जी,

**हरिवल्लभ :** (**बीच ही में**) हल्कूसिंह जी, नैनसुख जी, ज़रा ठहरिए, आप बैठ जाइए, इन सब बातों का उपाय इतना सरल नहीं है, जितना आप सोचते हैं (**हल्कूसिंह से**) और देखिए, अभी तो पार्टी मीटिंग खतम होने पर आप चल कर मेरे बँगले पर ठहरिए। फिर हम लोग इस विषय पर बातें करेंगे।

[ **हल्कूसिंह नैनसुख की ओर देखकर और आँखों से आग-सी बरसाता हुआ बैठ जाता है।** ]

**मुख्य मंत्री :** हाँ, तो हमारा यह पहला बजट है। बजट पर दो दिनों तक बहस होगी—आज और कल। जो-जो लोग बोलना चाहते हों, अपना-अपना नाम दे दें।

**हल्कूसिंह :** (**खड़े होकर**) सबसे पहले मैं बोलना चाहता हूँ।

**लघु यवनिका**

## चौथा दृश्य

स्थान : हरिवल्लभ के बँगले का गुसलखाना

समय : मध्यान्ह के समीप

**[ पीछे की दीवाल में नल लगा हुआ है। नल के नीचे एक चबूतरा-सा बना है और उसके तीन ओर मुँडेर बनी है। नल के नीचे पानी की गंगाल रखी है। उसके सामने एक पटा। दाहिनी और बाँयीं दीवालों के सिरों पर दरवाज़े हैं। बाँयीं दीवाल से लगी हुई एक सिंगार मेज़ रखी है, जिसमें एक काँच लगा है। मेज़ के सामने एक कुर्सी रखी है। मेज़ पर साबुन से भरा हुआ एक सेफ़्टीरेज़र, एक हजामत बनाने का ब्रश और खुला हुआ हजामत का साबुन रखा है। सामान इस तरह रखा हुआ है जिससे जान पड़ता है कि किसी ने अभी-अभी हजामत बनाना समाप्त किया है। गंगाल के सामने के पटे पर बैठा हुआ हल्कूसिंह दाँत साफ करने के ब्रश से मंजन कर रहा है। हरिवल्लभ का प्रवेश। ]**

**हरिवल्लभ :** अच्छा, मेरे ही टूथ-ब्रश से दाँत साफ कर रहे हैं ?

**हल्कूसिंह :** **(दाँत साफ करना रोककर बड़े प्रेम-भरे स्वर में)** हाँ, मिनिस्टर साहब, आप ही के बुरुस से तो; और बड़े अच्छे दाँत साफ होते हैं। अभी-अभी आपके छुरे से तो दाढ़ी मूँडी है। बड़ा अच्छा छूरा चला, मिनिस्टर साहब।

[ **हरिवल्लभ कोई उत्तर नहीं देता, पर उसकी त्योरी कुछ चढ़ जाती है।** ]

**हल्कूसिंह** : (**हरिवल्लभ की तरफ ध्यान से देखते हुए**) क्या, कोई हरजा हो गया ?

**हरिवल्लभ** : (**सँभलकर जल्दी से**) नहीं, नहीं, हरजे की कोई बात नहीं। मैं आपसे यह कहने आया था कि मैं कैबिनिट की मींटिंग में जा रहा हूँ।

**हल्कूसिंह** : मैं भी चलूँगा।

**हरिवल्लभ** : नहीं, वहाँ आप नहीं चल सकेंगे।

**हल्कूसिंह** : (**कुछ आश्चर्य से**) यह क्यों, हमारी सरकार है, मैं काँगरेस पालटी का हूँ।

**हरिवल्लभ** : वहाँ सिर्फ़ मिनिस्टर जा सकते हैं।

**हल्कूसिंह** : (**विचारते हुए**) अच्छा, अच्छा। काहे की मीटिंग बताई आपने ? कबाड़ी की···

**हरिवल्लभ** : कबाड़ी की नहीं कैबिनिट की। (**कुछ रुककर**) तो आप भोजन कर असेम्बली आ जाइए। मैं वहीं मिलूँगा।

**हल्कूसिंह** : अच्छी बात है।

[ **हरिवल्लभ का प्रस्थान। हल्कूसिंह का फिर दाँत मंजन आरम्भ होता है।** ]

**लघु यवनिका**

## पाँचवाँ दृश्य

स्थान : हरिवल्लभ के बँगले का बरामदा

समय : मध्याह्न

[ **कई लोगों के भोजन की व्यवस्था है । बैठने के लिए एक कतार में लकड़ी के पटे रखे हैं और उनके सामने थाली रखने के । एक पटा कतार से कुछ हटाकर एक ओर रखा हुआ है । कई मेहमानों का प्रवेश । उन्हीं के साथ हल्कूसिंह भी है । सब लोग कतार वाले पटों पर बैठने लगते हैं । हल्कूसिंह भी उन्हीं के साथ बैठने लगता है ।** ]

**नौकर : (आगे बढ़कर हल्कूसिंह को एक तरफ रखा हुआ पटा दिखाते हुए)** आपका पटा यह है ।

**हल्कूसिंह : (एकदम क्रोध से)** क्यों, यह क्यों है ? क्या मैं सबके साथ बैठकर खा भी नहीं सकता ? मैं ऐसा-वैसा हरिजन नहीं, जो पाखाना······

**एक मेहमान : (बीच ही में)** नहीं, नहीं बैठिए, आप हम लोगों के साथ ही बैठिए ।

**हल्कूसिंह :** आपकी तो किरपा है, पर इस नौकर का मजाल तो देखिए ! **(चिल्लाकर)** अबे ओ नौकर के बच्चे ! यह हरि-वल्लभ जी का मकान है, तू हरिवल्लभ जी का नौकर है नहीं तो बता देता तुझे······

**वही मेहमान : (बीच ही में)** अच्छा···अच्छा बैठिए। छोड़िए इस झगड़े को।

**हल्कूसिंह : (बैठते हुए, फिर नौकर से)** क्यों बे, क्या हरि-वल्लभ जी मेरे अलग बैठाने का इन्तजाम कर गये थे, या यह तेरी सूझ···

**वही मेहमान :** क्यों उसके मुँह लगते हैं ? **(नौकर से)** लाओ, लाओ, थालियाँ लाओ।

**दूसरा मेहमान : (पहले मेहमान से धीरे से)** मैं बाद में खाऊँगा, इस समय जाता हूँ। **(प्रस्थान)**

**हल्कूसिंह : (उसे जाते देख पहले मेहमान से)** क्यों, वे क्यों चले गये ? उन्हें मेरे संग की ज्योनार में खाना मंजूर नहीं ?

**पहला :** नहीं, नहीं, उन्हें जरा पाखाना जाना था।

**हल्कूसिंह :** नहीं, नहीं, यह···यह तो···

**पहला : (बीच ही में नौकर से)** ला, भाई, थालियाँ ला·····

[**नौकर का प्रस्थान। बाकी सब लोग बैठते हैं।**]

**लघु यवनिका**

## छठवाँ दृश्य

स्थान : असेम्बली हॉल

समय : मध्यान्ह के उपरान्त

**[हॉल उसी तरह का है जैसी आधुनिक प्रान्तीय असेम्बलियों के हॉल हैं। उसी तरह की सजावट है। सभापति सिर पर गांधी टोपी और बदन पर खादी का चोगा पहने अपनी कुर्सी पर बैठा है। दोनों ओर की बेंचों पर असेम्बली के सदस्य बैठे हैं। सभापति की दाहिनी ओर की पहली बेंच पर मुख्य मंत्री और अन्य मंत्री हैं। अधिकांश सदस्यों के कपड़े खादी के हैं, कुछ के अन्य प्रकार के भी। कुछ सदस्य अंग्रेजी ढंग की वेषभूषा में भी हैं।** हल्कूसिंह खड़ा हुआ बोल रहा है।]

**हल्कूसिंह :** कहाँ तक···कहाँ तक मैं गिनाऊँ हरिजनों की सिकायतें, इसकूलों और इसकूलों के ऊपर···इसकूलों के ऊपर बड़े-बड़े इसकूल वे क्या कहलाते हैं···देखो···

**कुछ सदस्य : (हँसते हुए)** कालेज···कालेज···

**हल्कूसिंह :** हाँ, इन कालेजों···कालेजों में पढ़ने वाले हरिजन लड़के बहुत कम अरे! दाल में नमक के बराबर भी पास नहीं होते। होंगे कैसे पास ? मास्टरों की जो गुट्ट रहती है उसमें पहले से ही यह तय रहता है—हरिजन लड़कों को छाँट-छाँटकर फैल कर दो। इसीलिए भूल से अगर कोई

हरिजन लड़का पास हो जाय तो दूसरी बात है, पर मास्टर लोगों के जानते हुए कि फलाना लड़का हरिजन है, कभी कोई लड़का पास हो ही नहीं सकता।

**कुछ सदस्य** : हिग्रर हिग्रर ! हिग्रर हिग्रर !

**हल्कूसिह** : काहे की हुर्र हुर्र ! अगर कोई मास्टर इस असेम्बली का मेम्बर हो तो छाती पर हाथ रखकर कहे तो कि मैं झूठ बोलता हूँ।

[**कुछ सदस्यों का अट्टहास।**]

**हल्कूसिह** : (**चारों तरफ देखकर**) हँसते हो ! अरे ! तुम्हें सरम नहीं आती हँसने पर। तुम सब···

**सभापति** : आर्डर ! आर्डर ! एड्रस दि चेअर प्लीज़ !

**हल्कूसिह** : (**ऐसे स्वर से मानो हुक्म दे रहा हो**) हिन्दी···हिन्दी में बोलिए परसीडन् सर।

[**कुछ सदस्यों का अट्टहास।**]

**हल्कूसिह** : (**फिर इधर-उधर देखते हुए**) अरे ! तुम सब फिर हँसते हो।

**सभापति** : आप मेरी तरफ देखकर बोलिए।

**हल्कूसिह** : (**सभापति की ओर देखते हुए**) जो हुकुम, परसीडन्ट सर ! मैं बता रहा था हरिजनों की शिकायतें। हस्पतालों से भी उनकी कम सिकायत नहीं। हस्पतालों में उन्हें दवा थोड़ी ही दी जाती ?

**एक सदस्य** : तब क्या दिया जाता है ?

**हल्कूसिह** : पानी, निखालिस पानी। मैंने···मैंने देखा है कंपोडरों

को दवा की सीसी में सीधा टोंटी से पानी निखालिस पानी भरते और दवा की जगह हरिजनों की सीसी में यह पानी देते। (**एक डाक्टर मेम्बर से**) मेम्बर साहब, आप डाक्टर हैं। बताओ मैं सच कहता हूँ या नहीं ?

**डाक्टर :** बिलकुल झूठ।

[**कुछ सदस्यों का अट्टहास।**]

**हल्कूसिंह :** (**डाक्टर की तरफ देखकर**) काहे बे फजूल की बातें करके पाप की गठरी लाद रहे हो, डाक्टर, यह धरम की इजलास…

**स्पीकर :** आर्डर ! आर्डर ! एड्रस दि चेअर प्लीज़।

**हल्कूसिंह :** हिन्दी में बोलिए, परसीडन्ट सर।

**स्पीकर :** आप मेरी तरफ़ देखकर बोलिए।

**हल्कूसिंह :** न जाने मेरी आँखें इधर-उधर कैसे घूम जाती हैं।

[**कुछ सदस्यों का अट्टहास।**]

**हल्कूसिंह :** अच्छा, परसीडन्ट सर, अब आपकी तरफ देखकर ही बोलूँगा। हरिजनों की विपदाओं का आगे का हवाल सुनिए। गाँव गवई में मालगुज़ार और सरकारी अफसर अपने दौरे के बखत हरिजनों से इतनी बिगार…इतनी बिगार लेते हैं कि क्या कहूँ। सहर में ऐसी जगह रहना पड़ता है हरिजनों को कि…

**एक सदस्य :** यह सच है।

**हल्कूसिंह :** है न सच ? पहले कही हुई बातों का भी आप लोग पता लगायेंगे तो मालूम होगा कि एक-एक सच है। मैंने

जितनी बातें कही हैं सब खुद के तजरबे से। (कुछ रुककर) तो…तो पहले वजट के लिए मैं समझता हूँ मैंने काफी सिकायतें पेश कर दीं।

**कुछ सदस्य :** (**एक साथ**) जरूरत से ज्यादा, जरूरत से ज्यादा।

**कुछ सदस्य :** (**एक साथ**) तो अब आप बैठ जाइए, बैठ…

**प्रेसीडेन्ट :** आर्डर! आर्डर!

**हल्कूसिह :** बैठ कैसे जाऊँ? अभी तो मुझे वह सब कहना है जो इन सिकायतों को दूर करने के लिए किया जाना चाहिए। गाँव गवई में हरिजनों का लगान बिलकुल माफ हो जाना चाहिए। उनके पास थोड़ी-थोड़ी ज़मीनें हैं। उनकी सेवाएँ कितनी बड़ी हैं यह काँगरेस खुद मानती है। इतना-सा लगान माफ होने से सरकारी आमदनी में कोई बड़ा भारी घाटा नहीं हो जायगा। उनके ढोर-डंगर की चराई के लिए और लकड़ी के लिए जंगल का खन्ना बिना कुछ लिए दिया जाना चाहिए। सरकारी नौकरियों में उनकी तादाद के माफिक जगह रिज़रव हो जानी चाहिए। खासकर पटवारियों, रिवन्यू निसपिकटरों, पुलिस कनसटेबलों, पुलिस निसपिकटरों में, क्योंकि ये सब हरिजनों को बहुत तंग करते हैं। इसकूलों और इसकूलों के ऊपर के बड़े इसकूल…ओ… उनका नाम मैं फिर भूल…

**एक सदस्य :** कालेज।

**हल्कूसिह :** हाँ, कालेजों में उनकी तादाद के माफिक उनके

लड़कों की जगह रिजरव हो जानी चाहिए, चाहे वे खाली पड़ी रहें।

**कुछ सदस्य :** (**एक साथ**) वाह वाह ! वाह वाह !

**हल्कूसिंह :** काहे की वाह वाह ! कोई मुजरा हो रहा है कि वाह वाह !

[**कुछ सदस्यों का अट्टहास।**]

**हल्कूसिंह :** हँस लो, भइया, खूब हँस लो। पर मैं अपनी पूरी बात कहे बिना वैठने वाला नहीं।

**सभापति :** आर्डर ! आर्डर !

**हल्कूसिंह :** फिर दूसरी जाति के लड़के जितने लंबरों से पास होते हैं उनसे आधे लंबरों से हरिजन लड़के पास हों, यह इन्तजाम होना···

**कुछ सदस्य :** (**एक साथ**) ब्रेवो ! ब्रेवो !

**हल्कूसिंह :** यह सायद वाह वाह की अंगरेजी है। न जाने लोग अपनी भासा में क्यों नहीं बोलते !

[**कुछ सदस्यों का अट्टहास।**]

**हल्कूसिंह :** हस्पतालों में हरिजन डाक्टर न मिलें तो अभी देसी वैद ही मुकर्रिर कर देना चाहिए। हरिजन वैद जितने चाहिएँ उतने मैं ला दे सकता हूँ।

**कुछ सदस्य :** (**एक साथ**) शाबास ! शाबास !

**हल्कूसिंह :** कोई मैं बच्चा हूँ कि पीठ ठोकते हो या कोई घोड़ा हूँ कि गरदन····

[**कुछ लोगों का अट्टहास।**]

**सभापति** : आप मेरी तरफ देखकर बोलिए।

**हल्कूसिंह** : मैं क्या करूँ, परसीडन्ट सर। ये लोग मेरा मजाक उड़ाते हैं। (**कुछ रुककर**) फिर इस असंबली की जितनी छोटी-छोटी कमेटियाँ बनायी जाती हैं उन सब में एक हरिजन मेम्बर जरूर रहना चाहिए। मुझे यह कहते हुए बड़ा अपसोच होता है कि काँगरेस ने अब तक हरिजनों के लिए कुछ नहीं किया।

**नैनसुख** : यह पार्टी मीटिंग की बात है, आपको पार्टी मीटिंग में कहना···

**हल्कूसिंह** : क्यों पालटी में क्यों, यहाँ क्यों न कहूँ ? वजट की बहस में तो सब कुछ कहा ज ासकता है न ? (**कुछ रुककर**) और ये सब काम तब तक नहीं हो सकते जब तक एक हरिजन मिनिस्टर न हो।

**नैनसुख** : मैं इसके बिलकुल खिलाफ़ हूँ।

**हल्कूसिंह** : अरे हरिजन होकर काहे को हरिजनों के पैरों पर कुल्हाड़ा चलाते हो।

**एक सदस्य** : और हरिजन मिनिस्टर बना दिया जाय हल्कूसिंह को···

[**कुछ सदस्यों का अट्टहास।**]

**सभापति** : (**खड़े होते हुए**) दि हाउस विल नाउ एडजर्न फार लंच।

[**सब सदस्य खड़े होते हैं। शर्मा हल्कूसिंह के पास आकर उससे हाथ मिला उसके भाषण पर बधाई देता है।**]

**लघु यवनिका**

## सातवाँ दृश्य

स्थान : असेम्बली हॉल की लॉबी

समय : तीसरा पहर

**[असेम्बली की लॉबी वैसी ही है, जैसी आधुनिक प्रान्तीय असेम्बली हॉलों की रहती है। कई सदस्य बेंचों पर बैठे हैं। कई इधर-उधर घूम रहे हैं। बातचीत हो रही है। कुछ लोग दूर पर बोल रहे हैं और कुछ धीरे-धीरे। उनकी बातों की केवल सनसनाहट सुन पड़ती है और वे बातें समझ में नहीं आती हैं।]**

**एक सदस्य : (हल्कूसिंह का हाथ झकझोरते हुए)** खूब-खूब बोले आप।

**दूसरा** : हाँ, क्या कहिए। इट वाज़ दि स्पीच आफ़ दि डे।

**तीसरा** : और कैसी साफ-साफ सुनायीं।

**चौथा** : काँग्रेस पार्टी के मेम्बरान के तो कानों के कीड़े झड़ गये होंगे।

**पाँचवाँ** : निष्पक्षता इसको कहते हैं। काँग्रेस पार्टी के रहते हुए भी जो ठीक बातें थीं कह डालीं।

**नैनसुख** : कौनसी ठीक बातें थीं मैं पूछ सकता हूँ ?

**हल्कूसिंह : (गरजकर नैनसुख से)** कौनसी ठीक बात नहीं थी मैं पूछ सकता हूँ ?

**नैनसुख** : आपने कहा काँग्रेस ने हरिजनों के लिए कुछ नहीं किया।

**शर्मा** : हाँ, सच तो कहा, क्या किया काँग्रेस ने ?

**नैनसुख** : जितना भी किया हम लोगों के लिए काँग्रेस ने किया, और किया किसने ? महात्मा गांधी ने हरिजन उद्धार काँग्रेस के कार्यक्रम में शामिल कराया। अपने आश्रम में हरिजनों से वैसा ही व्यवहार शुरू किया जैसा कोई ब्राह्मणों से करे। हरिजनों के लिए मन्दिर खुलवाये और आखिर अपनी जान को जोखिम में डालकर उपवास···

**शर्मा** : अरे इस उपवास की डुग्गी तो बहुत पिट चुकी। इससे हरिजनों का फायदा न होकर नुकसान हुआ है। मेकडानल के सांप्रदायिक निर्णय के अनुसार हरिजनों का चुनाव होता तो कट्टर हरिजन पहुँचते असंबलियों में, जैसे आज मुसलमान पहुँचते हैं और तब असल में हरिजनों की भलाई होती। उस वक्त बिना हरजिनों के कैबिनेट बन सकती थी, जैसी आज बनी है ?

**एक सदस्य** : कभी नहीं।

**नैनसुख** : और देश आपसी झगड़ों के सबब से चाहे रसातल चला जाता।

**शर्मा** : जैसे अब झगड़े न होंगे। इस उपवास से झगड़े मिटने वाले नहीं। उपवास का उद्देश्य था हरिजनों को काँग्रेस के लिए उपयोग में लाना।

**दूसरा** : सो बेचारे आ रहे हैं।

**नैनसुख** : काँग्रेस के लिए उनका उपयोग में आना ही उनका सौभाग्य है। देश का उपकार काँग्रेस ही कर सकती है।

क्योंकि वह देश की आज़ादी पर मुनस्सर है। काँग्रेस के सिवा स्वतन्त्रता की लड़ाई और कौन संस्था लड़ रही है? देश की आज़ादी पर देश की तरक्की निर्भर है—और समूचे देश की उन्नति से हरिजनों की भी प्रगति होगी।

**शर्मा** : जब देश आज़ाद और उन्नत था, तब भी हरिजनों का यही हाल था।

**नैनसुख** : परन्तु महात्मा गांधी और काँग्रेस के प्रताप से अब तो दृष्टिकोण ही बदल गया है।

**शर्मा** : बीस वर्षों में तो कुछ हुआ नहीं और जब बीस वर्षों में कुछ न हुआ तो आगे क्या होने वाला है।

**नैनसुख** : पर कहता कौन है कि बीस वर्षों में कुछ नहीं हुआ? इन बीस वर्षों में हरिजनों के लिए जितना हुआ उतना सैकड़ों और हज़ारों वर्षों में नहीं हुआ था। जितना काँग्रेस और महात्मा गांधी ने हरिजनों के लिए किया उतना आज तक किसी ने नहीं।

**हल्कूसिंह** : तभी तो मैं आज सवेरे हरिजन धरमसाला से निकाला गया।

**नैनसुख** : एक तो पुराने रीति-रिवाज धीरे-धीरे ही सुधर सकते हैं, एकदम नहीं, दूसरे वह कोई सार्वजनिक संस्था नहीं, एक व्यक्ति की बनायी हुई है। कोई व्यक्ति अपने घर में ब्राह्मणों को भी न आने देना चाहे तो इसके लिए वह आज़ाद है।

**शर्मा** : पर किसी ने सुना कि किसी ब्राह्मण का आना किसी ने रोका है।

**नैनसुख :** शर्मा जी, आप भी तो मिनिस्टर रहे हैं, फिर आप ही हरिजनों के लिए कुछ करते।

**कुछ सदस्य : (एक साथ)** ठि ठी ठी। ठि ठी ठी।

**शर्मा :** पर मैं कितने दिन मिनिस्टर रहा, जनाब? फिर मेरे साथ अगर ऐसा बहुमत होता जैसा कि कांग्रेस के साथ है तो मैं बताता कि मैं क्या कर सकता हूँ।

**एक सदस्य :** वाह! वाह! क्या कहिए! क्या कहिए! क्या बात है, शर्मा जी की!

**शर्मा :** जो कुछ, भाई, मैं तो हल्कूसिंह जी की स्पष्ट-वादिता का कायल हूँ।

**कुछ सदस्य : (एक साथ)** बेशक। बेशक।

**नैनसुख :** तो फिर कीजिए न हल्कूसिंह की हर बात का समर्थन अपने भाषण में।

[**कुछ सदस्यों का अट्टहास।**]

**शर्मा :** वह तो हल्कूसिंह जी आपकी पार्टी के हैं; आपको करना चाहिए।

**नैनसुख :** हल्कूसिंह, तुमने तो सारी पार्टी को ज़लील किया है।

**हल्कसिंह :** मैं कोई बीमारी हूँ कि सबको अलील कर दूँ।

[**सब लोगों का जोर का अट्टहास। एक सदस्य तो इतनी जोर से हँसता है कि हँसते-हँसते पेट पकड़कर बेंच पर बैठ जाता है।**]

**शर्मा :** तो आपकी पार्टी में सदस्यों को स्वतन्त्रता से अपनी राय ज़ाहिर करने का भी हक नहीं है।

**नैनसख :** वह न होता तो ये इस तरह बोल सकते थे। पर···पर

सचमुच हरिजन होने के नाते मुझे उनके भाषण से बड़ा दुख हुआ है ।

**हल्कूसिह** : क्यों न हो, एक हरिजन दूसरे को बढ़ता थोड़े ही देख सकता है । जब सब तरफ से मुझे अपनी सपीच पर बधायी मिल रही है, तब आपको दुःख हो रहा है ।

[**घण्टी बजती है ।**]

**शर्मा** : हैं, डिवीज़न ! पर आज तो बजट पर बहस थी, वोटिंग नहीं था ।

**एक सदस्य** : (**असेम्बली हॉल में जाते हुए**) कोरम नहीं होगा, कोरम ।

[**सब सदस्य जल्दी-जल्दी हॉल के अन्दर जाते हैं। हल्कूसिह और शर्मा भर रह जाते हैं ।**]

**हल्कूसिह** : (**धीरे से शर्मा से**) कहिए, आपकी बतायी हुई सब बातें कह दीं न मैंने ?

**शर्मा** : सब, और बड़ी खूबसूरती से । ईश्वर ने आपको क्या दिमाग़ दिया है ।

**हल्कूसिह** : शर्मा जी, जब मैं इस असेम्बली के लिए खड़ा किया गया था तब अपना नाम भी नहीं लिख सकता था । नामजदी की दरख्वास्त पर अँगूठा लगवाया गया था, पर उसके बाद ही दिन और रात एक करके पढ़ा-लिखा । सीसे के सामने खड़े हो-होकर, अपनी औरत को सामने बिठा-बिठाकर बोलना सीखा । न जाने क्या-क्या किया; आप लोगों का सतसंग था ही ।

**शर्मा** : मैंने कहा न ईश्वर ने आपको क्या दिमाग़ दिया है।

**हल्कूसिंह** : क्या सचमुच आज की मेरी सपीच बहुत अच्छी थी ?

**शर्मा** : क्या पूछना है ? आप जानते हैं मैं तो इस असेम्बली का बहुत पुराना मेम्बर हूँ। मेरी याद में तो ऐसी स्पीच इसके पहले कभी हुई ही नहीं।

**हल्कूसिंह** : (**अत्यन्त प्रसन्नता से**) ऐसा ? पर, शर्मा जी, बातें तो सब आपकी बतायी हुई थीं।

**शर्मा** : मैं आपको मिनिस्टर न बना दूँ तो मेरा नाम पी० डी० शर्मा नहीं।

**हल्कूसिंह** : (**विचारते हुए**) ऐसा हो सकता है ?

**शर्मा** : क्यों नहीं हो सकता ? आप देखेंगे होकर रहेगा। हाँ, इसके लिए यह ज़रूरी है कि धीरे-धीरे काँग्रेस पार्टी के मेम्बरों को फोड़ा जाय।

**हल्कूसिंह** : यह कोसिस तो मैं करूँगा।

**शर्मा** : हरिजन तो कई आपके हाथ में होंगे ही ?

**हल्कूसिंह** : कुछ हैं, पर जादा हरिजन उस नैनसुख के हाथ में हैं, और वह कैसा गदहा है सो आपने देखा ही।

**शर्मा** : गधा न होता तो इस तरह आँख बन्द काँग्रेस का समर्थन करता।

**हल्कूसिंह** : (**विचारते हुए**) पर धीरे-धीरे मैं बहुत-कुछ कर सकूँगा। मुझे सलाह हमेसा देते रहिए।

**शर्मा** : आपकी सेवा के लिए सदा हाज़िर हूँ।

[**दोनों एक-दूसरे की ओर देखते हैं।**]

## आठवाँ दृश्य

स्थान : हरिवल्लभ के बँगले का दफ्तर

समय : सन्ध्या

**[दफ्तर आधुनिक दफ्तरों के ढंग का सजा है। टेबिल पर अन्य पढ़ने-लिखने के सामान के साथ टेलीफोन भी है और फाइलों का एक ढेर। आफ़िस की घूमनेवाली कुर्सी पर हरिवल्लभ बैठा हुआ है। उसके सामने पुलिस का ज़िला कप्तान बैठा है। पुलिस कप्तान हिन्दुस्थानी है।]**

**पुलिस कप्तान :** जी हाँ, एक गवाह नहीं, सारा गाँव-का-गाँव गवाह है कि उसकी औरत उसकी ज्यादतियों के कारण कुएँ में कूदी। जब से वह असेम्बली का मेम्बर हुआ है, तब से उसका दिमाग़ ही बिगड़ गया है।

**हरिवल्लभ :** अच्छा।

**पुलिस कप्तान :** जी हाँ, जिस गाँव में रहता है उस सारे गाँव को ही नहीं, पर आसपास के भी न जाने कितने गाँवों को सिर पर उठा लिया है। सबसे कहता फिरता है मैं एम० एल० ए० हूँ, हमारी सरकार हो गयी है, तमासा नहीं।

**हरिवल्लभ :** **(मुस्कराकर)** तमासा नहीं।

**पुलिस कप्तान :** जी हाँ, यह तो उसका तकिया कलाम हो गया है। रे-तूँ के सिवाय किसी से बात नहीं करता। हर काम पर

ऐसा रोब गाँठता है जैसे सबको फाँसी पर चढ़ाने का उसे अधिकार मिल गया है और सबसे अधिक तंग करता है हरिजनों को। घर वाले भी उससे बाज़ आ गये हैं। औरत को सामने बिठा जोर-जोर से स्पीच देता है। फिर उससे पूछता है, समझ में आया ?

[**हरिवल्लभ प्रयत्न करने पर भी अपनी हँसी नहीं रोक सकता।**]

**पुलिस कप्तान** : (**हँसते हुए**) जी हाँ, क्या पूछते हैं ? जब वह नहीं समझती तब उसे मारता है। एक दिन दुख की मारी बेचारी कुएँ में कूद पड़ी।

**हरिवल्लभ** : राम ! राम !

**पुलिस कप्तान** : घर वालों की, गाँव वालों की और हम सरकारी मुलाज़िमों की आफ़त हो गयी है आफ़त। हम सब की रिपोर्ट करने की न जाने कितनी धमकियाँ दी जा चुकी हैं। पटवारियों और कान्स्टेबिलों के सिर पर तो डिसमिसल की नंगी तलवार हमेशा लटकती ही रहती है। मेरी जगह कोई अंग्रेज़ पुलिस कप्तान होता तो अब तक न जाने कितने मुकद्दमे दायर हो चुके होते, पर मैं बिना आपसे पूछे कोई मुकद्दमा नहीं चलाना चाहता था। इसीलिए दो दिन की छुट्टी लेकर अपने ज़िले से यहाँ आ आपसे मिला। अब उसकी खुद की औरत कुएँ में कूद गयी। हद हो चुकी।

[**कुछ देर निस्तब्धता। हरिवल्लभ सिर झुकाकर कुछ विचारता है। पुलिस कप्तान हरिवल्लभ की ओर देखता है।**]

**हरिवल्लभ :** ग्रच्छा, कल सुबह मुझसे मिलिए। मैं सोचकर बताऊँगा कि क्या करना चाहिए।

**पुलिस कप्तान :** जैसा हुक्म।

[**पुलिस कप्तान खड़ा होता है। हरिवल्लभ भी खड़े होकर उससे हाथ मिलाता है। पुलिस कप्तान जा ही रहा है कि हल्कूसिंह का प्रवेश।**]

**हल्कूसिंह :** ग्रच्छा, कप्तान साहब। मेरे खिलाफ मेरी ग्रौरत के कुएँ में कूदने का मुकद्दमा लेकर ग्राये दिखते हैं। मिनिस्टर साहब, झूठा, बिलकुल झूठा मुकद्दमा है। वही पुलिस के पुराने हथखंडे। पर···पर इन्हें ग्रब समझ लेना चाहिए कि हमारी सरकार है, तमासा नहीं।

**हरिवल्लभ : (हल्कूसिंह की बात पर बिना कोई ध्यान दिये, पुलिस कप्तान से)** टुमारो मारनिंग ऐट एट।

**पुलिस कप्तान :** वैरी वैल, सर। **(प्रस्थान)**

**हरिवल्लभ : (एक लम्बी साँस लेकर)** बैठिए, हल्कूसिंह जी, मुझे ग्राज ग्रापसे बहुत-सी बातें करनी हैं।

[**हरिवल्लभ ग्रपनी कुर्सी पर बैठ जाता है। हल्कूसिंह कुछ सिटपिटाते हुए सामने की कुर्सी पर बैठ जाता है।**]

**हरिवल्लभ :** सबसे पहले मैं ग्राप से एक प्रश्न पूछता हूँ, उसका सच-सच जवाब देंगे न ?

**हल्कूसिंह : (ग्रौर ग्रधिक सिर फिराते हुए)** ग्रापके पिरसन का कभी मैं झूठ जवाब दे सकता हूँ।

**हरिवल्लभ :** ग्राप ग्रपनी पत्नी को पीटते हैं ?

**हल्कूसिंह : (कुछ रुककर विचारते हुए)** जिसने मुझे इतने बड़े रुतबे पर बैठाया उससे झूठ नहीं बोलूँगा। इन दिनों मैंने उसे कभी-कभी जरूर पीटा है, पर···पर, मिनिस्टर साहब, इसमें मेरा दोस नहीं।

**हरिवल्लभ :** आपका दोष नहीं ?

**हल्कूसिंह :** नहीं, मिनिस्टर साहब, मेरा दोस नहीं। वह···वह इतनी मैली-कुचैली है, इतनी बेसमझ है, जिसका ठिकाना नहीं। सफाई रखने को कहता हूँ तो मानती नहीं, कुछ समझाता हूँ तो समझती नहीं।

**हरिवल्लभ :** तो आप उसे मार-मारकर ठीक करना चाहते हैं ?

**हल्कूसिंह :** फिर क्या करूँ ? कई दफा यह सोचता हूँ कि किसी पढ़ी-लिखी दूसरी औरत से सादी कर लूँ, पर हरिजनों में····

**हरिवल्लभ : (आश्चर्य से)** एक औरत के रहते दूसरी शादी ?

[**नौकर का प्रवेश।**]

**हरिवल्लभ : (नौकर से)** क्या है ?

**नौकर : (सकुचते हुए)** यह कहने आया था कि···**(चुप हो जाता है)**

**हरिवल्लभ :** हाँ, क्या है ?

**नौकर :** क्या कहूँ···पर···पर कहना तो पड़ेगा ही, सरकार, **(हल्कूसिंह की ओर इशारा कर)** मेम्बर साहब की धोती बिना धुली और थाली बिना मँजी पड़ी है।

**हरिवल्लभ :** क्यों ?

**नौकर :** हुजूर चाहे मुझे रखें या निकाल दें। मेहतर-चमारों की

धोतियाँ तो नहीं धो सकता, झूठे बर्तन तो नहीं माँज सकता। जात में रोटी···

**हल्कूसिंह : (टेबिल पर से रूल उठाकर नौकर की ओर बढ़ते हुए)** महतर! चमार! अबे नौकर के बच्चे!

[**नौकर भाग जाता है। हरिवल्लभ झपटकर हल्कूसिंह का हाथ पकड़ लेता है।**]

**हरिवल्लभ :** हल्कूसिंहजी! हल्कूसिंहजी! यह···यह क्या है?

**हल्कूसिंह : (क्रोध से)** आप अपने घर में ठहराकर मेरा इनसलट कराते हैं।

**हरिवल्लभ :** पर थोड़ी समझ से काम लीजिए। यह सब भेद-भाव नहीं होना चाहिए, इस सिद्धान्त को मानते हुए भी इसके अनुसार व्यवहार होने में तो समय लगेगा। वह नौकर अगर आपकी धोती नहीं धोता, बर्तन नहीं माँजता तो उसे रूल से पीटा जाय, इस हिंसा को तो मैं बर्दाश्त कर नहीं सकता। जब नौकर ने यह नहीं किया था और आप मेरे महमान थे, तब मेरी पत्नी को यह काम कर देना था, पर उस पर भी तो मैं जबर्दस्ती तो नहीं कर सकता। चलिए, मैं आपकी धोती धो देता हूँ और थाली माँज देता हूँ।

**यवनिका**

## उपसंहार

स्थान : जेल का एक प्रांगण

समय : प्रातःकाल

**[दाहिनी ओर कुछ दूर पर जेल की बैरक का कुछ बाहरी भाग दिखायी देता है और बाँयीं ओर कुछ दूर पर एक पीपल का वृक्ष। पीपल के बृक्ष के नीचे एक चबूतरा-सा बना है। चबूतरे पर हल्कूसिंह बैठा है। उसका सिर उसके घुटनों पर रखा है। बीच में दूर पर जेल की ऊँची दीवाल का कुछ भाग दिखायी देता है और नजदीक हरिवल्लभ और नैनसुख खड़े हुए बातें कर रहे हैं।]**

**हरिवल्लभ : (हल्कूसिंह की ओर इशारा कर)** लीजिए, सुबह हुआ कि हल्कूसिंह फिर उस पीपल के नीचे बैठे हुए रो-से रहे हैं। १९४२ के इस आन्दोलन में जिसका भी काँग्रेस से कोई सम्बन्ध रहा है उसे सरकार पकड़ लायी, क्या कहूँ।

**नैनसुख :** मैं तो इस बात पर लज्जित हूँ कि हरिजनों में एक ऐसा आदमी निकला।

**हरिवल्लभ :** और आप समझते हैं कि सवर्णों में ऐसे कोई नहीं हैं? अरे, हमारे साथ ही न जाने कितने हैं! फर्क इतना ही है कि समझ अधिक होने के कारण वे अपने को रोके रहते हैं और उनकी कलई जल्दी नहीं खुलती। हल्कूसिंह शायद

ज्यादा सीधे हैं। आप भी हरिजन हैं और काँग्रेस के लिए गौरव की चीज। प्रश्न हरिजन और सवर्ण का नहीं है। हाँ, हल्कूसिंह का यह प्रदर्शन मुझे जरूर बुरा लगता है।

**नैनसुख** : मैं उसे कम नहीं समझता हूँ।

**हरिवल्लभ** : सो तो मैं जानता हूँ। **(कुछ रुककर)** नैनसुख जी, काँग्रेस के दो पहलू हैं, यह समझकर तब किसी को काँग्रेस-वादी बनना चाहिए, जिम्मेदार काँग्रेसवादियों को किसी को काँग्रेसवादी बनाना चाहिए। काँग्रेस का एक पैर यदि अधिकार की कुर्सी की ओर रहता है तो दूसरा जेल की। मुझे हल्कूसिंह को एक लाचारी अमर में असेम्बली के लिए खड़ा करना पड़ा था। उस समय मैं समझता था कि किसी को भी काँग्रेसवादी बनाया जाना सरल है, पर मेरा वह खयाल ग़लत सिद्ध हुआ।

**नैनसुख** : हाँ, इसने तो जेल के बाहर भी हम सबका नाकों दम कर डाला।

**हरिवल्लभ** : उसके लिए तो यथार्थ में हम सवर्ण हिन्दू दोषी हैं। हमने सहस्रों वर्षों से आप हरिजनों पर ऐसे अत्याचार किये हैं और आज भी कर रहे हैं कि हमें उसका प्रायश्चित करना ही होगा। हमने आपको ऐसा दबाया, ऐसा सुलाया कि अब आपको उठाने, आपको जगाने के वक्त यदि आप हाथ-पैर पछाड़कर उठें और उस क्रिया में यदि हमें चोट पहुँचे तो हमें बर्दाश्त करना चाहिए।

**नैनसुख** : परन्तु हल्कूसिंह ने तो जो कुछ किया उससे उसके घर

वालों को, हमारे हरिजनों को भी हानि पहुँची ।

**हरिवल्लभ :** आधा जगा हुआ आदमी इसी तरह की चेष्टाएँ करता है ।

**यवनिका**

**समाप्त**